14, III

त्रैमासिक

श्रीः

श्रीस्वाध्याय

बसन्ताङ्क

वर्ष
१४
सं० २०१२

संख्या
३
चैत्र

स्वाध्यायोऽध्येतव्यः

वार्षिक
मूल्य
४)

इस अङ्कका
मूल्य १।-)

संस्थापक—
श्रीमान् अमृतवाग्भव आचार्य

सम्पादक—
श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी

विषय-सूची

अखिल भारतीय संस्कृत-साहित्य-सम्मेलन

यह अङ्क पाठकोंके हाथोंमें पहुँचेगा उस समय चैत्र शुक्ला ३-४-५ ता० २६-२७-२८ मार्च १९५५ को भारतकी राजधानी नई दिल्लीमें अ० भा० संस्कृत-साहित्य-सम्मेलनका २२ वां अधिवेशन माननीय श्री चिन्तामणि द्वारकानाथ देशमुख (भारतीय वित्तमंत्री) महोदयकी अध्यक्षतामें सम्पन्न होगा। इन्हीं दिनों सम्मेलनमण्डपमें ही शिक्षा-परिषद् और संस्कृत-कविगोष्ठी आदिका भी सुन्दर आयोजन किया गया है।

राजधानीमें सम्पन्न हो रहे इस संस्कृत-साहित्य-सम्मेलनमें भाग लेने वाले इन संस्कृतानुरागी विद्वद् वर्गका हम हार्दिक् स्वागत करते हैं—जो यातायात आदिके अनेक कष्ट सह कर इस सम्मेलनको सफल बनानेके लिए भारतके कोने कोनेसे राजधानीमें पधार रहे हैं। यह सर्व सम्मत मत है कि भारतीय संस्कृतिका मूल स्रोत संस्कृत ही है। वैदिक युगसे लेकर आज सहस्रों-वर्षों तक जो भारतीय संस्कृति जीवित है उसे जीवित जागृत रखनेका एक मात्र श्रेय संस्कृत भाषा व साहित्य ही को है। साथ ही इसमें भी कुछ अत्युक्ति नहीं कि समग्र आर्य परिवारकी भाषाओंकी जननी भी यह वेदवाणी ही है। उस देववाणीकी रक्षा एवं समुन्नतिके लिए जो भी प्रयत्न किया जाय, प्रत्येक विज्ञ उसकी प्रशंसा ही करेगा।

वास्तवमें आज संस्कृत रक्षाके प्रयत्नकी बहुत अधिक आवश्यकता है। भारतकी राजधानीमें एक भी ऐसा पुस्तक-

[शेष अन्तिम आवरण पृष्ठ ३ पर]

श्रीः

श्रीस्वाध्याय

संस्थापक तथा प्रधानाध्यक्ष—
सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम आचार्य
श्री १०८ मान् अमृतवाग्भवजी महाराज

संरक्षक—
धर्ममार्त्तण्ड राजासाहब श्री१०५ मान् दुर्गासिंहजी बहादुर सी० आई० ई०, सोलन ।

सहायक—
श्री १०५ मती स्व० माँजी महारानी साहिबा [सिरमौरीजी] बघाटराज्य ।
श्री ला० शिवचरणदासजी म्यु० कमिश्नर, सोलन ।
आयुर्वेदमहोपाध्याय श्री पं० गोवर्द्धन शर्माजी छांगाणी, सीतावर्डी, नागपुर ।
श्रीमान् हीरालाल मोतीलालजी पुजारा, ध्रांगध्रा (सौराष्ट्र)
श्रीमान् पं० लक्ष्मीकान्तजी शर्मा, चीफ रेवेन्यू अकाउण्टेण्ट, भरतपुर
श्रीमान् स्व० पं० चतुर्भुजजी राजपुरोहित ताल्लुकेदार, भरतपुर ।
श्रीमान् भाई चूहरमल्लजी मुञ्जाल, चूहरमल्ल एण्ड को०, कटरा बड़ियां, देहली ।
श्री नरेन्द्रनाथजी 'मोहन' मैनेजिङ्ग डायरेक्टर डायर मीकन ब्रूरीज लिमिटेड, सोलन ब्रूरी ।
श्रीमान् बा० भागीरथलालजी मिलऑनर, लहरागागा [पटियाला-राज्यसंघ]
श्रीमान् ला० अमरनाथजी रईस, न्यूअमरटाकीज, अजमेरीगेट, दिल्ली ।
श्रीमान् लाला श्यामलालजी मित्तल, अनूपशहर [उत्तरप्रदेश]

सम्पादक और व्यवस्थापक—
श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्य

प्रकाशक—
श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (हिमाचलप्रदेश)

श्रीस्वाध्यायके नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य—

समस्त संसारको हितकी ओर ले जाना तथा ऐहलौकिक और पारलौकिक मोक्ष (स्वातन्त्र्य) प्राप्त कराना 'श्रीस्वाध्याय' का मुख्य उद्देश्य है।

संचालकगणोंके नियम

संरक्षक—

जो महानुभाव ३००) तीन सौ रुपयेसे अधिक प्रतिवर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के संरक्षक माने जावेंगे।

सहायक—

(२) जो सज्जन ५१) रु० से ३००) रु० तक प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'श्रीस्वाध्याय' के सहायक माने जावेंगे।

'श्रीस्वाध्याय' आश्विन शुक्ला १०, पौषशुक्ला १०, चैत्र शुक्ला १० और आषाढ़ शुक्ला १० को प्रकाशित होता है। इसका वार्षिक मूल्य ४।) और एक प्रतिका १।–) एक रुपया पांच आना है।

(३) जिन सज्जनोंके लेख श्रीस्वाध्याय-सदन की ओरसे प्रार्थना-पूर्वक मँगवाये जावेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे, अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जावेंगे तो यथा समय प्रकाशित हो जावेंगे, अन्यथा नहीं।

(४) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकों की दो-दो प्रतियाँ और विनिमय (परिवर्तन) की पत्र पत्रिकाएँ सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला) के पते से भेजने चाहिएँ।

(५) लेख, कविता आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए।

(६) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने उसे घटाने बढ़ाने तथा लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। अस्वीकृत लेख डाक व्यय प्राप्त होने पर ही लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम

'श्रीस्वाध्याय' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्कसे (आश्विनमासकी विजयादशमीसे) ही बनाये जाते हैं, चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि विजयादशमीका 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछे विशेषांक न लेना चाहें तो बीचमें किसी भी समय से ग्राहक हो सकते हैं। ऐसी स्थितिमें उनसे वार्षिक मूल्य ४।) रु० न लेकर वर्ष-समाप्ति (आषाढ़) तकके शेष अङ्कोंका मूल्य ही लिया जायेगा। 'नववर्षाङ्क' के बिना तीन अङ्कों या नौ मासका मूल्य ३।) रु० और एक अङ्क का मूल्य १।–) मनीआर्डर द्वारा पेशगी आना चाहिए। वी० पी० मंगवाने पर उक्त मूल्यमें ग्यारह आने वी० पी० रजिस्ट्री खर्चके अधिक बढ़ जायेंगे। वर्षारम्भसे स्थायी ग्राहक बनकर पूरी फाइल मंगवाने में ही ग्राहकोंको विशेष लाभ है।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम तथा पूरा पता और ग्राहक संख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखना चाहिए। यदि ग्राहक संख्या स्मरण न हो और पुराने ग्राहक हों तो मनीआर्डरके कूपन पर 'पुराना' शब्द और नये ग्राहक हों तो 'नया' शब्द नामके साथ अवश्य लिख देना चाहिये। वार्षिक मूल्य वा एक अङ्कके मूल्यका नोट या टिकट लिफाफे में कदापि न भेजें।

'श्रीस्वाध्याय' का नमूना बिना मूल्य किसीको नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तरके लिए टिकट आवेंगे उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जावेगा। 'श्रीस्वाध्याय' प्रकाशित होनेकी तिथि (शुक्ला दशमी) को प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानी से भेज दिया जाता है। यदि किसी ग्राहक के पास कोई अङ्क न पहुँचे तो उसके प्रकाशित होनेकी तिथिसे १५ दिनके अन्दर हमें सूचना देनी चाहिए। बादकी शिकायत पर कोई ध्यान नहीं दिया जाएगा।

व्यवस्थापक—

श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)

श्रीस्वाध्याय

(वसन्ताङ्क)

स्वराष्ट्रशिक्षां गृह्णीयाच्चिकीर्षुः स्वां समुन्नतिम् ।
दूरदृष्टिर्यया भूत्वा न कदाऽपि विषीदति ॥ —श्रीराष्ट्रालोक

वर्ष १४	सोलन, चैत्र शु० १० शनिवार सं० २०११ वि०	संख्या ३

तत्तद्राष्ट्रे मानवानां व्यवस्थां शोभासम्पच्छालिनीमार्यरीत्या ।
प्रेम्णा लोके स्थापयँस्तत्त्वदर्शी श्रीस्वाध्यायः कलयतां विश्वभूत्यै ॥
---अ० वा० आचार्य

निवेदनम्

[श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज]

चरन्तः स्वच्छन्दं जनधनमिमे नेतृचरणाः
स्वराष्ट्रं सेवाभिः सपदि सुखयामो वयमिति ।
बिडालानां वृत्तिं बुधजन विगीतां कपटिनां
श्रयन्ते चेद्राष्ट्रं प्रलयगिलितं हन्त ! सकलम् ॥१॥

इमे शिक्षां दीक्षां विशदतनुलोकैककलिता-
मपूर्वां सम्प्राप्ता वरगुरुगिरो गौरगुरवः ।
पटैः श्वेतैः श्यामां तनुमनिशमावृत्य शमहो
स्वराष्ट्रस्येदानीं किमपि कलयन्ते परभृताः ॥२॥

सम्पादकीय विचार—

निर्भय हों

"अवशसा निःशसा यत् परा शसोपारिम जाग्रतो यत्स्वपन्तः।
अग्निर्विश्वान्यप दुष्कृतान्यरि अस्मद्धातु ॥"

"यतोयतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शंनः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥"

पापका मूल क्या है? बुरी इच्छा और बुरी कल्पना। यदि मन शुद्ध हो, हृदय पवित्र हो, और बुद्धि निर्मल हो, तो पाप न होगा। पाप सोते जागते और स्वप्नावस्थामें भी होते हैं। दूषित वातावरण और विषाक्त परिस्थितियां भी पापका कारण हैं। अनेक बार न चाहते हुए भी परिस्थितिवश विवश होकर पाप हो जाता है। इसलिए शासकोंका उत्तरदायित्व इस विषयमें बहुत अधिक है। यह कहने मात्र से कि 'उत्कोच (रिश्वत) लेने वालेकी अपेक्षा उत्कोच देने वाला व्यक्ति अधिक अपराधी हैं।' वे अपने उत्तरदायित्वसे मुक्त नहीं हो सकते।

पाप क्या है? नियमोंका भंग करना। साधारण नागरिक स्वभावसे नियमोंका पालक होता है। यदि वह नियम भंग करता है तो विवशतासे। प्रश्न है कि यह विवशता उत्पन्न करनेके लिए उत्तरदायी कौन है? क्या अधिकारी नहीं है? यात्रीको रेलसे जाना है। उसके पास सामान अधिक है। गाड़ी सीटी दे रही है। सामान 'बुक' होनेमें अनावश्यक देरी हो रही है। इस समय यात्रीके सामने दो मार्ग हैं—कितना भी आवश्यक कार्य हो, यात्रा दूसरी गाड़ी आने तकके लिए स्थगित कर दे और प्लेटफार्म पर पड़ा रहे। दूसरा मार्ग है कि 'बाबू' को एक रुपया थमा दे और तुरन्त जानेवाली गाड़ी पकड़ ले। क्या एक साधारण नागरिकसे आशा की जा सकती है कि वह उस समय जाना स्थगित कर दे, विलम्बके कारण होनेवाली हानिको चुपचाप हंसते हुए सहन करे? इसके विपरीत यदि सरकारी व्यक्ति उस व्यक्तिकी सहायता करे और गाड़ी पर बिठानेमें सहायक हो तो क्या उत्कोचका प्रश्न उपस्थित हो सकता है?

इसके विपरीत भी उदाहरण दिये जा सकते हैं। आयकर विभागके छोटे-छोटे अधिकारियोंको बड़े-बड़े सेठ लखपति और उद्योगपति थोड़ासा देकर ललचाते हैं, देयसे कम आय कर देकर अपनी संपत्ति बचा लेते हैं। यहां लोभ दोनों ओर है। कम वेतन पानेवाले अधिकारी सर्वथा लोभ मुक्त हों, यह उनसे आशा करना कुछ अधिक आशा करना है। किन्तु इसके लिए भी सरकार उत्तरदायी है। सरकार धनका सम्मान करती है। सरकारी उच्च अधिकारी धनिकों को प्रश्रय देते हैं। उनके वैभवके तमाशेमें प्रसन्नता पूर्वक सम्मिलित होते हैं। ऐश्वर्य और वैभवकी प्रदर्शिनियोमें मंत्री और प्रधानमंत्री सम्मिलित होते हैं और धनवानों तथा उद्योगपतियोंकी प्रतिष्ठा बढ़ाते हैं। उनका हिसाब-किताब देखने वाला व्यक्ति क्या उनके उस ऐश्वर्यकी जगमगाहटके प्रभावसे मुक्त रह सकता है? सरकारी अधिकारियों को जो मिलता है, उसी पर वे सन्तुष्ट रहें यदि यह अभीष्ट है, तो पहले हमारे जन-प्रतिनिधियों और मंत्रियोंको चरित्र-शुद्धिका प्रमाण देना चाहिए। शारीरिक कष्ट सहना सरल है, पर धनका त्याग सरल नहीं है। केन्द्रीय मंत्रिमंडलके मंत्रियोंके विषयमें प्रवाद फैलना सूचित करता है कि बुराईका स्रोत कहां है। यही कारण है जब महाभारतमें यह प्रश्न उठाया गया कि राजा कालका कारण है, वा काल राजाका कारण है, तो भगवान् श्रीवेदव्यासने उत्तर दिया—

"राजा कालस्य कारणं वा
कालः राजस्य कारणम्।
इति ते संशयो मा भूत्
राजा कालस्य कारणम् ॥

इसलिये देशमें फैले भ्रष्टाचार, बढ़ते अपराधों और

मानसिंह सदृश डाकूको जनता द्वारा आश्रय देनेका मूल कारण आजका शासन और शासन-नीति है। इस सचाईको क्या आजके शासक कभी अनुभव करेंगे ?

इसका यह अर्थ नहीं कि जनता इस भ्रष्टाचारको चुप-चाप सहे। शासकोंको चुननेका अधिकार आज उसके पास है। आजके शासक जन-प्रतिनिधि होनेका दावा करते हैं। उनका यह दावा ठीक है या नहीं इसकी परीक्षाका समय भी दूर नहीं है। आवश्यकता है कि जनता निर्भय हो। वह झूठे बचनों और झूठी प्रतिज्ञाओंमें विश्वास न करे। दबावमें न आये। शासकोंके आतंकसे न डरे। रुपयोंकी वर्षा की ओर न देखें। अपना मत निर्भयता पूर्वक दे। अपने विश्वास अपने विचार और अपनी इच्छासे, पूर्ण विवेकसे दे, वह आजके शासकोंकी जगह दूसरे शासक चुन सकती है। आवश्यकता है, कि वह निर्भय बने। अपनी आत्माके प्रति सच्ची रहे। यदि वह ऐसा करेगी, तो देशमें फैले भ्रष्टा-चारको दूर करनेमें सहायक होगी और भावी शासकोंके लिए भी उसका यह कार्य एक प्रकारसे चेतावनी सिद्ध होगा। आज पग-पग पर रुपया दक्षिणा दिये बिना उसका काम नहीं बनता, उसकी कोई सुनता नहीं। वह अनुभव करता है कि गरीब और दरिद्रके लिए आज कहीं स्थान नहीं। इस विवशताका वह अन्त कर सकता है यदि वह निर्भय हो। अपने मनकी बात कहने और असन्दिग्ध भाषामें प्रगट करनेका यदि साहस हो तो यह सम्भव है। पहली आवश्यता है कि जनता निर्भय और साहसी हो। क्या जनता इस सत्यको अनुभव करेगी ?

श्रद्धाञ्जलि

'आज'के वयोवृद्ध एवं ज्ञानवृद्ध सम्पादक श्रीबाबूराव विष्णुराव पराड़करका देहावसान असामयिक ही माना जायगा। उनकी प्रखर लेखनीका बल अभी क्षीण नहीं हुआ था, ग्रन्थियोंको सुलझाने वाले उनके स्वस्थ मस्तिष्ककी शक्ति क्षीण नहीं हुई थी, उनकी प्रतिभाका प्रकाश अभी मन्द नहीं हुआ था और उनका अजस्र लेखनी प्रवाह अभी चालू था। इस कारण उनका असामयिक निधन भारतीय पत्रकारिताके लिए शीघ्र पूरी न होने वाली क्षति है।

हिन्दी-पत्र-कारिताको उच्च स्थान दिलाने और आजकी स्थिति पर पहुँचानेमें उनका बहुत बड़ा भाग है। साहित्य-प्रधान पत्र-कारिताको राजनीतिक एवं सामाजिक प्रधान पत्र कारितामें परिवर्तित करनेका श्रेय आपको है। आपने 'आज'के अग्रलेखों द्वारा जो मानदण्ड स्थापित किया उससे हिन्दीका गौरव बढ़ा है। विभिन्न शैलियोंको जन्म देकर विभिन्न विषयोंकी चर्चाका माध्यम बनाकर हिन्दी समाचार पत्रोंको बहुमुखी बनाया और उनको व्यापक एवं विस्तृत दृष्टिकोण दिया। हिन्दी पत्र यदि आज एकांगी नहीं है, विविध विषयोंकी चर्चासे पूर्ण है और समाजके प्रत्येक वर्गकी रुचिका पोषण करते हैं, तो इसका श्रेय स्व० पराड़करको है। आपके नेतृत्वमें हिन्दी पत्र कारिताने विस्तृत क्षेत्रमें प्रवेश किया और सफलता-पूर्वक किया।

आप पत्रकार थे, क्योंकि आप देशकी सेवा करना चाहते थे। आपने यह मार्ग चुना, क्योंकि आपके हृदयमें पराधीनताके प्रति गहरी आत्म ग्लानिकी भावना थी और देशको स्वाधीन देखनेके लिए सर्वस्व होम कर देनेकी उत्कट लालसा थी। पत्रकारिता आपका पेशा नहीं था, लक्ष्यकी पूर्तिका एक साधन था, एक माध्यम था। देशकी स्वतंत्रताके लिए आपने नजरबन्दी भी सही पर जन सेवाके मार्गसे कभी विचलित नहीं हुए। देशभक्त श्रीपराड़करको खोकर हिन्दी वस्तुतः दीन हो गई है। उसका एक प्रकाशस्तम्भ गिर गया है। हम श्रद्धेय पराड़करजीकी स्वर्गस्थ आत्माके प्रति अपनी विनम्र श्रद्धाञ्जलि भक्तिभावसे अर्पित करते हैं। उनका यशः शरीर चिरकाल तक जीवित रहे, यही हमारी प्रभुसे प्रार्थना है।

क्रान्तिकारी नरेशका स्वर्गवास

नेपालके महाराजा त्रिभुवन वीर विक्रमशाह देवका स्वर्ग-वास नेपालकी ही नहीं भारतके लिए भी एक असह्य क्षति है। राजा होकर जिसने क्रान्तिको जन्म दिया, क्रान्तिकारी तत्वोंका पोषण किया और लोकतंत्रकी प्रतिष्ठाके लिए मृत्युके समय तक प्रयत्न किया। वस्तुतः यह एक अद्‌भुत और विचित्र बात थी। स्व० नेपाल नरेशकी इस एक बातने ही भारतका हृदय जीत लिया और श्रीनेहरूको विमुग्ध बना दिया। सौ वर्षोंसे चली आ रही राणाशाहीका अन्त हो गया और उसका अन्त करनेमें स्व० नेपाल-नरेशने भाग लिया, यह एक ऐतिहासिक घटना है। इसको सफल और पूर्ण बनानेमें योग देने वाला एक दूसरा व्यक्ति भी आज इस

लोकमें नहीं रहा। बहुत कम लोग जानते हैं कि क्रान्तिकारी दलोंको अपना कार्य करनेके लिए भारतमें अड्डा और सुविधा देने वाले व्यक्ति स्व० श्रीरफीअहमद किदवई थे, श्रीनेहरू नहीं। आज राजा त्रिभुवन और श्रीकिदवई दोनों ही नहीं रहे। भारत और नेपालके बीचकी एक दृढ़ कड़ी टूट गई है। नये राजा स्व० पिताका अनुसरण करेंगे, उनके पथ पर चलेंगे, यह ठीक है। पर आज नेपालके बदले मस्तिष्कको भी क्या वे सुधार सकेंगे? स्व० राजाका काम अधूरा रह गया। १९५१ की क्रान्ति अभी तक अपूर्ण है। इस कारण नेपालके समान भारतके लिए दुःखी होना स्वाभाविक है। स्वर्गीय नरेशकी आत्माको मंगलमय प्रभु शान्ति दें, यही हमारी हार्दिक इच्छा है।

भारतीय संस्कृतिके महान् अनुरागी एक नरेशका निधन

आज राष्ट्र देशी राज्योंके नरेश गणको विस्मृत करता जा रहा है—यद्यपि उन राज्योंकी प्रजा अब भी साश्रु नयन उनके गुण गाती नहीं अघाती—पर उन नरेशोंने भारतीय संस्कृतिके संरक्षणमें महत्त्वपूर्ण हाथ बटाया था, इसमें कुछ सन्देह नहीं।

शाहपुरा मेवाड़के स्वर्गीय महाराज हिज हाइनेस श्री उम्मेदसिंहजी 'श्रेयोऽर्थी' ऐसे ही भारतीय संस्कृतिके अनन्य अनुरागी नरेश थे। आपने वैदिक विधिके अनुसार अग्न्याधान किया था। शास्त्रीय विधिके अनुसार दैनिक पंचमहायज्ञोंके साथ प्रति अमावास्या और पूर्णिमाको दार्श पौर्णमासेष्टी तथा समय-समय पर नवसस्येष्टी आदि अनेक यज्ञोंमें वे सदा सोत्साह भाग लेते थे। आज स्यात् ही कोई अन्य नरेश 'आहिताग्नि' मिल सके। आप बड़े ही विद्याव्यसनी महानुभाव थे। गुरुकुल-कांगड़ी, एवं नागरी-प्रचारिणी सभा आदिको आपने एक बहुत बड़ी द्रव्य-राशि विविध कार्योंके लिए प्रदान की थी। राज्यमें गौतम-कर्मकांड पाठशाला, ब्रह्मविद्यालय आदि अनेक संस्कृत-शिक्षण संस्थाएँ स्थापित कीं थीं, जिनमें पचासों छात्रोंको निःशुल्क भोजन वस्त्रादिकी सब सुविधाएँ थीं। विद्वानों, साधु सन्यासियों एवं महात्माओंके लिए आपके कर व द्वार सदा उन्मुक्त रहते थे। आपके कथाव्यास श्री पं० हरिश्चन्द्रजी साहित्य व्याकरण वेदाचार्य वैदिक-वाङ्मयके प्रकाण्ड विद्वान् हैं। आश्रम व्यवस्थाके अनुसार आपने अपना राज्य युवराज श्री सुदर्शनदेवजीको देकर 'वार्धके मुनिवृत्तिनाम्' की उक्तिको चरितार्थ किया था। ऐसे पुण्यश्लोक नरेशके उठ जानेसे प्रत्येक भारतीय संस्कृतिका अनुरागी व्यक्ति हार्दिक दुःख अनुभव कर रहा है। श्रीस्वाध्याय-परिवार स्वर्गीय महाराजकी पूतात्माकी सद्गतिके लिए प्रभुसे प्रार्थना करता और उनके शोक सन्तप्त परिवार, विशेषतः राजाधिराज हिज-हाइनेस श्री सुदर्शनदेवजीके साथ अपनी हार्दिक समवेदना प्रकट करता हुआ आशा करता है कि आप भी अपने पिताश्रीके समान विद्वानोंका संरक्षण कर भारतीय संस्कृतिकी उपासनामें निरत रहेंगे।

केन्द्रीय बजट

श्री देशमुखका १९५५-५६ का बजट भूतपूर्व मंत्री श्री गाडगिलके कथनानुसार समाजवादी नहीं है, और प्रसिद्ध बैंकर श्री चुन्नीलाल मेहताके शब्दोंमें, २० दिसम्बर १९५४ को लोकसभा द्वारा स्वीकृत आर्थिक नीतिका प्रस्ताव और आवड़ी-कांग्रेस द्वारा स्वीकृत समाजवादी ढंगका समाज स्थापित करनेका किया गया निश्चय, इन दोनोंके कारणोंसे उत्पन्न आशंकाओंका निरसन और निर्मूलन इस बजटने कर दिया है। इससे सहजमें समझा जा सकता है कि पुराने बजटोंके समान यह बजट भी जनताका बजट नहीं है। बजट पर एक दृष्टिपात करिये—

(करोड़ रुपयोंमें)

	हिसाबी	बजट	अनुवीक्षित	बजट
	१९५३-५४	१९५४-५५	१९५४-५५	५५.५६
राजस्व	४१५.९८	४५१.७३	४५१.०८	४६८.७६
व्यय	४०७.४८	४६७.०९	४५६.०८	४९८.९३
नये प्रस्तावित करोंका प्रभाव	—	—	—	+२१.७०
घाटा या बचत	+८.५	—१५.३६	—५.००	—८.४७

इससे एक बात स्पष्ट है। वित्तमंत्रीने नये कर लगानेके लिए आयको कम करके अनुमान किया है। १९५३-५४ में ८.५ करोड़की बचत होना और १९५४-५५ के बजट घाटेका १५.३६ करोड़ रु० से घट कर ५ करोड़ रु० रह जाना यही प्रमाणित करता है कि २१.७० करोड़ रु० का नया

कर-भार डालनेके लिए वित्त मंत्रीने यह मार्ग पकड़ा है। यद्यपि श्री देशमुखने राज्यसभामें इस आरोपसे इनकार किया है और आयका कम अनुमान करनेका कारण परिस्थितियों को बताया है। परन्तु उनके द्वारा उपस्थित किये हुए आंकड़े ही उनकी बात की पुष्टि नहीं करते ।

३० करोड़ घाटेको कम करके ८.४७ करोड़का करनेके लिए इस वर्ष २१.६० कोटि रु० के और नये कर लगाए गये हैं। वित्त मंत्रीने करके लिए जिन वस्तुओंको चुना है, उनमें, कागज, चीनी, कपड़ा, सिगरेट, बिजलीका बल्ब, गत्ता, बिजलीकी बैट्री आदि वस्तुएँ हैं, जो जनताके उपभोगकी वस्तुएं हैं। सीनेकी मशीन भी करसे नहीं बच सकी है। मोटे और मध्यम श्रेणीके कपड़े पर सर कवासजी जहांगीरके शब्दोंमें १५० प्रतिशत कर बढ़ गया है। उत्पाद-शुल्कको वित्तमंत्रीने कामधेनु माना हुआ है। जकातसे आय की आमदनी घटनेकी आशा है। आय-करसे उत्पन्न आय जहांकी तहां है। नियोजन कालके चार वर्ष बीत गये और आय-करकी आय जहांकी तहां स्थिर है यह क्या विस्मयजनक बात नहीं है ?

शिक्षाका प्रसार इस सरकारका ध्येय है। पर कागज पर ही कर लगाया गया है। क्या यह ध्येयके अनुकूल है। दूध तो दुर्लभ हो ही गया है। अब कदाचित् चाय भी दुर्लभ हो जाय। चीनी मंहगी होने पर स्फूर्त्ति पानेके लिए चाय पीनेके अभ्यस्त क्या यथेच्छ चाय पी सकेंगे ? गुड़ और हाथका बना कागज कर-मुक्त रखे गये हैं। पर क्या गुड़के साथ चाय पी जा सकती है ? फल क्या होगा ? साधारण जनका जीवन और अधिक कठिन नीरस और उल्लास रहित हो जायेगा। सिगरेट पीना बुरा है । स्वास्थ्यके लिए हानिकर है। किन्तु यदि सरकार समझती है कि सिगरेट मंहगी हो जानेसे तम्बाकू-सेवनका परित्याग कर देंगे तो वह भारी भ्रममें हैं। लोग सिगरेटसे भी अधिक हानिकर और प्रबल मादककी तम्बाकू और बीड़ी पीयेंगे। सिगरेटके ६ आनेके पैकटको ११ आनेका करके—महंगा करके सरकार ने प्रति पैकेट केवल तीन पाई पायी है। शेष तो बीचके लोगों को मिला। इस अवस्थामें 'कश' को महंगा कर मध्यमवर्ग के पहलेसे बोझिल जीवनको और अधिक दुःखमय बनानेसे क्या देशमें सन्तोषकी वृद्धि होगी ?

आय-करमें विवाहितोंके प्रति कुछ रियायत की गई है। आय-कर मुक्त राशि वार्षिक १५०० रु० की जगह २००० रु० रहेगी। पर कुमारोंको कुमारत्वका दण्ड दिया गया है। उनके लिए आय-कर मुक्त राशि १००० रु० ही रखी गई है। ब्रह्मचर्यकी जहाँ महिमा गाई जाती हो और कहा जाता है—

"ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत"

उस देशमें ब्रह्मचर्य पर कर लगाना उचित नहीं प्रतीत होता। फिर यह सरकारकी सन्तति-नियमन नीतिके भी विपरीत है। वित्तमंत्रीने ब्रिटेनका इस विषयमें अन्धानुकरण किया है। ब्रिटेनमें कुमारों पर आय-कर इसलिए बढ़ाया गया था, जिससे युवक-युवती विवाह अधिकसे अधिक संख्यामें करें और देशकी जनसंख्यामें वृद्धि हो। ग्रेट ब्रिटेन की जनसंख्याका बढ़नेके बदले घटनेकी ओर रुख था। भारत के विषयमें यह बात नहीं कही जा सकती। यहां तो जनसंख्याकी वृद्धिको रोकनेकी समस्या है। फिर कुमारों पर कर बढ़ाना युक्तिसंगत कैसे कहा जा सकता है ?

वित्त-मन्त्रीने राज्य सभामें अपने बजटको 'समाजवादी' कहनेका साहस किया है। सन्तोषकी बात यह है कि बजट-भाषण तक वित्तमंत्री समाजवादी शब्दका उच्चारण करते हुए भी घबराते थे। परन्तु अब वे कहने लगे हैं कि शासन का उद्देश्य देशमें समाजवादी ढंगका शासन स्थापित करना है। बजट पर हुए विचारका राज्य सभामें उत्तर देते हुए वित्तमन्त्रीने इस बातको कमसे कम तीन बार कहा है। परन्तु प्रश्न तो यह है क्या उनका बजट भी समाजवादी ढंगका है ? कारपोरेशनों और निगमोंको मुक्त रख करके कार्पोरेशन करमें वृद्धि किये गये बिना क्या कहा जा सकता है कि यह बजट आर्थिक विषमताको घटाने और देशमें समाजवादी ढंगका समाज स्थापित करनेमें सहायक होगा ? सरकार वस्तुतः समाजवादी ढंगका समाज स्थापित करना चाहती है। इसमें यह सन्देह उत्पन्न करता है।

प्रथम पंचवर्षीय नियोजनका यह अन्तिम वर्ष है। इस बजटका निर्माण भी नियोजनको सफल बनानेकी दृष्टिसे किया गया है। विकास योजनाओं पर इस वर्ष ५७८ करोड़ रु० व्यय होगा। वित्तमन्त्री यह राशि इस प्रकार प्राप्त करना चाहते हैं:—

(करोड़ रु० में)

१ बाजार से ऋण	१२५
२ छोटी बचत	५२
३ विदेशी सहायता	७४
४ अन्य देय ऋणों व प्रेषण लेन देनोंसे	८६
कुल जोड़	३३७

वित्तमंत्री ने ३ अरब ३७ करोड़ रु० पानेकी आशा की है। क्या उनकी यह आशा पूरी होगी ? २४१ करोड़ रु० की पूर्ति मासिक प्रिंटिंग प्रेस व अल्प वित्तीय व्यवस्था से की जायगी। वित्तमंत्रीको विश्वास है कि इस परिमाणमें कागजी मुद्रासे सहायता लेने पर भी मुद्रा स्फीति सिर न उठायेगी। प्रश्न यह है—क्या वित्तमंत्रीका यह विश्वास साधार है।

रेलवे बजट

रेलवे बजट भी सामान्य जनताका भार बढाने वाला है—यथा—

(करोड़ रुपयों में)

	बजट		अनुवीक्षित		बजट
	१९५२-५३	५३-५४	५४-५५	५४५५	५५-५६
यातायातकी आय	२७१	२७४	२७३	२८३	२९३
संचालन व्यय	१८८	२०२	१९५	२०३	२०७
विविध व्यय	५	६	८	८	७
मूल्य ह्रास सुरक्षानिधि	३०	३०	३०	३०	३५
विशुद्ध रेलवे राजस्व आय					
राजस्वको मुनाफा	४७	३७	४१	४२	४३
राजस्व	३४	३४	३६	३५	३६
विशुद्ध बचत	१३	२.६	५	६.५	७

इससे प्रकट है कि रेलवेकी आय बढ़ रही है। परन्तु इसके साथ उसका व्यय भी बढ़ रहा है। व्यय वृद्धिका मुख्य कारण है मरम्मत और सम्भालका खर्च बढ़ना। इस मदमें १९५४-५५ के बजटसे अनुवीक्षित बजटमें ४ करोड़ की वृद्धि हुई है। देशमें बड़े परिमाणका इंजिनियरिंग उद्योग नहीं है। इसी कारण इसकी मरम्मत और संभालका व्यय बढ़ रहा है। संतुलित उद्योगका विकास न होने तक रेलवे की प्रगति मन्द रहेगी।

रेलवे नियोजन-कालमें ४००करोड़रु०के स्थान पर अपने विकासमें ४१८ करोड़ रु० व्यय करेगी। यह सन्तोषकी बात है कि जब अन्य अपने लक्ष्य स्थान तक नहीं पहुँच पा रहे हैं तब रेलवे अपने नियोजन लक्ष्यसे भी आगे बढ़ गयी है। किन्तु इसके साथ यह भी मानना पड़ेगा कि औद्योगिक प्रगतिके अनुसार रेलवेकी प्रगति अभी नहीं हुई है।

डा० जान मथाईने दूरगामी रेल यात्राको प्राप्त रियायत का अन्त कर दिया था। अब पुनः टेलिस्कोपिक दूरबीनी पद्धतिको प्रचलित करके उसका प्रचलन किया गया है। ६०० मीलसे अधिककी यात्रा करने वाले मुट्ठी भर लोगोंको यह रियायत दी गई है। पर किस मूल्य पर ? पहले ३०० मील पर किराया बढ़ा दिया गया है। पहले ५० मील पर किराया-वृद्धि न होगी। साधारण गाड़ीसे यात्रा की जायगी, पर एक्सप्रेस और मेलसे यात्रा करने पर यह रियायत प्राप्त न होगी। धीमी गतिसे चलनेवाली गाड़ी ही कदाचित् गांव वालोंको अधिक पसन्द है! पहले ३०० मीलका किराया बढ़ा कर मध्यमवर्ग और विशेषतः नौकरी और उद्योगकी खोजमें राज्योंकी राजधानियोंका चक्कर लगाने वाले बेकार मध्यम वर्ग पर यह एक और नया भार लादा गया है। इस दृष्टि से रेलवे-बजट भी भार बढ़ाने वाला ही सिद्ध हुआ है।

सुदूर पूर्वमें अशान्तिके बादल

तेचान द्वीप च्यांगकाई शेककी चीनी नेशनलिस्ट सेनाने अमरीकाकी प्रेरणासे खाली कर दिया। पर क्वेमाय और मात्सु द्वीपोंको जो कि चीनी तट से ३००० गज दूर है नेशनलिस्ट चीन खाली करनेको तैयार नहीं है। ब्रिटेनने यही परामर्श दिया है कि मार्शल च्यांग इन द्वीपोंको खाली कर दे। परन्तु अमरीका यह परामर्श च्यांगको देनेके लिए अभी उद्यत नहीं है। बम वर्षा चालू है, और पोतोंका डुबोना चालू है। सिनेटर क्नोलैंडने सुझाव दिया है कि ब्रिटेन हांगकांग खाली कर दे। जनवादी चीनके लिए यह सर्वोत्तम उपहार होगा। इससे प्रगट है कि क्वेमाय और मात्सु द्वीपोंका प्रश्न प्रतिष्ठाका प्रश्न है। पेकिंगके लिए इन द्वीपों पर च्यांगका अधिकार रहना उसकी निर्बलताका सूचक है। अमरीकाके लिए इनका खाली करना वैसा ही

[शेष पृष्ठ ५१ पर]

आनन्द

[लेखक—श्री बलजिन्नाथ पण्डित एम० ए०, एम० ओ० एल०)

(१) आनन्द क्या है ?

आनन्द आनन्द संसारमें सब कोई कहता है परन्तु आनन्द क्या है यह कोई भी नहीं कह पाया। लोग कहते हैं—आज बड़ा ही स्वादु भोजन खाया और खूब आनन्द आया। या आज हमने सिनेमामें भरत-मिलाप देखा और बड़ा ही आनन्द आया इत्यादि। उनमें से किसी से पूछिए कि भाई स्वादु भोजन खाया तो भोजन और उसके मधुर, अम्ल, लवण आदि रसका ज्ञान हो गया। यह तो हमने जान लिया। पर आनन्द क्या वस्तु है? क्या क्षीर आनन्द है? या पूड़ी आनन्द है या कढ़ा आनन्द है? क्या मीठापन आनन्द है या खट्टापन या नमकीनपन आनन्द है। यदि क्षीर आदि ही आनन्द हो तो सबके लिए वह आनन्द ही होना चाहिये। सूर्य सूर्य है तो सभी के लिए सूर्य है। कोई भी इसे असूर्य नहीं कहता। जो धूपका सेवन करता है वह भी और जो धूपसे तंग आकर छायाको ढूँढता है वह भी सूर्य को सूर्य ही समझता है। परन्तु क्षीरको बनाने वाला इसे आनन्द नहीं समझता, क्षीरकी रक्षा करने वालेकी भी वही दशा है। क्षीरको देखने या छूने वालेके लिए भी क्षीर केवल क्षीर ही है, क्षीर उसके लिए आनन्द नहीं। क्षीर केवल औत्सुक्य से खाने वाले के लिए ही आनन्द है। उसका भी जब पेट भर जाए तो फिर क्षीर आनन्द नहीं। या प्रतिदिन वह क्षीर खाए तो क्षीर अरुचिकर अर्थात् अनानन्द बन जाता है। इसलिए क्षीर आदि आनन्द नहीं। यही हाल मीठे खट्टे या नमकीन रसका है। रस रस ही है, आनन्द नहीं। भोजन और इन रसों में भेद केवल इतना है, कि क्षीर आदि भोजन द्रव्य है और मधुर आदि रस गुण हैं। यही दशा प्रत्येक द्रव्यकी या गुणकी है। कोई भी आनन्द नहीं। द्रव्य गुण आदि सभी विषय हैं। इसी प्रकारसे नाटक भी एक विषय है। रंगभूमि पर एक स्त्री अभिनय करती है, तो देखने वालों को उससे आनन्द आता है। यदि उनसे पूछा जाए कि वह आनन्द क्या वह स्त्री ही है तो कहेंगे कि नहीं। क्योंकि यदि वह स्त्री ही आनन्द होती तो एक जरन्मीमांसकको हम नाटक देखनेके लिए ले जाते हैं, उसके लिए न तो वह स्त्री ही आनन्द है, और न ही उस स्त्री का अभिनय ही। यही हाल एक विरक्तका है। उसके लिए ये सभी चीजें अकिञ्चित्कर हैं। कोई भी वस्तु उसे आनन्दमय प्रतीत नहीं होती। अच्छा तो एक अतीव सुन्दरी है, उसे देख कर सभीको आनन्द होता ही है। तो वह सुन्दरी या उसका सौन्दर्य ही आनन्द है। परन्तु सूक्ष्म विचारसे प्रतीत होगा कि यह बात भी ठीक नहीं। यदि वह सुन्दरी या उसका सौंदर्य ही आनन्द होता तो सभी उसे आनन्द ही समझते! परन्तु ऐसी बात नहीं। जिससे वह सुन्दरी प्रेम करती है, उसके लिए तो वह आनन्द है। परन्तु जो उस सुन्दरी को चाहता है पर उसे मिलती नहीं, उसके लिए तो इस का स्मरण करना भी महान् दुःख है, देखनेकी तो बात ही नहीं। जिससे प्रेम भी करती है वह भी यदि इस सुन्दरीसे वियुक्त हो तो वियोगमें यही सुन्दरी और इसका सौंदर्य उस विरही प्रेमीको अत्यन्त दुःख देते हैं। तो विरहकी दशामें आनन्द रूपिणी सुन्दरी भी अनानन्द रूपिणी हो जाती है। इसलिए सुन्दरी या सौंदर्य आनन्द नहीं। किसी माताका बच्चा अत्यन्त कुरूप होता है। उस बच्चेको देख कर ही लोगोंको

घृणा होती है। क्यों ? यदि कहो कि सौंदर्य आनन्द है और असुन्दरता अनानन्द है। तो हम पूछते हैं, कि उस बच्चेकी माताको बच्चेसे प्यार करते हुए उसे देखते और स्पर्श करते हुए क्यों अपूर्व आनन्द आता है। वह बच्चा तो आनन्दरूप नहीं। क्योंकि विचारा अत्यन्त कुरूप है।

ऐसी स्थितिमें विचारवान् लोग कहेंगे कि माता का बच्चेसे अत्यन्त प्रेम है, और बच्चेको भी मातासे, इसी लिए वे एक दूसरेके लिए आनन्दरूप हैं। इसी तरह उस सुन्दरीको अपने प्रियतमसे प्रेम है, और प्रियतमको भी उस सुन्दरीसे गाढ़ प्रेम है, इसी लिए वे भी एक दूसरेके लिए आनन्दरूप हैं। इस लिए परस्पर प्रेम ही वस्तुतः आनन्द है। यह उत्तर तो आपाततः ठीक प्रतीत होता है। परन्तु विचार करने पर विदित हो जाता है कि जैसे आनन्द एक शब्दमात्र है, उसके अर्थको हम बच्चे या स्त्री या नाटक या भोजनकी भांति आंखोंसे देख नहीं सकते, उसी प्रकारसे प्रेमको भी हम देख नहीं सकते। इसलिए जैसे आनन्दको समझना कठिन है, वैसे ही प्रेमको भी समझना कठिन है। तो प्रेम शब्दसे आनन्द शब्दका व्याख्यान हो नहीं सकता।

नैयायिक आदि हमें कहेंगे कि आनन्द आत्माका एक गुण है और विषय उस गुणका कारण है। स्त्री या बच्चा आदि स्वयं आनन्द नहीं। जो उन्हें चाहता हो, उसके आनन्दके ये कारण मात्र हैं। हम उनसे पूछते हैं, कि यदि आनन्द आत्माका गुण है, तो आत्माका ही गुण है। विषयको उससे सम्बन्ध ही क्या। यदि विषय उसका कारण है तो कैसे है ? क्या उस तरहसे है जिस तरह अग्नि घड़ेके लाल रंगका कारण है। यदि ऐसी बात हो तो जैसे नीला घड़ा नष्ट होकर लाल घड़ा उत्पन्न हो जाता है, वैसे ही आनन्द-रहित आत्मा नष्ट हो कर आनन्द-सहित आत्मा उत्पन्न हो जानी चाहिए। इस तरहसे आत्माकी नित्यता नहीं रहती। यदि आप कहें कि जैसे विषयके संयोग वियोग आदिसे आकाशमें कहीं कहीं शब्द पैदा होता है, वैसे ही विभु आत्मामें प्रिय विषयके संयोग और अप्रियके वियोगसे आनन्द उत्पन्न होता है। तो हमारा यह प्रश्न होगा कि हम शब्द को कानोंसे सुनते हैं, उसका हम वर्णन कर सकते हैं, उसके स्वभावको उसके क, ख, आदि प्रकारोंको हम जान सकते हैं और दूसरेको समझा सकते हैं। इसलिए शब्दको तो हमने मान लिया। शब्दका आश्रय हम ने आकाशको कल्पनासे समझ लिया। परन्तु आनन्द और उसका आश्रय दोनों ऐसे हैं कि इनको हम किसी भी बाह्य इन्द्रियसे जान नहीं सकते और न ही दूसरेको इनका स्वरूप समझा सकते हैं। इसीलिए तो हमारा प्रश्न था कि आनन्द क्या है ? उसका उत्तर हमें मिल रहा है कि आनन्द एक काल्पनिक द्रव्य आत्माका कोई एक काल्पनिक गुण है, तो वन्ध्या सुत भी एक काल्पनिक द्रव्य हो सकता है, और खरगोशके सींगोंके धनुषकी विद्या उसका एक काल्पनिक गुण हो सकता है। इस तरहसे काल्पनिक बातोंसे आनन्दका स्वरूप स्पष्ट नहीं हो सकता। आप कहेंगे कि आत्मा और आनन्द केवल काल्पनिक ही पदार्थ नहीं, मनसे तो हमको उनका प्रत्यक्ष अनुभव होता है। तो हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि हमें प्रत्यक्ष अनुभव नहीं होता, आप हमें समझा दीजिए। हमने काश्मीरको प्रत्यक्ष देखा है हम आपको काश्मीरका सारा हाल बता सकते हैं। आप भी हमें आनन्दका स्वरूप, स्वभाव, प्रकार और विशेषताएं बता दीजिए। आनन्द क्या है ? कैसा है ? कैसे होता है ? क्यों होता है ? क्यों नहीं होता है ?

इसका एक मात्र उत्तर यही हो सकता है कि "आप भी किसी प्रिय विषयका सेवन कीजिए तो आप को भी अपने अनुभवसे ही आनन्दका साक्षात्कार होगा।" दूसरे शब्दोंमें आनन्द अनिर्वचनीय है, शब्दों द्वारा इस का वर्णन या ज्ञान हो नहीं सकता। केवल अपने ही अनुभवसे अपने आपको आनन्दका ज्ञान हो सकता है। आप पेट भर स्वादु भोजन खाइए, सुन्दर दृश्य को देखिए, मधुर संगीतको सुनिये, कोमल वस्तुका स्पर्श कीजिए, सुगन्धका सेवन कीजिए, किसी सुन्दरीसे प्रेम कीजिए, प्रिय पुत्रसे प्यार कीजिए, काव्यको पढ़िए या

नाटकको देखिए, तो आपको स्वयं आनन्दका अनुभव होगा। यदि आप पूरे विरक्त हैं यदि आपको सुन्दर से सुन्दर और रमणीयसे रमणीय विषय भी अशुचि और अप्रिय प्रतीत होते हैं, तो आप योगके अभ्याससे समाधि लगा लीजिए, तो आपको भी अपूर्व आनन्दका अनुभव होगा। इस तरहसे आनन्द सदा स्वानुभव से ही जाना जा सकता है। स्थूल दृष्टिसे तो इस रीति से यह आनन्दका प्रश्न सुलझाया जा सकता है। परन्तु जिस तरहसे हमारे प्रश्न थे कि आनन्द क्या वस्तु है? इत्यादि, उस तरहसे हमें उत्तर नहीं मिला। अस्तु, हम अब अपने अनुभवसे उन सब प्रश्नोंका उत्तर समझ लेंगे, ऐसी आशा तो है। परन्तु शंका यह उत्पन्न होती है कि अनुभव दो प्रकारका होता है, निर्विकल्पक और सविकल्पक। हम यहांसे बाजारमेंसे चलते हुए नदी की ओर जाते है। सहस्रों विषयोंका प्रतिबिम्ब हमारे नेत्रों पर पड़ता है, और सहस्रों शब्दोंका प्रतिबिम्ब (प्रतिशब्द या शब्दज शब्द) हमारे कानोंके आकाशमें प्रवेश करता है। उनमेंसे किसीका भी हमें कुछ भी स्फुट ज्ञान नहीं होता। कारण यह है कि उनका अनुभव निर्विकल्पक होता है। उस अनुभवमें विशेषण-विशेष्य भाव, जाति व्यक्ति, सम्बन्ध, शब्द-अर्थ सम्बन्ध आदि कुछ भी प्रतीत नहीं होता। जैसे एक घोड़ेका प्रतिबिम्ब नेत्र पर पड़ता है। नेत्र भी मस्तिष्कके नाड़ी चक्रका एक ग्राहक अंग है। वह घोड़ेके प्रतिबिम्बको साङ्गोपाङ्ग ग्रहण करता है। परन्तु वह घोड़ा केवल वही वस्तु है जो है। वह एक अर्थ मात्र है। "घोड़ा" इस शब्दका सम्बन्ध नेत्रमें प्रतिबिम्बित नहीं होता। दूसरे घोड़ोंसे सजातीयता सम्बन्ध भी प्रतिबिम्बित नहीं होता। इस तरहसे वह एक वस्तु मात्र ही अनुभवमें प्रतीत होता है, प्रतीत भी क्या होता, वस्तु मात्र का निर्विकल्पक मात्र अनुभव होता है। ऐसे अनुभवसे किसी भी वस्तुको स्फुट रूपमें जाना नहीं जा सकता। इस तरहका अनुभव होना न होने हीके समान है। यदि इस तरहसे आनन्द का अनुभव निर्विकल्पक ही होता है तो समझिए कि आनन्दका ज्ञान हो ही नहीं सकता। निर्विकल्पक तो विचारा गूंगा और बहिरा होता है। उससे हमारा काम नहीं चलता है। निर्विकल्पकके अनन्तर सविकल्पक ज्ञान होता है। इस ज्ञानमें विकल्प भी साथ रहता है। विकल्प एक वस्तुशून्य कल्पनाको कहते हैं। इस कल्पनासे हम वस्तुमात्रके साथ नामका सम्बन्ध जोड़ते हैं। घोड़ा एक वस्तु है। "घोड़ा" यह एक शब्द है। इस शब्द का उस अर्थके साथ कोई भी सम्बन्ध नहीं। अर्थका प्रतिबिम्ब नेत्र ग्रहण कर सकते हैं। अर्थ पांच भौतिक स्थूल द्रव्य है। पर शब्दका ग्रहण श्रोत्र से हो सकता है। शब्द एक गुण है। इनका आपसमें क्या सम्बन्ध। फिर भी हमने विकल्पकी वस्तु, शून्य, कोरी कल्पनासे सांसारिक व्यवहार चलानेके लिए इनका सम्बन्ध जोड़ कर रखा है। निर्विकल्पक ज्ञानके अनन्तर ही मन द्वारा हम इस सम्बन्धकी कल्पना सहित इस वस्तु मात्रका पुनः अनुभव करते हैं। यही सविकल्पक अनुभव होता है। इसीसे हम वस्तु को समझ सकते हैं। इस अनुभवसे समझी हुई वस्तुको हम शाब्दी कल्पनासे दूसरेको भी समझा सकते हैं। यह विकल्प ज्ञान निर्विकल्पककी तरह गूंगा और बहिरा नहीं। सारा व्यवहार इसीसे चलता है। जब विकल्प ज्ञानसे हमने घोड़ेको देखा, तो यदि हमें कोई पूछे कि क्या देखा? तो हम कह सकते हैं कि घोड़ा देखा। कैसा घोड़ा—सफेद घोड़ा; किस प्रकारका—खूब ऊंचा और बलवान, किस कामका—युद्ध में किसी सेना नायक की सवारीके योग्य; इत्यादि। इस प्रकारके उत्तरोंसे दूसरा भी इन समस्त विशेषताओंको भलीभांति समझ सकता है। यह विकल्प ज्ञानकी महिमा है। अब यदि इस सविकल्प अनुभवसे हम आनन्दको जान सकें तो घोडे की तरह उसका वर्णन करनेकी शक्ति भी हममें आनी चाहिए। परन्तु आनन्द का अनुभव करके भी हम उसका वर्णन नहीं कर सकते। हम इस विषयमें फिर भी गूंगे और बहिरे ही रह जाते हैं। इसलिए अपने अनुभवसे आनन्दको समझ सकते हैं—यह तो हमने मान लिया था, परन्तु अपने अनुभवसे किस प्रकार समझ सकते हैं—यह हमारी समझमें कुछ नहीं आया।

निर्विकल्पकसे तो समझ ही नहीं सकते, और सविकल्पक से समझ नहीं रहे हैं। तो 'कैसे समझते हैं' यह एक रहस्य ही है। इसलिए आनन्द क्या है, कैसा है, इत्यादि भी रहस्य ही हैं।

शरीर मन, बुद्धि आदिमेंसे आनन्दका अनुभव कौन करता है, यह भी रहस्य ही है। आत्मा अनुभव करता है—यदि यह कहा जाए, तो ऐसा कहना या न कहना एक ही बात है। क्योंकि आत्मा भी आनन्दकी तरह कोई वस्तु मात्र ही है। शरीर, मन, बुद्धि, प्राण आदिसे अतिरिक्त आत्माको भी स्फुट रूपसे आनन्द की तरह ही जाना नहीं जा सकता। आनन्दका किससे अनुभव करता है, और कैसे अनुभव करता है—ये सभी बातें रहस्य ही हैं। सामान्यतः निर्विकल्पक या सविकल्पक अनुभवसे इन बातों का रहस्य खुल नहीं सकता। काल्पनिक उपपत्तियां काल्पनिक ही हुआ करती हैं। वे सदा श्रद्धेय नहीं होतीं।

तैत्तिरीय उपनिषदमें आनन्दके विषय में कहा है—

युवा स्यात् साधुयुवा, आध्यायकः
आशिष्ठो दृढिष्ठो बलिष्ठः।
तस्येयं पृथिवी सर्वा वित्तस्य पूर्णा स्यात्।
स एको मानुष आनन्दः॥

अर्थ—"एक अच्छा खासा जवान हो, विद्यावान् हो बलवान् हो और दृढ शरीर वाला हो, तथा आशाओं से भरा हुआ हो। यह सारी पृथ्वी वित्तसे (काम्य विषयों से) भरी हो और यह उसकी ही हो। यही एक मानुष आनन्द है।" इसके अनन्तर उत्तरोत्तर आनन्दकी अधिकता का वर्णन करते हुए, उपनिषदमें परब्रह्मका आनन्द ही परम आनन्द कहा गया है। इसे आनन्दकी मीमांसा कहा गया है। इस आनन्द की मीमांसामें जो आनन्दका उत्तरोत्तर उत्कर्ष कहा गया है, वह अच्छी प्रकारसे समझमें आता है। परन्तु आनन्द क्या वस्तु है, इस बातको यहां भी स्पष्ट नहीं बताया गया है। वस्तुतः आनन्दका वर्णन स्पष्टरूपसे हो ही नहीं सकता। फिर भी शास्त्र थोड़ा बहुत स्पष्ट करनेकी चेष्टा करते ही रहते हैं। विशेष कर शैव शास्त्रमें इस प्रकार के प्रयत्न किये गये हैं। शैव शास्त्रकी दृष्टिसे देखा जाए तो आनन्दकी मीमांसामें उपनिषदने आनन्द का स्वरूप व्यंजना-वृत्तिसे कह ही दिया है। पूर्ण यौवन में वर्तमान मनुष्य धनधान्य आदिसे सम्पूर्ण इस पृथ्वी का स्वामी अपने आपको समझता है। इस प्रकारका अभिमान ही वस्तुतः आनन्द है। अपने आपको वह इस समृद्ध पृथ्वीका स्वामी कैसे समझता है? वह इस तरहसे —वह युवा चेतन है। चैतन्यकी महिमासे वह चमकता है और चमकते हुए अपने आपको समझता है कि मैं हूँ। इसीको अहंभाव कहते हैं। वस्तुतः यह अहंभाव ही आनन्द है। अहंभावको मनुष्य इन्द्रियों द्वारा या मन द्वारा समझता नहीं। क्योंकि जब सुषुप्ति की अवस्थामें मन और इन्द्रियोंकी शक्ति काम नहीं करती। अहंरूप अपने आप उस समय भी प्रकाशित होता ही रहता है। इस तरह अपना आप स्वयं प्रकाशित होता है। इसीलिए इसे स्वप्रकाश कहते हैं। जागर-स्वप्न अवस्थाओंमें इसी आत्माके ही प्रकाशसे मन और इन्द्रिय काम कर सकते हैं। प्रत्येक जीवसे पूछिए कि "क्या तू है" तो वह बताएगा कि "हां मैं हूँ"। कोई भी नहीं कहेगा कि "मैं नहीं हूँ"। हर एक अपने आपको अपने प्रकाशसे ही प्रकाशित होता हुआ समझता है। इस तरहसे आत्म-तत्त्व सर्वत्र स्वप्रकाश है। प्रकाश इसका अपना स्वभाव है। परन्तु प्रकाश में भी जब तक विमर्श न हो तब तक वह अप्रकाशके समान ही है। विमर्श अर्थात् (consciousness) ही प्रकाशका हृदय है, उसका जीवन है, उसकी प्रकाशता है। इस लिए "मैं हूँ", या केवल "मैं" का अर्थ यह है कि मैं प्रकाशरूप तथा विमर्श रूप हूं। प्रकाश जैसे विमर्शके बिना नहीं होता वैसे ही विमर्श भी जब तक प्रकाशरूप न हो तब तक वह प्रकाशित ही कैसे हो। इस तरहसे यह वस्तुतः एक ही तत्त्व है जिसको ये दो नाम कल्पना भेदसे दिए गए हैं। वह प्रकाश विमर्श तत्त्व ही आत्मा है। वही 'अहं' है। यह अहं विमर्श ही वस्तुतः चमत्कार है। एक दीवार पर एक सुन्दर चित्र है, उस दीवारको इस चित्रसे कोई चमत्कार नहीं।

क्योंकि उन दोनोंमें विमर्श नहीं। वे दोनों अपने आप का विमर्श कि "मैं हूँ" नहीं कर सकते, इस लिए उन्हें चमत्कार भी नहीं। परन्तु एक रसिक मनुष्य ज्योंही उस चित्रको देखता है त्योंही उसे चमत्कार होता है कि "अहा! कैसा ही सुन्दर चित्र है। धन्य है वह चित्रकार जिसने इसे खींचा है"। यह क्यों? यह इस लिए कि वह मनुष्य अपने आपका विमर्श कर सकता है। अपना अहं विमर्श ही वस्तुतः चमत्कारमय है। इस अहंभावको अहं रूपमें या ममत्व रूपमें जहाँ तक फैलाता है वहां तक सब कुछ चमत्कार पूर्ण बन जाता है। अहंभावको हम अपने शरीर आदि तक फैला देते हैं, तो अपने शरीर आदिके विमर्शसे चमत्कार होता है। अहंभावका ही दूसरा रूप ममत्व है। इसको हम अपने पुत्र, स्त्री, धन, धान्य और प्रिय आदि वस्तुओं तक फैला देते हैं, तो ये सभी वस्तुएँ हमारे लिए चमत्कारपूर्ण बन जाती हैं। युवा इस सारी समृद्ध पृथ्वी को अहंरूप या ममरूप ही समझता है। इस प्रकारके समझने अर्थात् विमर्शसे ही यह सारी पृथ्वी उसके लिए चमत्कार पूर्ण है। चमत्कार ही आनन्द है। और यह आनन्द वस्तुतः अहंविमर्श ही है। अहंबिमर्श आत्मा है। अतः आत्मा ही आनन्द है। आनन्द कोई भिन्न वस्तु नहीं। अपनी आत्मा अपने ही आनन्दकी वर्षा सुन्दर विषयोंपर करती है, तब वे आनन्दमय बन जाते हैं। एक सुन्दर स्त्रीके रूपको जब तक हम देखते नहीं, अर्थात् जब तक हम अपने प्रकाशसे उसे प्रकाशरूप बना नहीं देते, और जब तक अपने विमर्शसे उसका विमर्श नहीं करते, तब तक स्त्रीका वह रूप हमारे लिए आनन्द भी नहीं, वह है भी या नहीं ही है, ऐसा भी कोई निश्चय नहीं। परन्तु ज्यों ही इन्द्रियोंके मार्गसे हम उसे अपने प्रकाश विमर्श रूप आत्मामें प्रतिबिम्ब रूपमें ग्रहण करके उसे प्रकाश रूप और विमर्श रूप बना कर "इस स्त्रीका रूप क्या ही सुन्दर है" इस प्रकारसे विमर्श करते हैं, त्यों ही वह रूप हमारे लिए आनन्दमय बन जाता है। इस तरहसे हम अपने आप ही आनन्दरूप हैं। बाह्य विषय केवल इस आनन्दके परिचायक मात्र हैं। सूर्यका प्रकाश अपने स्वभावसे ही चमकता हुआ आकाशमें फैलता रहता है। परन्तु आकाश में वह अभिव्यक्त नहीं होता। उसकी अभिव्यक्तता (प्रकटता) का कारण चन्द्रमण्डल बन जाता है, तो चन्द्र मण्डलकी अभिमुखता मात्रसे ही सूर्यका प्रकाश वहां अभिव्यक्त हो जाता है। उसी प्रकारसे एक प्रिय वस्तुके अभिमुख होते ही आनन्दमय आत्माकी आनन्दरूपता अभिव्यक्त हो जाती है। तो ये सभी विषय आनन्दकी अभिव्यक्तिके कारण हैं। आनन्द इनमें नहीं। आनन्द रूप स्वयं आत्मा ही है।

[क्रमशः]

—— वचनामृत ——

दीन सबनको लखत है दीनहिं लखै न कोय, जो रहीम दीनहिं लखै दीन-बन्धु सम होय।
सबै सहायक सबलके कोऊ न निबल सहाय, पवन जगावत आगिको दीपहिं देत बुझाय।
धन रहीम जल पंकको लघु जिय पियत अघाय, उदधि बड़ाई कौन है जगत पियासो जाय।
जो बड़ेनको लघु कहौ नहिं रहीम घटि जाहिं, गिरिधर मुरलीधर कहे कछु दुख मानत नाहिं।
रहिमन पानी राखिये बिन पानी सब सून, पानी गये न ऊबरै मोती, मानुष, चून।
अपनी पहूँच बिचारि कै करतब करिये दौर, तेते पाँव पसारिये जेती लाम्बी सौर।
रहिमन देखि बड़ेनको लघु न दीजिये डार, जहाँ काम आवै सुई कहा करै तरवार।

मानव-धर्म

[लेखक—श्री केशव शर्मा शास्त्री]

मानव शब्द दिवादिगणीय 'मनु अवबोधने' धातुका है। मानवका सरल और सुन्दर यही अभिप्राय है कि विवेक पर्वक अपने उत्तरदायित्वको निभाने वाला प्राणी। वैसे तो प्रायः सभी प्राणी सोच समझ कर ही कार्य करते हैं, तथापि मानवमें अपनी एक अलौकिक चिन्तन शक्ति विद्यमान है। मानवकी सर्वोच्चता विज्ञानमय कोषके द्वारा प्रत्यक्ष रूपेण सिद्ध है।

प्रत्येक प्राच्य-दर्शन ग्रन्थ मानवको सर्वोपरि मानते हैं। दार्शनिक आधारपर मानव प्रकृतिका विजेता कहा गया है। सांख्य एवं योगदर्शनोंने तो स्पष्ट शब्दोंमें घोषणा की है कि मानवसे बढ़ कर या मानव पर विजय करने वाली विश्वमें कोई वस्तु नहीं है।

परन्तु यदि आजके कलिकाल-कालिमा कलुषित जनसाधारणके लिए हम मानव शब्दका प्रयोग करें तो कमसे कम मेरे विचारमें यह अन्याय होगा। सच कहा जाय तो मानव कहलानेका अधिकारी वही है जिसने अपनी मानवतामें एक विशेष चमत्कृतिका समुत्पादन किया हो। उफनते हुए महासिन्धुकी चंचल तरंगोंमें जिसने एक अनन्त प्रेरणाका दर्शन किया हो, किसीके गिरते हुए अश्रु प्रवाहमें जिसने महासागर देखा हो, किसीके श्वास-समूहमें जिसने उद्वेलित करने वाले मलयानिल वेगका अनुभव किया हो, सान्ध्य-लालिमा एवं नभ-नीलिमासे जिसका मानस-मराल चहक उठा हो, किसीके करुण-क्रन्दनसे जिसके शरीरमें एक अकथनीय स्पन्दन हुआ हो, यामिनी-कामिनी-सिन्दूर-बिन्दु-इन्दुकी सौवर्णी-किरणोंसे जिसके भाव गन्धका प्रसार हो गया हो, असंख्य ताराओंकी टोलियोंमें जिसने अगणित दीपावलिएँ कल्पित की हों, हरित शष्प-शासन जिसे एक नवीन स्फूर्तिदान करता हो, एक मधुर संगीतके तरल स्वरोंने जिसकी हृत्तन्त्रीके तारोंको झंकृत कर दिया हो, किसी करुण दृश्यके देखने या सुननेसे जिसे एक अनन्त वेदना होती हो, जो देश एवं जाति पर सर्वदा हुतात्मा होनेको लालायित रहे, जिसका मन सद्घन चिद्घन आनन्दघन परम कारुणिक अनंत शक्ति स्वरूप प्रभुके सम्मिलनके लिये तड़पता हो, वही प्राणी विशुद्ध-तया मानव शब्द द्वारा सम्बोधित करनेके योग्य है।

श्री आदिकवि बाल्मीकिजीने श्रीसीता माताके आंसुओंकी लड़ियोंमें उल्लसित महा जलनिधिकी प्रतनु तरंगोंका दर्शन किया था। श्री मर्य्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्रजीने श्री जानकीजीके सौजन्य-सौगन्ध्य सौकुमार्य-सान्द्र-प्रेममें अनिर्वचनीय परमानन्दका समास्वादन किया था और सती सीताने भी तो श्री राममें परिपूर्णका दर्शन कर मानवत्वकी युग युगान्तरों तक भी समाप्त न होने वाली संस्थापना की है।

कहनेका आशय यह है कि मानव अपनी अंगुलिकाओं के संकेत मात्रसे विश्वको नचा सकता है, खिला सकता है, बना और बचा सकता है। मानव अपने मार्ग में आने वाले बाधकोंको, विपत्तियोंको, शत्रुओंको अपने पैरोंके तलुओंसे कुचल सकता है। और विश्वकी सम्पूर्ण विजयश्रीको संसारके समस्त कल्याणोंको अपनी शिखाकी ग्रन्थिमें बांध सकता है।

निष्कर्ष यह कि विश्वकी सारी सम्पत्ति, सारी विजय, समस्त साधन, समस्त मंगल, मानवके चरणों में लोट जाते हैं। मानव अजर है, अमर है, और है आनंदमय प्रभुके विशेषतर परिपूर्णत्वका ज्वलंत प्रमाण। देव, दानव, यक्ष, राक्षस, गंधर्व, किन्नर, योगिनी, पिशाच, चाहे कोई भी हो यदि वह करुणा-कारण करुणावरुणालय प्रभुके माधुर्य्यका साक्षात्कार करना चाहे तो अपने स्थानकी समस्त सम्पत्का परित्याग कर भूलोक पर मानव-शरीरमें आना पड़ता है। यह है मानव एवं उसका महत्व।

अब रहा धर्म। धर्म यह शब्द पाणिनीय व्याकरणके अनुसार "धृञ्" धारणे धातुसे मन् प्रत्यय करने पर निष्पन्न होता है। सारस्वत व्यारणके अनुसार 'म' प्रत्यय

करनेसे धर्म शब्द सिद्ध होता है।

बहुतसे लोग धर्म शब्दके विशालतम अर्थको संकुचित करनेका विफल प्रयास करते रहते हैं। वे धर्म शब्दका संबंध केवलमात्र एक व्यक्ति विशेष या समाजसे स्थापित करना चाहते हैं, जैसे आर्य्य-समाज, ब्रह्मसमाज, जैन धर्म या बौद्धधर्म आदि आदि। वैसे कहीं तक हो भी सकता है किन्तु जहां मानवके साथ धर्म शब्दका प्रयोग होगा वहां केवल इतनेसे कार्य्य न चलेगा। जितना विस्तृत मानव शब्दका अभिप्राय है उतना ही धर्मका भी है। अतः जहां हम धर्म शब्दका सम्बन्ध एक व्यक्ति या एक समाजसे स्थापित करते हैं वहाँ यह भूल जाते हैं कि धर्मका जितना गहरा सम्बन्ध एक व्यक्ति या एक समाजसे है उतना ही सम्बन्ध विश्वभरके मानव समाजसे भी है।

वैसे तो धर्म शब्दका अर्थ इतना विशाल है कि यजन-याजनसे वेश्यागमन पर्यन्त समस्त कार्य धर्मके अन्दर ही समा जाते हैं। ऐसी समस्याके उपस्थित होने पर शास्त्रकारोंके अनेक मत भी असमंजसमें डाल देते हैं। अतः केवल दो सिद्धान्तोंके आधार पर धर्म शब्द का सुन्दर और सरल अर्थ स्पष्ट किया जा रहा है।

१—जिस कार्य्यके करनेमें कर्ता सुख शान्ति और संतोष, इन तीन बातोंका अनुभव करे, वह धर्म है।

एक व्यक्ति चोरी करता है तो क्या वह भी धर्म कहा जा सकेगा ? नहीं, क्योंकि जब चोर चोरी करेगा तो उसका मन-मानस अकस्मात् क्षुब्ध हो उठेगा, सुख शान्ति एवं संतोष का वह कदापि अनुभव कर नहीं सकता। यह मनो-वैज्ञानिक सिद्धान्त है।

२—शास्त्र विहित कर्म करना धर्म है।

अर्थात्—मानवका खाना, पीना, सोना, उठना, बैठना, चलना, फिरना, हंसना, रोना, पहिनना आदि आदि जितना भी कार्य-कलाप है वह सारा शास्त्रानुकूल सम्पादित होता रहे। यही तो मानवधर्म है।

खाना—खानेके आजकल अनेक पदार्थ हैं। किन्तु शास्त्र मांस, अण्डे और अन्य तामसिक पदार्थ भक्षणका निषेध कर रहे हैं। राजसिक, सुन्दर एवं स्वच्छ भोजन खाना यह भी धर्म है।

पीना—कहीं हम शास्त्र-प्रतिकूल सुरापानादि न करें अपितु भगवानके चरणामृतका पान करें।

सोना—सूर्योदय पर्यन्त लेटे न रहें, किन्तु ब्रह्म मुहूर्तमें जागकर नित्य कर्म करें।

उठना—कहीं ऊपर खड़े होते हुए किसी वस्तु को हानि न पहुँचे।

चलना—गजगतिसे न चलें, शास्त्रानुकूल नम्र होकर चलें।

हंसना—शास्त्र विरुद्ध हास न करें जिसे अट्टहास कहते हैं। या किसी निर्धन या अंगहीनको देखकर न खिलखिलाएं, अपितु किसी व्यक्तिकी उन्नति पर हँसें।

रोना—कुटुम्बमें किसीके मरने पर न रोएँ, क्योंकि "जातस्य हि ध्रुवं मृत्युः" यह निश्चित ही है, अपितु भगवान् का संस्मरण संकीर्तन करते हुए तल्लीन होकर गद्गद् होने से यदि एक आँसू भी गिरादें तो जीवन सफल हो जाय।

लिखनेका आशय यह है कि विश्वभरके मानवका एक ही धर्म है और वह धर्म वही है जिसमें धर्मीको शान्ति, सुख एवं सन्तोष, तीनों एकसाथ मिल जायें।



ब्राह्मण और शिक्षा

—श्री भास्करनाथ पण्डित बी० ए०, बी० टी०—

[लेखकके सभी विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं —सं०]

वैदिक वर्णाश्रम पद्धति के अनुसार ब्राह्मणका धर्म है कि विद्या प्राप्त करे और विद्याका प्रसार करे। प्रत्येक ब्राह्मण २५ वर्षकी आयु तक विद्यार्थी जीवनके नियमों का पालन करके पंडित बन जाता था। तत्पश्चात् वह शिक्षक बनकर प्राप्त की हुई विद्याको दूसरोंको प्रदान करता था। शिक्षकका पद बहुत ऊँचा था। यद्यपि इन ब्राह्मण शिक्षकोंके पास कांचन धन नहीं होता था परन्तु इनके पास संतोष-धन और विद्याधन इतना होता था

और समाजसे वे इतना आदर पाते थे कि उनके मनमें कांचन-धन इकट्ठा करनेका विचार तक न आता था। उनके शिष्य उनकी आज्ञाओंका पालन करना अपने लिये गौरव समझते थे। यदि कहा जाये कि शिक्षकको राजासे भी अधिक मान और आदरका स्थान प्राप्त था तो अत्युक्ति नहीं होगी।

तो प्रश्न उत्पन्न होता है कि आजकल शिक्षककी यह दीन हीन दशा क्यों है? बहुत सोचने और निरीक्षण करनेके पश्चात् मनुष्य इसी परिणाम पर पहुंचता है कि इसका मूलकारण शिक्षकवर्गकी अधोगति है। जबसे अब्राह्मण शिक्षक बनने लगे तभीसे शिक्षकके मान और आदरमें कमी होने लगी। आजकल शिक्षक वर्गमें अब्राह्मणोंका प्राबल्य है, इसलिये शिक्षकों और शिक्षाकी दशा शोचनीय हो गई है। यहाँ पर यह बात स्पष्ट करना आवश्यक है कि ब्राह्मणका अर्थ वे महांपुरुष हैं जिनमें ब्राह्मणके गुण हों और अब्राह्मणका अर्थ वे गये गुजरे मनुष्य है जिनमें ब्राह्मणके गुणोंका अभाव हो। ब्राह्मणके गुणोंका श्रीमद्भगवद्गीतामें इस प्रकार वर्णन किया गया है:—

शमो दमस्तपः शौचं क्षान्तिरार्जवमेव च।
ज्ञानंविज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्मस्वभावजम् ॥

कहनेका तात्पर्य यह है कि आजकलके शिक्षकोंमें ऊपर दिये गये गुणोंका अभाव है और कोई शिक्षक शिक्षक कहलानेका अधिकारी नहीं, जब तक यह गुण उसमें अधिक मात्रामें न हों, चाहे वह ब्राह्मण कुलमें भी जन्म पा चुका हो। इसी प्रकार कोई भी व्यक्ति शिक्षक बनने योग्य है जिसमें यह गुण हों चाहे वह ब्राह्मण कुलमें न उत्पन्न हुआ हो। जबसे इन गुणोंसे रहित लोगोंने शिक्षक विभागमें पदार्पण करना आरम्भ किया तभीसे विद्या और शिक्षकोंका अधःपतन होने लगा है।

आजकल भारत सरकार शिक्षा प्रणालीमें सुधार करनेका यत्न कर रही है। कमीशन बैठाये जाते हैं और वे रिपोर्टें तय्यार करते हैं परन्तु कोई सुधार सफल नहीं हो सकते जब तक शिक्षाके मूलाधार शिक्षकका सुधार न हो। जब तक अच्छे गुणों वाले व्यक्तियोंके लिये ही यह काम सीमित नहीं किया जाये, जब तक वेतन बढ़ाने आदिसे कोई विशेष लाभ नहीं हो सकता। कई बार चर्चा होती है कि जितने भी पढ़े लिखे मनुष्योंको काम नहीं मिल रहा उनको काम देनेके लिये स्कूल खोले जायें और उन्हें शिक्षक बनाया जाये, चाहे उनमें वे गुण हों या नहीं, जिनका एक शिक्षकमें होना अनिवार्य है। अत्यंत खेद और शोककी बात है कि जनसाधारणमें यह यथार्थतासे करोड़ों मील दूर अविचार है कि सभी दसवीं पास युवक या बी० ए० पास युवक शिक्षकका काम कर सकते हैं और वे भी जो शेष सभी विभागोंके लिये अयोग्य समझे गये हों। आवश्यकता इस बात की है कि जैसे सेना विभागमें मनोवैज्ञानिक परीक्षाके पश्चात् कमीशनसे सर्विसमें नियुक्ति की जाती है, वैसे ही शिक्षकोंकी नियुक्ति भी मनोवैज्ञानिक आदि परीक्षाओंके पश्चात् की जाय।

कहा जाता है कि उचित गुण वाले मनुष्योंकी कमी है। वास्तवमें इतनी कमी नहीं है जितना कहा जाता है। परन्तु शिक्षकोंकी नियुक्ति करने वाले अधिकारियोंमें प्रायः शिक्षकके गुणोंका अभाव है। उनकी आंखों पर एक चश्मा सा चढ़ा हुआ है जिसके फलस्वरूप वे उचित गुणों वाले मनुष्योंको शिक्षा विभागमें नहीं ले रहे हैं। जब तक शिक्षा विभागके अधिकारी ब्राह्मण (अर्थात् शिक्षक बनने योग्य मनुष्य) न हों तब तक शिक्षक भी ब्राह्मण नहीं हो सकते। आवश्यकता इस बातकी है कि शिक्षाका काम जितना शीघ्र हो सके फिरसे ब्राह्मणोंके हाथ चला जाना चाहिये। यह परिवर्तन समाज और सरकारके सहयोगसे ही हो सकता है।

एक बार शिक्षा विभागका पुनः ब्राह्मणीकरण किया जाये तो फिरसे शिक्षा और जीवन समन्वित हो जायेंगे। विद्यार्थियोंको केवल पुस्तकोंकी ही शिक्षा नहीं मिलेगी प्रत्युत उन्हें पूर्ण मनुष्य बनानेका प्रयत्न किया जायेगा। उनमें स्वतंत्र विचार और कर्म करने और तत्फलस्वरूप आत्मनिर्भरताके गुण आयेंगे। वे मिलजुलकर रहने और सहयोगसे सफलता प्राप्त करनेकी ओर प्रेरित होंगे। शिक्षकों तथा विद्यार्थियोंमें व्यक्तिगत सम्बन्ध गहरे हो जायेंगे और विद्यार्थियोंमें अनुशासनके अभावका नाम तक मिट जायेगा॥

वस्तुस्थिति क्या है ?

अथवा

आत्मनिवेदन

[श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज]

आप दर्पण देखते हैं पर क्या दर्पणको देखनेके लिये आप दर्पण देखते हैं ? नहीं, कदापि नहीं। अपना मुख देखनेके लिये आपको दर्पण देखना पड़ता है। अपना मुख देखनेमें महान् आनन्द प्राप्त होता है। अपना मुख देखनेसे भी अधिक अपने आनन्दका दर्शन अधिक आनन्द देता है। सबसे अधिक आनन्द अपने आपके दर्शनमें ही होता है। वह निरतिशय है। आत्मा अपने आप अगाध और अपार आनन्द-महासागर है। इस महासागरकी कोई उपमा नहीं। दर्पण जितना अधिक निर्मल होगा उतना ही अधिक निर्मल रूप दिखाई देगा। दर्शन रूपका ही होता है रूपीका नहीं। रूपी द्रष्टा है दृश्य नहीं। दर्पणमें मुख नहीं दीखता, मुखका प्रतिबिम्ब या आभास मात्र दीखता है। उस आभास मात्र वा प्रतिबिम्बको देखकर 'हमने अपना मुख देख लिया' ऐसा समझ लेते हैं और परम सन्तुष्ट हो बैठते हैं। बार-बार दर्पणको देखते हैं—पर दर्पणके लिए अथवा प्रतिबिम्बके लिये नहीं, अपने मुखके दर्शनके लिये ही देखते हैं। आत्म-मुख-दर्शनका आनन्द अपूर्व है। प्रतिबिम्बको बिना देखे यदि मुख दीख सकता तो हम कभी प्रतिबिम्ब न देखते, पर क्या करें हम परवश हैं; जब भी दीखता है प्रतिबिम्ब ही दीखता है और उसीसे सन्तोष कर लेते हैं। प्रतिबिम्ब भी दर्पणके बिना नहीं दीखता, इसीलिये दर्पणको हम देखते हैं तथा उसकी सार संवारसे रक्षा करते हैं, किसी भी मूल्य पर उसे अपने पास लाना चाहते हैं। दर्पण मुखके प्रतिबिम्बको दिखानेमें असमर्थ हो तो उसे हम अन्धा बुरा कहकर फेंक देते हैं। यदि वह किसी उपायसे प्रतिबिम्ब दिखानेमें समर्थ हो सकता हो तो उसे भी करनेके लिये हम सन्नद्ध होते हैं और करना उचित भी समझते हैं। कुछ भी हो आत्म-दर्शन ही परमानन्द है

आत्मा परिपूर्ण शक्ति-स्वरूप है। इसीलिये यह स्वयं दर्पण है और अपने आपमें स्व और स्वीय अथवा द्रष्टा और दृश्य रूपोंमें देखता, दीखता और दिखाता है। परम कल्याणरूप यह आत्मा परशिव है। जिस कारण यह अपने आपको परशिव देखता है, बनाता है, जानता है, रखना चाहता है, रहना चाहता है, अथवा निरन्तर रहता है, वही इसका अपना रूप शक्ति है। यही परशिवा अनन्त-कोटि जगतोंकी अम्बिका है। यह परमशिवा परशिव-दर्पण है। दर्पणमें प्रतिबिम्ब ही झलकता है। इसकी एक विशेष पहचान है—बिम्बका दक्षिण प्रतिबिम्बमें वाम और बिम्बका वाम प्रतिबिम्बका दक्षिण भासता है। दूसरी दृष्टिसे विचार किया जाय तो ऐसा कह सकते हैं द्रष्टाको द्रष्टाका ही आभास होता है और उस आभासको ही दृश्य नाम दिया गया है। द्रष्टाके अतिरिक्त दृश्य कोई सत्ता ही नहीं रखता। तब हम स्पष्ट कह सकते हैं—आत्मा आत्म-दर्पणमें शिव रूप होकर शिव रूपको और शक्तिरूप होकर शक्तिरूपको निहारता है। शिवाभास शक्ति है और शक्त्याभास शिव है। हैं दोनों ही काल्पनिक। सारा ही आत्माकी कल्पना शक्तिका चमत्कार है। यह आत्मा आत्म-कलासे अपने आपमें स्व और स्वीय पर और परकीय अनन्त भावोंको उल्लासित करता और उनको विलापित करता हुआ निरन्तर आत्मानन्द महासागरमें आत्मानन्द-महामृत पीता रहता है। इस आत्माके अतिरिक्तकी शङ्का ही नहीं होती यह वस्तुस्थिति है, अतः इसी आत्मरूपको हमारा नित्य प्रणाम है। पाठकोंसे हमारा यही साञ्जलिबन्ध—

शिव ! ब्रह्मन्नात्मन्सकलमपि विश्वं स्वकलया
जनुःसत्ताऽपायान्हृदि महति नित्यं प्रणयते।
प्रसन्न ! स्वच्छन्द ! स्वरमणकलाकोविद ! गुरो !
नमो मह्यं कस्मैचन हृदयनाथाय भवते॥ (अ.वा.)

निवेदन है।

क्या पुराणोंकी बातोंको गप्प बताना उचित है?

एक आर्य सन्यासीकी ज़बानी अपनी बीती सत्य कहानी

[ले०—भक्त श्रीरामशरणदासजी]

पुराणोंकी बातें अक्षर-अक्षर सत्य हैं, यह आज मानों या कल मानों, मानना अवश्य ही पड़ेगा। बिना पुराणोंकी बातों में विश्वास किये और बिना पुराणोंकी शरणमें आये हमारा कल्याण कदापि नहीं होगा, इसमें तनिक भी संदेह नहीं है। आज बहुतसे मनुष्योंको देखा गया है कि जब वह पुराणोंमें मंत्र शक्तिके चमत्कारकी बातें पढ़ते हैं, भगवान् द्वारा भक्तके कार्य सिद्ध होनेकी कथायें पढ़ते हैं, विलक्षण पशु-पक्षियोंकी बातें पढ़ते हैं तो वह सहसा ठट्ठा मार कर हँसा करते हैं और एक दम पुराणोंको गप्प बताने लग जाते हैं। पाठकोंसे हमारी करबद्ध प्रार्थना है कि वह इस लेखको जरा ध्यानसे पढ़नेकी कृपा करें और फिर इन्हें पुराणोंसे मिलानेकी कृपा करें तथा फिर देखें कि क्या वास्तव में पुराण गप्प है?

क्या मंत्रमें शक्ति नहीं होती?

हमने अपने देशके जितने भी बड़े-बड़े प्रसिद्ध पुराने सनातनधर्मी वैद्योंको देखा है या उच्च कोटिके जड़ी-बूटीके काम करने वाले सन्त महात्माओंका दर्शन किया है तो उन्हें रोगीको औषधि देते समय कुछ मन ही मनमें बड़बड़ाते, कुछ कहते, मंत्र आदि पढ़ते हुये देखा है। और जहां यह देखा कि बड़े पुराने रोगीको जिन्हें बड़ेसे बड़े डाक्टरने जवाब दे दिया और जिनके बचनेकी भी कोई आशा नहीं रही, वहाँ यह भी देखा है कि इन सीधे साधे पूज्य ब्राह्मण वैद्योंकी, साधु महात्माओंकी जड़ी बूटी और उनके औषधिके देते समय आंख मूंदकर पढ़े गये मंत्रने ऐसा जादूका-सा चमत्कार दिखाया है कि जिन्हें देखकर बड़े-बड़े घोर नास्तिकोंकी भी बोलती बंद हो गई और अन्तमें उन्हें भी सनातनधर्मका लोहा मानना पड़ा है। औषधि शरीर है और मंत्र प्राण है, जिस प्रकार प्राणके बिना २॥ मनका शरीर मुर्दा है बेकार है इसी प्रकार यदि जंगलकी शास्त्रोक्त जड़ी बूटी आदि औषधिके साथ-साथ मंत्रका भी सहारा लिया जाय तो वह ऐसा चमत्कार दिखाता है कि जिसे देखकर दंग रह जाना पड़ता है। औषधियोंमें मंत्रके द्वारा एक दिव्यता आ जाती है, उसमें अद्भुत विलक्षण शक्ति पैदा हो जाती है और उसमें देवताकी, प्रभु भक्तिकी शक्ति प्रवेश कर जाती है जो रोग शोक सबको जड़ मूलसे मिटा डालती है। जो काम सैकड़ों वर्षोंमें नहीं हो पाता, जो काम हजारों मनुष्योंके द्वारा नहीं हो पाता वह प्रभुकी दयासे क्षण मात्रमें हो जाता है। भला जिस श्रीराम-मंत्रसे संत श्रीतुलसीदास जी महाराजने मुर्देको जिन्दा कर दिया और जिस श्रीकृष्ण नामके बल पर संत ज्ञानेश्वरने भैंसेमें वेद-मंत्र बोलनेकी शक्ति पैदा कर दी, भला वह नाम, वह मंत्र साधारण रोग दूर नहीं कर सकता यह कैसे हो सकता है? औषधियोंमें यदि अद्भुत शक्ति पैदा करनी है, इनमें दिव्यता लानी है तो प्रभु नामका, मंत्रका सहारा अवश्य ही लेना पड़ेगा। सनातनधर्मका यह लोहा गोभक्षक मुसलमानों तकको भी मानना पड़ा है, और हमने कितने ही मौलवियोंको मुल्लाओं को, हकीमोंको देखा है कि जब दवाई देने लगते हैं तो वह भी अल्लाहका नाम लेते हैं और मनमें कुछ गुनगुनाते हैं, अपना मंत्र आदि पढ़ते हैं, फूंके मारते हैं। सभीको यह सर झुका कर मानना पड़ता है कि चाहे लाख प्रयत्न करो प्रभुके बिना पत्ता तक नहीं हिल सकता और यदि प्रभुकी कृपा हो गई तो फिर कौनसा ऐसा कार्य है कि जो वह बन नहीं सकता? आजके पाश्चात्य सभ्यताके रंगमें रंगे मन-चले बाबू लोग अथवा नास्तिक लोग जब किसीको यंत्र-मंत्र करते देखते हैं तो वह सहसा ठट्ठा मार कर हँसा करते हैं और इन बातोंको पाखण्ड बताया करते हैं, व्यर्थ ही बतलाया करते हैं और कहा करते हैं कि यह सब दकियानूसी विचार हैं और इन्हीं बातोंसे देशका सत्यानाश हुआ है, आदि जो जीमें आया बका करते हैं। भगवान्की बड़ी ही विचित्र लीला है कि जिन बातोंका जो कभी मज़ाक

उड़ाया करते हैं, कभी-कभी ऐसा देखनेमें आता है कि उन्हें भी अन्तमें उन्हीं बातोंको अक्षर-अक्षर सत्य मानना पड़ जाता है और नत-मस्तक हो जाना पड़ता है।

आँखों देखी सत्य घटना

मैं कट्टर सनातनधर्मी विचारोंका हूँ। सनातनधर्मके सभी धर्माचार्य संत महात्मा मेरे स्थान पर कृपा कर पधारा करते हैं। अभी अक्टूबर सन् १९५४ में पिलखुवा हमारे स्थान पर विश्वविख्यात आर्य नेता व आर्य-सन्यासी महात्मा श्री आनन्दस्वामी सरस्वतीजी महाराज पधारे थे। आप आर्यजगत्के माने हुये पुराने नेता हैं और आपका पहिला नाम महाशय खुशहालचन्द 'खुर्सन्द' सम्पादक 'मिलाप' हैं। आपने जहां योग सीखा है वहां आपको औषधियोंका भी पूर्ण ज्ञान है। आप हमारे यहां पर तीन चार दिन ठहरे थे। हमने देखा कि आप अपने साथ देहलीसे पेटीमें शीसियोंमें भरी हुई सब प्रकारकी औषधियां लाये थे, जो जंगलकी जड़ी बूंटियोंसे बनाई गईं थीं। आपने सैंकड़ों रोगियोंको मुफ्त औषधियां बांटी, एक पाई भी किसीसे नहीं ली। हमने अपनी आंखोंसे देखा कि जो भी रोगी आपके पास आया आपने उसका हाथ अथवा पेट देखकर जब उस रोगी के लिये अपनी पेटीमें से औषधि निकाल कर पुड़ियां बांधी तो पहिले उस पुड़ियाको आपने अपने दोनों हाथोंमें रक्खी और अपनी आंखें बंद की तथा मन ही मन कुछ देर मंत्र पढ़ते रहे, कुछ गुनगुनाते रहे, तब बादमें जाकर उसे वह पुड़िया दी और खानेकी विधि बतलाई। एक सुप्रसिद्ध आर्य सन्यासीके द्वारा इस प्रकार मंत्र शक्तिमें विश्वास करते देखकर हमें बड़ी प्रसन्नता हुई और आश्चर्य चकित होना पड़ा। आपने इतना ही नहीं जिसे भी औषधि दी पहिले मंत्र पढ़कर दी और सैंकड़ोंको आपने औषधिके साथ-साथ मंत्र जप करनेकी आज्ञा दी। इतना ही नहीं मंत्र लिख कर भी अपने हाथसे दिये और बताया कि इस मंत्रके जपनेसे तुम्हारा यह सब रोग अवश्य ही जाता रहेगा। इस सम्बन्ध के दो चार आंखों देखें प्रमाण यहाँ पर दिये जाते हैं।

१—गायत्रीमंत्रके जपका उपदेश

एक रोगी—महाराजजी! मैं रोगी हूँ, बीमार हूं, मुझे क्या करना चाहिये? मेरा रोग कैसे दूर हो?

स्वामीजी—मैं जो तुम्हें रोग है समझ गया हूं, मैं तुम्हें औषधि भी देता हूँ और तुम्हें बताता हूं कि तुम हमारे कहनेसे गायत्रीमंत्रका जप करो या ॐ ॐ जपो तुम्हारा यह औषधि खानेसे और गायत्री मंत्रके जपसे सब रोग जाता रहेगा। तुम अच्छे हो जाओगे।

रोगी—बहुत अच्छा महाराज आप गायत्रीमंत्र लिख दीजिये मैं अवश्य जपूंगा।

स्वामीजी—लीजिये मैं कागज पर लिख देता हूं इसे सवालाख जपो तो बड़ा लाभ होगा और रोग बिल्कुल जाता रहेगा।

रोगी—बहुत अच्छा महाराज! मैं अवश्य ही जपूंगा।

२—ॐ में या राममें कोई अन्तर नहीं

एक दूसरा रोगी—महाराजजी! मैं बीमार रहता हूं, क्या करूं?

स्वामीजी—अच्छा हमसे औषधि ले जाओ, इसे खाओ और साथ ही ॐ ॐ जपो अच्छे हो जाओगे।

रोगी—महाराज! मैं राम-राम जपता हूं यह कैसा है?

स्वामीजी—अरे भाई! ॐ में या राममें कोई अन्तर थोड़े ही है, जो राम है सोही ॐ है तुम राम-राम जपते हो तो तुम राम-राम जपो एक ही बात है।

रोगी—महाराज! चाहे कृष्ण कृष्ण जपें?

स्वामीजी—कुछ भी जपो पर अपना इष्ट एक बनाओ नित्य प्रति इष्ट बदलते मत रहो। एक को इष्ट बना लोगे तो बेड़ा पार हो जायगा।

३—महामृत्युञ्जय मंत्रके जपका उपदेश

लालाजी—महाराजजी! मैं बहुत दिनोंसे बीमार हूँ, बहुत इलाज कराया फायदा नहीं हुआ क्या करूं?

स्वामीजी—हम तुम्हें औषधि देंगे उसका सेवन करो और जो मंत्र हम तुम्हें बतायें उसका तुम जप करो ठीक हो जाओगे।

लालाजी—महाराजजी! औषधि तो आप जो भी मुझे देंगे उसे मैं खालूंगा, इसमें तो कोई ऐसी बात नहीं है, पर मुझसे मंत्रका जप शायद नहीं हो सकेगा कारण कि मैं जब भी कभी किसीके बताये अनुसार जप या कोई अन्य शुभ कार्य करता हूं तो न जाने क्यों वह पूरा नहीं होता, कोई न कोई विघ्न पड़ जाता है, क्या करना चाहिये?

स्वामी जी—हम एक मंत्र बताते हैं तुम इस मंत्रको जपो और यदि तुम इस मंत्रको स्वयं न जप सको तो अपने किसी ब्राह्मणसे कह दो, वह इस मंत्रको जप देगा, तुम्हें इससे बड़ा ही लाभ होगा ।

लालाजी—बहुत अच्छा महाराज ! मंत्र बता दीजिये मैं पंडितजीसे जपवा दूंगा, बड़ी कृपा होगी ।

स्वामीजी—लीजिये मंत्र यह है—

इस मन्त्रका पवित्र होकर और आसन पर बैठकर जप करो, बड़ा लाभ होगा ।

लाला जी—बहुत अच्छा महाराज ।

४—मंत्र जपके द्वारा मेरा पुत्र फांसी की सजासे कैसे बचा ?

एक रोगी—महाराज जी ! मैं बीमार हूं, मैं क्या करूँ ?

स्वामीजी—तुम भी यह मंत्र जो हमने उन्हें बताया है इसे लिख लो और इसका जप करो तुम्हारा रोग भी जाता रहेगा ।

प्रश्न—महाराजजी ! क्या यह मंत्र रोग दूर कर देगा ?

स्वामीजी—अरे, रोग क्या इस मंत्रमें बड़ी विलक्षण शक्ति है और यह बड़ीसे बड़ी घोर विपत्तियोंसे भी छुटकारा दिला देता है, और तो क्या फांसीके तख्ते परसे भी साफ बचा देता है, हमने इसका प्रत्यक्ष प्रमाण अपनी आंखों से देखा है । मेरा लड़का रणवीर जो अब मिलापका सम्पादक है एक बार उसे सेशनकोर्टसे फांसीकी सजा का आदेश हो गया । मैं रणवीरसे जेलमें जाकर मिला, और मैंने जेलमें रणवीरसे कहा कि "रणवीर ! तू मेरे कहनेके अनुसार सवा लाख श्रीमहामृत्युञ्जय मंत्रका जपकर तो तू अवश्य ही फांसीकी सजासे साफ छूट जायगा ।" रणवीरने मेरे कहनेके अनुसार इस मंत्रका जप करना प्रारम्भ कर दिया । बड़े-बड़े वकील बड़े-बड़े बैरिस्टर सब यही कहते थे कि यह फांसीकी सजासे नहीं छूटेगा, इसे अवश्य ही फांसी हो जायगी, परन्तु मैं सबसे यही कहता था कि यह अवश्य ही छूट जायगा, कारण कि हमने यहांकी अदालतके अतिरिक्त एक बहुत बड़ी, सबसे बड़ी अदालतोंकी भी अदालतमें अपील कर रक्खी है, जिसमें हमारी अवश्य ही सुनवाई होगी । मुझे इस मंत्र पर पूरा पूरा विश्वास था और यह मेरा विश्वास निकला भी पूरा सत्य । जिस दिन १। लाख इस मंत्रका जप पूरा हुआ ठीक उसी दिन मेरा लड़का रणवीर फांसीकी सजासे बिल्कुल साफ छूट गया । इस प्रकार इस मंत्रने मेरे लड़केकी फांसी की सजासे रक्षा कर दी । जो मंत्र भला फाँसीकी सजा से बचा सकता है, वह मंत्र भला तुम्हारे इस साधारण रोग को नहीं खो सकता, यह कैसे हो सकता है ? विश्वास और श्रद्धाके साथ इस मंत्रका जप करो तो तुम्हारा सब रोग शोक जाता रहेगा और यह सब बड़ीसे बड़ी विपत्तियों से तुम्हारी रक्षा भी करेगा ।

५—मंत्र माला पर जपने का उपदेश

प्रश्न—महाराज जी ! १। लाख मंत्र जपें पर गिनती के लिये क्या करें ? हमें यह कैसे मालूम हो कि हमारा १। लाख जप पूरा हो गया है ?

स्वामी जी—माला पर मंत्र जपना होगा और माला की गिनती से मालूम हो जायगा कि १। लाख जप पूरा हो गया है या अभी नहीं हुआ है ।

६—यज्ञोपवीत अवश्य कराओ

एक विद्यार्थी—महाराज जी ! हमारा रोग भी दूर हो और हमारी बुद्धि भी तीव्र हो ऐसा उपाय बताओ ।

स्वामी जी—मेरे बच्चे ! तुम अपने जीवनमें उन्नति करना चाहते हो तो तुम गायत्रीका जप करो गायत्री माता की कृपासे तुम्हारा रोग भी जाता रहेगा तथा तुम्हें हर काम में इससे सफलता भी प्राप्त होगी और तुम्हारी बुद्धि भी तीव्र हो जायगी । मैंने अपने जीवनमें आजतक जो उन्नति की है यह सब गायत्री माताकी कृपाका ही फल है ।

विद्यार्थी—महाराजजी ! हम गायत्री तो जपना चाहते हैं, परन्तु कुछ लोग कहते हैं कि तुम गायत्री तब जप सकते हो कि जब तुम्हारा यज्ञोपवीत हो जाय । जनेऊ हो जाय, इतने नहीं जप सकते और नहीं तो बिना यज्ञोपवीत हुए गायत्री जपनेसे पाप लगता है, तो हमें इसमें क्या करना चाहिए ?

स्वामीजी—बेटे ! तुम्हें चाहिए कि तुम अपना यज्ञोपवीत कराओ और अपना यज्ञोपवीत करा कर तब तुम खूब गायत्रीका जप करो, इसमें तुम्हें क्या आपत्ति है ? तुम

वैश्य होकर, हिन्दू होकर अपना यज्ञोपवीत नहीं कराते यह तो बड़ी लज्जाकी बात है।

विद्यार्थी—नहीं महाराज जी ! जो अपना यज्ञोपवीत नहीं करवाना चाहता हो तो क्या करें ?

स्वामीजी—जिसको भगवान् श्रीरामकृष्णकी सोसायटी में शामिल होना है। उसे तो अपना यज्ञोपवीत अवश्य कराना ही होगा, और जिसे भगवान् श्रीरामकृष्णकी सोसायटीमें शामिल नहीं होना है जिसे नास्तिक सोसायटीमें शामिल होना है वह अपना यज्ञोपवीत भले ही न कराये, शूद्र बना रहे, मना कौन करता है ? यदि अपना उत्थान चाहते हो तो बस गायत्री माताकी शरण लो और नित्य-प्रति गायत्री माताकी गोदमें बैठकर अमृतपान करो।

७—गोवध होना मंत्र सिद्धिमें बाधक है

प्रश्न—महाराजजी ! पहिलेकी भांति आज मंत्र जपसे विशेष लाभ क्यों नहीं होता ?

स्वामीजी—कई ऐसे मंत्र हैं कि जिनके जपनेसे देशका बड़ा कल्याण हो सकता है, परन्तु वह ऐसे मंत्र हैं कि वह वहीं पर जपे जा सकते हैं कि जहांकी भूमि बड़ी पवित्र हो और जहाँ तीन-तीन कोषको इधर उधरकी भूमिमें कभी गोवध न हुआ हो। आजकल सब जगह पर गोवध होने से भूमि भी पवित्र नहीं रही है और इसीलिए आज मंत्र सिद्ध नहीं होते, तथा योगमें भी पर्याप्त सफलता नहीं मिलती। गोवधसे हमारे देशको हमारे धर्मको बड़ी भारी हानि पहुँची है, यह जितनी जल्दसे जल्द बन्द हो उतना ही अच्छा है।

८. क्या एकादशीका व्रत रखना पाखंड है ?

आज जब किसी सनातमधर्मीको पाश्चात्य सभ्यताके रंग में रंगे बीड़ी सिगरेट पीने वाले पथभ्रष्ट बाबू लोगों या कांग्रेसी-आर्य-समाजी लोग एकादशी, पूर्णिमा, अमावस्या आदि व्रत रखते देखते हैं तो सहसा ठट्ठा मारकर हँसा करते हैं और उन्हें पागल, मूर्ख, पाखंडी बताते हैं, दकियानूसी आदि न जाने क्या क्या बताकर बका करते हैं ? यह अपनी सारी जिन्दगी पशुओंकी भांति खाने पीनेमें ही व्यतीत कर देते हैं और अपने जीवन का एक मात्र उद्देश्य दिन रात खाना, मुंह चलाते रहना और जो चाहे सो बकना बस यही समझते हैं। प्रातः से सायं तक खाने पीनेमें ही इनका जीवन समाप्त हो जाता है, व्रत उपवास करना और प्रभु-गुणगान कर आत्मोन्नति करना तो यह जानते ही नहीं और जो ऐसा करते हैं उन्हें यह मूर्ख बतानेमें अपनी शान मानते हैं। पहले भारतका बच्चा-बच्चा एकादशी व्रत रखा करता था और एकादशीके दिन अन्न खाना पाप मानता था। यहीं तक नहीं उदयपुर मेवाड़की ओर तो आज भी जहां वैष्णव एकादशीका व्रत करते हैं वहाँ मंदिरमें भगवान्के घोड़ों तकको उपवास रखवाया जाता है और रात्री भर सब मिल कर कथा कीर्तनमें निमग्न रहते हैं। और तो और कई बार कुत्तोंके भी व्रत रखनेकी बात सुनी गई इससे तो प्रतीत होता है कि इन आजके मनुष्योंसे तो यह कुत्ते ही लाख गुणा अच्छे हैं। अब हम पाठकोंके सामने महात्मा आनन्दस्वामी सरस्वतीजी महाराजकी बताई कुत्तेके एकादशी व्रत रखनेकी सत्य घटना सामने रखते हैं, जिससे ज्ञात होगा कि सनातनधर्मकी क्या महत्ता है और कुत्ते तक सनातन धर्मकी बात माननेसे नहीं चूकते एवं सनातनधर्मके अनुसार एकादशीका व्रत रख कर अपना कल्याण करते हैं, तथा सनातनधर्म ही सच्चा ईश्वरीय धर्म है यह सिद्ध करते हैं।

९. एकादशीका व्रत रखने वाला एक अद्भुत कुत्ता

प्रश्न—महाराजजी ! यह एक अखबारका कटिंग है, इसे कृपा करके देखिए इसमें लिखा है कि गोहाटीमें एक सरकारी अफसरके पास भोलू नामका कुत्ता है जो उपवास रखता है। कुत्तेके मालिकका कहना है कि भोलूमें कुछ ऐसी विचित्र शक्ति है कि वह प्रति पूर्णिमा और एकादशी तथा अमावस्या को खाना नहीं खाता, व्रत रखता है, उपवास रखता है। कुटुम्बके लोग इन पूर्णिमा, एकादशी, अमावस्याके दिनोंको चाहे भले ही भूल जायें पर यह भोलू कुत्ता कभी भी नहीं भूलता और इन दिनोंमें वह बिलकुल भोजन नहीं करता व्रत उपवास रखता है। इसे देख कर सभी आश्चर्य करते हैं और दांतों तले अंगुली दबाते हैं।

आनंद स्वामीजी—यह बात गप्प नहीं है, झूंठ नहीं है, बल्कि अक्षर-अक्षर सत्य है। मैंने स्वयं अपनी आँखोंसे

कुत्तेको एकादशी व्रत रखते देखा है। यह एक अपनी आंखों देखी सत्य घटना मैं तुम्हें सुनाता हूँ, ध्यानसे सुनिये—देहरादूनमें एक तपोवन आश्रम है जिसे श्री गुरुमुखसिंहजी ने बनाया है। इसी देहरादूनके तपोवन आश्रममें एक कुत्ता है कि जो हर एक एकादशीके दिन व्रत रखता है, उपवास रखता है। वह कुत्ता नालापानी निवासी ठाकुर श्रीरामसिंहजी का है जो एकादशीके दिन व्रत रखता है। और भोजन नहीं करता है। और यदि एकादशीके दिन इस कुत्तेके सामने रोटी डाली जाती है तो वह उस दिन एकादशी होनेके कारण रोटी खाता नहीं एकदम पीछे हट जाता है और यदि उसके सामने रोटी डालकर उसे रोटी खानेके लिये वाध्य किया जाता है कि इसे खाले तो वह वाध्य किए जाने पर भी वह रोटीको खायेगा बिल्कुल नहीं, वह रोटीको अपने मुंहसे उठाकर एक ओर किसी वृक्षके नीचे छुपा आता है और उस रोटीके ऊपर पत्थर आदि कुछ रख कर उसे ढक आता है कि जिससे कोई रोटीको देखे नहीं तथा ले नहीं और दूसरे दिन द्वादशीको वहां पर व्रत खुलने पर जाता है और फिर अपनी उस छुपाई हुई रोटीको निकाल कर खा लेता है। यह देख कर सभीको बड़ा आश्चर्य होता है। उसे एकादशी के दिनका कि आजका दिन एकादशीका दिन है यह कैसे पता लग जाता है, उसे यह कौन बता जाता है यह तो बस भगवान् ही जानता है और कोई क्या बता सकता है। एक ही एकादशीके दिन नहीं कितनी एकादशीके दिन उस कुत्ते को उपवास करते देखा गया है। तब कर्मगतिके अनुसार ही यह अनुमान लगाया जाता है कि किसी पिछले जन्ममें यह कोई ऐसा मनुष्य था जो पिछले जन्ममें भी वह एकादशीका व्रत उपवास रखता था परन्तु किसी अपराध या किसी कुकर्मके कारण उसे अब इस जन्ममें भी कुत्तेका चोला धारण करना पड़ा। परन्तु कुत्तेके इस चोलेमें भी सूक्ष्म शरीर तो पहलेका ही है जिस पर एकादशीके व्रत उपवास रखनेका संस्कार पड़ा हुआ है, वही संस्कार सूक्ष्म शरीर कुत्तेमें भी जाग्रत हो जाता है। पर यह वास्तवमें आश्चर्य है कि आज ही एकादशी है इसका उसे कैसे मालूम पड़ जाता है और उसे कौन बता जाता है? यह कुत्ता जहां एकादशीको व्रत उपवास रखता है, इस कुत्तेकी एक और भी विशेषता है कि यह कुत्ता कभी भूल कर भी किसी भी जानवरका मांस नहीं खाता और जब इसके सामने कभी मांस डाला जाता है तो वह मांस खाता नहीं, अपना मुंह हटा लेता है। जिस प्रकार अन्य कुत्ते मांस खाते हैं यह मांस बिल्कुल नहीं खाता। यह सब क्या बात है इसे तो भगवान् ही जानते हैं। यह सब हमारी आंखों देखी हुई सत्य घटना है।

देखो पाठकों! आर्य सन्यासीने कुत्तेके एकादशी व्रत रखनेकी कैसी आश्चर्यजनक सत्य घटना सुनाई है, जिसे सुनकर चकित होना पड़ता है। ऐसी ही बातें जब पुराणोंमें आती हैं तो लोग उन्हें गप्प बताने लगते हैं। हमने यह घटना कहाँ तक सत्य है यह जाननेके लिये और उन एकादशीका व्रत रखने वाले अद्भुत विलक्षण पुण्यात्मा कुत्तेका फोटो प्राप्त करनेके लिए देहरादून रहने वाले अपने भतीजे बाबू सीताराम गोयल बी. काम. डिस्ट्रिक्ट एकाउण्टेण्टको पत्र लिखा था जिसमें उनका उत्तर आया कि—'चाचाजी, मैं आश्रममें गया मालूम किया तो वह कुत्ता जो एकादशीका व्रत रखता था उसे किसी बाघने खा लिया है, अब इस संसारमें नहीं है, घटना सत्य है।' क्या इस अद्भुत घटनासे शिक्षा ले, हिन्दू मात्र एकादशीका व्रत रखने और मांस मछलीका परित्याग करनेका निश्चय नहीं करेंगे? यदि नहीं करेंगे तो धिक्कार है, शतवार धिक्कार है, लाख बार धिक्कार है हमारे इस मनुष्य जन्मको। हमसे तो यह नीच कहा जाने वाला श्वान कुत्ता ही लाख गुणा अच्छा है जो दिन रात झूठ, दगाबाजीसे बचकर, माँस मछलीसे बच कर, रूखा सूखा टुकड़ा खाकर और एकादशीका व्रत रखकर अपना जन्म सफल करता है और भारतमाताकी शानमें बट्टा नहीं लगाता तथा अपना लोक परलोक भी नहीं बिगाड़ता। याद रखो कि हमें यह मनुष्य जन्म खाली खाने पीने, दूसरोंको सतानेके लिये, विषय भोगोंके लिये ही नहीं मिला है। इसका उद्देश्य कुछ दूसरा ही है, जिसे कलिपावनावतार गोस्वामी श्रीतुलसीदासजी महाराज बतलाते हैं—

"यह तनकर फल विषय न भाई।
भजिये राम सब काम विहाई॥"

१०. वेद भगवान्‌की वाणी हमारे लिए पत्थरकी लकीर है

आजके यह उद्दण्ड धर्मद्रोही नेता, लीडर बघारा करते

हैं कि सनातनधर्मी लकीरके फकीर हैं, जो कुछ ऋषियोंने लिख दिया अंधविश्वासी होकर मानने लगे, यह ठीक नहीं है समय के अनुसार चलना चाहिये और जो हम कहें वह करना चाहिये । इस सम्बन्धमें महात्मा आनन्द स्वामीजी महाराज के विचार सुनिये, वह क्या कहते हैं ?

प्रश्न—महाराजजी ! आज देशमें ब्रिटिश गवर्नमेण्टके राज्यसे भी बढ़कर कई गुणा गोबध हो रहा है और भारतके प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू स्पष्ट घोषणा करके कह रहे हैं कि मैं देशमें गोवध बंद नहीं होने दूंगा और लंगड़े लूले गाय बैल देशके लिये भार हैं इनसे बीमारी फैलती है और हिन्दुओंमें ऐसे जजबात पैदा करने चाहियें कि जो वह गोमाँस खाने लगें। क्या यह पापपूर्ण बातें कहना ठीक है ? यह देशका दुर्भाग्य नहीं है कि जो भारतको ऐसा घोर नास्तिक प्रधानमन्त्री मिला ?

स्वामीजी—हमारे वेद भगवान्ने गो-हत्यारोंको, गौको मारने वालोंको शीशेकी गोलीसे उड़ा देनेका आदेश दिया है । और साथ ही यजुर्वेदके २३ वें अध्यायमें यह बताया है कि इस संसारमें गौके समान और कोई भी वस्तु नहीं है । और वेदमें गायकी रक्षाके लिये हर प्रकारके बलिदान देने का आदेश है । क्योंकि गायके ही द्वारा भारतवासियोंके सारे कार्य चलते थे । यज्ञके लिये घी चाहिये वह भी गायसे मिलता था । अतिथिकी सेवा करनी है वह भी गायके दूधसे होती थी । परिवारकी पालना करनी है तो वह भी गायके दूध, घी, मक्खन तथा छाछ इत्यादिसे तथा गायके पुत्र बैलकी कमाईसे होती थी इसलिये गृह्यसूत्रोंमें हर गृहस्थीको यह आज्ञा दी गई थी कि वह न्यूनसे न्यून तीन दूध देने वाली गायें अपने घरमें अवश्य ही रखें । एक यज्ञके लिए और दूसरी अतिथि सेवाके लिये और तीसरी अपने परिवारकी रक्षाके लिये तीन तो इस प्रकार अवश्य ही अपने यहां रखनी चाहियें । वेद भगवान् कहते हैं 'ऐ गौवों ! तुम्हारे घी दूधमें क्या कौतुक है कि तुम दुर्बलको बलवान् बना देती हो और तुम कुरूपको सुरूप बना देती हो । तुम्हारी मीठी बोलियां जिन घरोंमें बोली जाती हैं वहां पर उन घरोंमें स्वर्ग-सा आनन्द रहा करता है' यह हमारे वेद भगवान्की वाणी है । हम वेद भगवान्के आदेश पर चलने वाले वेदभक्त हैं और वेद भगवान्की वाणी वेद भगवान्की लकीर हमारे लिए पत्थरकी लकीर है । उसके सामने न राज्य सत्ता, न आर्थिक समस्या, न स्वराज्य और न ही संसारका कोई और वैभव ठहर सकता है । हमारे लिए एकमात्र वेद वाक्य मान्य हैं, अतएव यदि वेदानुयायी ये मांग करते हैं कि देशमें गोहत्या बन्द होनी चाहिये तो देशके राज्य प्रबन्धकोंका यह परम कर्तव्य हो जाता है कि वह गोहत्याको, गोवधको शीघ्रसे शीघ्र ही एकदम बंद कर दें । गोहत्यासे बढ़ कर कोई और दूसरा पाप नहीं है यह शीघ्र ही मिटना चाहिये । भारतसे गोमांस विदेशोंको जाय इससे बढ़ करके घोर दुःखकी बात और क्या होगी ? वेद भगवान्की वाणीके सामने बड़ेसे बड़े नेता की बात का कोई मूल्य नहीं है, वेदभगवान्की वाणी ही हमारे लिये सब कुछ है ।

११. सायन्स वाले जिसे देखनेमें असमर्थ हैं उसे योगी देखता है

प्रश्न—क्या सायन्ससे बढ़कर भी योग है ?

स्वामीजी—योगके सामने इस आधुनिक सायन्सका कोई मूल्य नहीं है । इस शरीरमें ७२ करोड़ ७२ लाख १० हजार २ सौ एक नाड़ियां हैं, इसे भला आजके सायन्स वाले कैसे देख सकते हैं ? पर योगियोंने अपने योगके द्वारा यह सब देख लिया था, योग ही पूर्ण है इसके सामने आज का यह सायन्स क्या मूल्य रखता है ?

पाठकों हमने आपके सामने विश्वविख्यात आर्य-सन्यासीके ये विचार रक्खे हैं । इसमें हो सकता है कुछ गलती रह गई हो, उसके लिए हम क्षमा चाहते हैं । आगामी अंकमें आनन्दस्वामीजीकी बताई वह अद्भुत घटनायें पाठकोंके सामने रक्खेंगे जिन्हें पढ़कर चकित होना पड़ेगा और सत्य सनातनधर्म ही सच्चा धर्म है यह मानना पड़ेगा । गायत्री माताके जप द्वारा उन्होंने क्या-क्या चमत्कार देखे और बिना बिचारे चाहे जिसके हाथका बना भोजन करनेसे क्या क्या हानियां उठानी पड़ती हैं, भगवान् अपने भक्तके काम कैसे संवारते हैं, आदि आदि अद्भुत घटनायें होंगी । हमारा पाठकोंसे साग्रह अनुरोध है कि वह अपने सत्य सनातनधर्मसे तनिक भी विचलित न हों, धर्म पर दृढ़ रहें एक न एक दिन सारे विश्वको इसी की शरणमें आना है, इसमें तनिक भी सन्देह न करें । (क्रमशः)

श्रीमज्जगद्गुरु शंकराचार्यजी महाराजके सदुपदेश

[प्रेषक—भक्त श्रीरामशरणदासजी]

अभी पिछले दिनों पिलखुवामें हमारे स्थान पर भारत की महान् विभूति परम पूज्यपाद १००८ श्रीमज्जगद्गुरु शंकराचार्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर अनंतश्रीविभूषित श्री स्वामी श्रीकृष्णबोधाश्रमजी महाराज पधारे थे, तभी आपने यह सदुपदेश दिया था जो वहां पर दिया जा रहा है। आशा है पाठक इसे ध्यान से पढ़नेकी कृपा करेंगे।

एक बार अर्जुन इन्द्रलोकमें गए तो इन्द्रने उन्हें प्रसन्न करनेके लिए उनके सामने बड़ी बड़ी अप्सराओंका नृत्य कराया। जब उर्वशीने नृत्य किया तो अर्जुनने उसे देखा जिससे इन्द्रने समझा कि अर्जुनका मन उर्वशीमें अटक गया है। उन्होंने रात्रिमें उर्वशीको खूब शृंगार करा कर एकान्तमें अर्जुनके पास भेजा। अर्जुनने देखते ही उसे मातामही कहा अर्थात् दादी कहा। उर्वशीने कहा कि आपने मुझे दादी क्यों कहा? आप तो मुझे नृत्य करते समय बड़े गौरसे देख रहे थे। अर्जुनने उत्तर दिया कि मैं तो यह देख रहा था कि यह मेरी दादी बूढ़ी होकर भी कैसी अच्छी नाच रही है। मेरा मन गन्दा थोड़े ही था? उर्वशी ने कहा कि मैं तो इस समय आपसे संगकी इच्छा से आई हूँ। अर्जुनने कहा कि मैं तो भारतका सनातन धर्मी क्षत्री हूं, ऐसा पाप मुझसे कदापि नहीं हो सकता। और मैं अपने धर्मको नहीं छोड़ सकता। अन्तमें उर्वशी ने अर्जुनको एक वर्ष तक हीजड़ा होनेका शाप दिया, इस पर अर्जुनने कहा कि कोई चिन्ता नहीं भले ही मुझे एक वर्ष तक हीजड़ा रहना पड़े इसकी परवाह नहीं, पर हमारा धर्म तो बचा। आजकल बहुतसे मनुष्य धर्मकी परवाह न कर मीटिंगों में जाते हैं, पार्टियोंमें जाते हैं और वहां पर चीनी के बरतनोंमें सबकी जूठी प्यालियोंमें खा पी आते हैं। यह कितना बुरा है। उन्हें महाराणा प्रताप की तरह ललकार कर कह देना चाहिए कि जैसे महाराणा प्रतापने मानसिंहसे फटकार कर कह दिया था कि क्या मैं तुझ जैसे नालायक के साथ जो मुसलमान अकबरको अपना बहनोई बना चुका है ऐसे के साथ बैठकर खा सकता हूं। नहीं भूलकर भी हमें कभी भी इन चीनियोंके कांच के पात्रों में नहीं खाना पीना चाहिए। और गो भक्षक मुसलमान ईसाई लोगों के साथ, चमार भंगियोंके साथ बैठकर नहीं खाना चाहिए। सुख शांति इन बातोंसे कभी नहीं होगी। आज आपने कांग्रेसके मार्ग पर तो चलकर देख ही लिया कि उनके बनाए मार्गसे सुख शान्ति नहीं हुई और न होगी और अब रहे यह कम्यूनिस्ट और सोशलिस्ट यह भी ईश्वर और धर्मको नहीं मानते, इसलिए इनसे भी सुख शांतिकी आशा करना कोरी मूर्खता है। आप कहेंगे कि क्या फिर आप सुख शान्ति प्राप्त करा देंगे? क्या आप सुख शान्तिका ठेका लेते हैं? हम कहते हैं कि हम इन कांग्रेसी कम्यूनिस्टों सोशलिस्टोंकी तरह इसका ठेका नहीं लेते। पता नहीं हम तो कब मृत्युको प्राप्त हो जाँय। हम क्या ठेका लेंगे, पर हाँ हम तुम्हें ऐसे ठेकेदारको बताते हैं कि जो तुम्हारा इस जन्मका ही नहीं अनेकों जन्मोंका ठेकेदार है। यदि तुम उस ठेकेदारकी शरण लोगे तो सुनो उस ठेकेदारकी प्रतिज्ञा है—

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जना पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥

अपने भक्तका सब ठेका भगवान् श्रीकृष्ण ले लेते हैं। यह उन्होंने गीतामें बताया है और भगवानने घोषणा कर रक्खी है 'न मे भक्तः प्रणश्यति' मेरे भक्तका नाश नहीं हो सकता। उसीने द्रौपदीका ठेका लिया, उसीने गजका ठेका लिया और उनकी रक्षा की। जब तक हमारा देश उस सच्चे ठेकेदारकी शरणमें रहा तब तक देशमें सुख शांति रही और जबसे उसकी शरण छोड़ी देख लो दुःखी हो रहा है। आज जो कहा जाता है कि अब धर्म कर्मके दिन लद गए अब इन बातोंकी जरूरत नहीं है तो हम कहते हैं कि अब यदि धर्म कर्मके दिन लद गए तो याद रखो कि अब सुख शान्तिके दिन भी लद गए, अब देख लो कहीं पर सुख शान्ति भी नहीं। आज कहा जाता है कि सब शास्त्रोंको बदल दो, नये-नये शास्त्र बनाओ, नया

विधान बनाओ, पर हम पूछते हैं कि ईश्वरका शास्त्र कानून तभी बदला जा सकता है कि जब ईश्वर मर गया हो और उसकी जगह दूसरा ईश्वर बैठा हो या ईश्वर पागल हो गया हो या ईश्वर रिटायर हो गया हो। जब ईश्वर मरा नहीं, और उसकी जगह दूसरा ईश्वर बैठा नहीं और ईश्वर पागल हुआ नहीं तो फिर भला उसका कानून कैसे मिटाया जा सकता है। हम इन लोगोंके कहनेसे अपने शास्त्रोंको नहीं बदल सकते। इन्हें जब अपनी मृत्युका ही पता नहीं है फिर भला इन्हें शास्त्रोंमें दखल देनेका क्या अधिकार है? हम तो कहते हैं कि जो इन नेताओंकी शास्त्र विरुद्ध बातों पर चलते हैं, आज प्रत्यक्ष देख लो वह दुखी हैं और हम जो शास्त्रानुसार चलते हैं और या जो हमारे बताये शास्त्रानुसार मार्ग पर चलते हैं वह इनसे सुखी हैं और जो शास्त्रके मार्ग पर चलेंगे वह सुखी रहेंगे। सज्जनों! याद रक्खो हम तो लंगोटधारी साधु हैं, हमारे स्त्री पुत्र नहीं, धन मकान नहीं, हम तो स्त्री पुत्र वाले तुम ग्रहस्थियोंके हितकी ही बात बताते हैं कि हिन्दू कोड बिल, तलाक बिल बन जाने पर तुम्हें ही दुःख उठाना पड़ेगा, इस लिये तुम अभीसे चेत जाओ तभी धर्मकी रक्षा हो सकेगी।

आज हम दूसरोंकी नकल करने पर उतारु हो गये हैं और आज हमने अपना खान-पान बदल दिया, रहन सहन बदल दिया, बोल-चाल बदल दी और अब तो आपस में मिलती बार भी राम-राम, प्रणाम न करके आदावरज करने लगे, नमस्ते करने लगे, यह हमारा कितना पतन है। एक बार हम रेलमें फर्स्टक्लासके डिब्बेमें यात्रा कर रहे थे कि उसी डिब्बेमें एक मुसलमान मियां साहब भी बैठे हुये थे, वहाँ एक ब्राह्मण भी हमारे परिचित आ गये। उस ब्राह्मणने हमें देखकर हमें आदावरज कहा इस पर हमने उस ब्राह्मणसे कहा कि तुमने ब्राह्मण होकर भी हमें आदावरज क्यों किया? वह मुसलमान बैठा सुन रहा था, उस मुसलमानने हमसे कहा कि महाराज आप बड़े ही तास्सुबी हो जो आदावरजसे चिढ़ते हो? हमने उससे कहा कि तुम जब आपसमें मिलते हो तो मिलती बार क्या कहते हो? उसने कहा कि महाराज! हम तो आदावरज कहते हैं। हमने उससे कहा कि तुम आदावरज़के बदले राम राम क्यों नहीं कहते? उसने कहा कि हम राम-राम क्यों कहें हम तो अपने मज़हबके अनुसार आदावरज ही कहते हैं। हमने कहा कि फिर हम ही आदावरज क्यों कहें? हम अपने धर्मके अनुसार राम राम क्यों न कहें? तुम तो आदावरज कहते रहो और हम राम राम भी न कह सकें, ये कहांका न्याय है? बताओ तास्सुबी तुम हो या हम हैं? वह इस पर चुप हो गया। दूसरे देश वाले क्या जानते हैं कि जो हम सनातनधर्मी जानते हैं! हमारे यहांका रोना विचित्र है परन्तु दूसरे देश वाले हमारी तरहसे रोना भी नहीं जानते। हम हँसना जानते हैं, हमारा हँसना भी विचित्र है, दूसरे देश वाले हमारी तरह हंसना भी नहीं जानते और खाना भी हमारा विचित्र है, सोना भी हमारा विचित्र है, मरना भी हमारा विचित्र है और मरना भी नहीं जानते कि कैसे मरते हैं? हमारे यहाँ का मरना विचित्र है—गऊके परम पवित्र गोबरसे लिपा स्थान, कुशा रक्खी हुई, मुखमें श्री गंगाजल, श्री तुलसीपत्र, राम रामका उच्चारण, कैसा विचित्र हमारा मोक्ष प्रदान करने वाला हमारा मरना है, क्या मरते हैं कोई और देश वाले इस प्रकार? खाना भी हमारा विचित्र है, पहले चौकेमें बड़ी पवित्रतापूर्वक रसोई बनाना, अग्निदेवको जिमाना, बलिवैश्वदेव करना, ब्राह्मण गौ को खिलाना, भगवान्को भोग लगाना, अतिथीको खिलाना, तब उस प्रसादको पाना, क्या जानते हैं दूसरे देश वाले इस प्रकारका भोजन करना। नहीं जानते। जाने भी कहांसे, जब उनके भाग्यमें शास्त्रानुसार चलना और सनातनधर्मकी शरणमें आना और भारतमें जन्म लेनेका सौभाग्य प्राप्त करना लिखा ही नहीं? अपने धर्म पर दृढ़ रहो यही हमारा कहना है।

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसार-चक्र

नये वर्ष सं० २०१२ वि० का भविष्य-विवेचन

[चैत्र शुक्ला १ शुक्रवार ता० २५ मार्च १९५५ से अभी हमारा नया चान्द्रवर्ष सं० २०१२ वि० प्रारम्भ हुआ और वैशाख कृष्णा ६ बुधवार मेष-संक्रान्ति ता० १३ अप्रैल १९५५ से नया सौरवर्ष प्रारम्भ होगा। इस नये वर्ष सं० २०१२ वि० का संसारकी सभी परिस्थितियों—व्यापार, वर्षा, वायुमण्डल, राजनैतिक उलटफेर, युद्ध, शान्ति, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, श्रीराष्ट्रपति, महामात्यादि राष्ट्रके कर्णधारोंकी जन्म-कुण्डलियोंका विचार और प्रत्येक प्रान्त—का भविष्य विवेचन विस्तृत रूपमें हमने अपने सं० २०१२ वि० के 'श्रीविश्वविजयपंचाग' में लिखा है जो गत कार्तिक (नवम्बर) मासमें प्रकाशित हुआ था। अभी दक्षिण भारतके सुप्रसिद्ध ज्योतिर्विज्ञानाचार्य श्रीबेंगलोर वेङ्कट रमन महोदयने जनवरी मासके अंग्रेजी पत्र 'एस्ट्रालॉजीकल मेग्ज़ीन' के विशेषांकमें इस नये वर्षका भविष्य विस्तृत रूपमें दिया है, इनकी अधिकांश भविष्यवाणी प्रायः हमारे पंचांगके भविष्यसे मिलती जुलती हैं। कहीं इन्होंने अपने अनुभवके आधार पर कुछ अधिक विवेचन भी किया है, अतः पाठकोंके लाभार्थ हम इस बार इनके अंग्रेजी लेखका अनुवाद यहाँ प्रकाशित कर रहे हैं। स्थानाभावके कारण पंचांगका पूरा भविष्य यहाँ नहीं दिया जा सका। नये वर्षके सम्बन्धमें हमारे विचार पाठक सं० २०१२ के 'श्रीविश्वविजयपंचाङ्ग' में देखें। — सम्पादक]

प्रकृतिमें सहस्रों चक्र और लय है। इनमेंसे अनेक गुप्त हैं। उनको समझनेमें वर्षों लग जाते हैं मनुष्यके जीवन में भी स्वरोंकी समता विद्यमान है। पर यह बहुत पेचीदी है। इसका ज्योतिषसे एक निश्चित सम्बन्ध है। मनोदशा, सृजनात्मक कल्पनाशक्ति, चिन्ता, युद्ध, लिप्सा, सुख और दुःख इनमें ऊंच-नीच, उत्थान-पतन आता रहता है। व्यक्ति की जैसे मनोवृत्ति बदलती रहती है वैसे ही राष्ट्रोंके भाव और चित्त-वृत्तियां परिवर्तित होती रहती हैं। क्योंकि राष्ट्र-व्यक्तियोंका समूह है। राष्ट्रोंका भाव चक्र तैयार किया जा सकता है और पर्याप्त शुद्ध भविष्य वाणी की जा सकती है। सूर्य यदि जीवन का दाता है, वात-प्रवात, वर्षा और सूखे का कारण है, तब यह भी मानना चाहिए कि वह लौकिक व ऐहिक जीवनको भी प्रभावित करता है। रूसी ज्योतिषी 'स्चीजेवस्की'ने रूसमें हुई क्रान्तियों, युद्धों, हड़तालों, जन-आन्दोलनों, यहूदी विरोधी प्रोग्रामों, अमरीकामें होने वाली 'लिंचिंग' (नीग्रो लोगोंको जीते जी मार देना, जला देना, और सताना) और ब्रिटेनमें पार्लमेण्ट्री आन्दोलनोंका सम्बन्ध सूर्यमें दिखाई देने वाले धब्बोंके कालसे जोड़ा है। सूर्य किरणोंमें परिवर्तन ग्रहोंके योगोंमें परिवर्तन ये दोनों साथ-साथ होते हैं, और इनका शुभ या अशुभ प्रभाव भी पड़ता है। यदि हम 'एल्सवर्थ हंटिंगटन' के इस कथन पर विश्वास कर सकते हैं, कि समाजकी मानसिक वृत्ति पर अधिकतर व्यापार-चक्र निर्भर करता है, और मानसिक वृत्ति स्वास्थ्य पर निर्भर करती है और ये सब सूर्यमें आए धब्बोंके चक्र पर निर्भर करता है, तब हमें ज्योतिषके इस कथन पर भी विश्वास करना चाहिए कि प्रतिवर्ष बनने वाले ग्रह-मंत्रिमण्डलका भी, जो कि सूर्यके राशि चक्रमें घूमनेके आधार पर बनता है, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं पर प्रभाव पड़ता है और उनको पहलेसे बताया जा सकता है।

२०१२ का नया वर्ष शान्तिका वर्ष है, पर पेचीदगियों की विविधता, गलत फहमियों, भूलसे ग्रहण किये हुए उत्तरदायित्वों और पूरे न हो सकने वाले दायित्वोंसे मुक्त नहीं है। ग्रह-मंत्रिमंडलमें इस वर्ष सूर्यके पास कोई पद नहीं है। यही बात मंगलकी है, यद्यपि नैसर्गिक सेनापति यही है, बुद्धि और सत्यके ग्रह बृहस्पतिको भी इस वर्ष

कोई स्थान नहीं मिला है, राज-ग्रह चन्द्रको गौण स्थान प्राप्त हुआ है। प्रभावशाली पर चंचलमति बुधको चार पद प्राप्त हुए हैं। यह प्रधानमंत्री होनेके अतिरिक्त प्रधान सेनापति भी है। इस वर्षका राजा शुक्र है। यह शीत, आर्द्र एवं कफ कारक तथा मंद स्वभावका है। यह सौन्दर्य माधुर्य हर्ष आनन्द और प्रतिष्ठाका सूचक है। शुक्र राजा होनेके साथ शस्याधिपति भी है। इससे सूचित होता है कि फसल अच्छी होगी, वर्षा समय पर होगी, जल विद्युत् परिकल्पनाओं का विकास होगा, साधारणतः हर्षका समय रहेगा, आंधियां और सामुद्रिक आंधियां आवेंगी। शुक्रकी प्रकृतिके अनुसार लोग भी अधिक विषयी, भौतिक-विलास प्रिय और सुखी जीवन बिताना पसन्द करेंगे। स्त्रियोंका प्रभाव बढ़ेगा और वे जीवनके प्रत्येक क्षेत्रमें पुरुषोंके साथ सफलता पूर्वक प्रतियोगिता करेंगी। बुध प्रधानमंत्री, प्रधान सेनापति प्रावृट और व्यापारका मंत्री है अतः नर-नारी अधिक विषय और इन्द्रिय लोलुप होंगे। वर्षा अच्छी होगी। जौ और दाल की दुर्लभता रहेगी। समस्त विश्वमें व्यापारकी दशामें सुधार होगा और जनता साधारणतः आतङ्कित रहेगी। प्रायः सब देश शस्त्रीकरणमें प्रवृत्त होंगे। शनि वनस्पति एवं धातुओंका स्वामी है अतः श्रमिक वर्गके लिए दुःखदायी है। न्यायका अधिपति चन्द्र है और पशुके स्वामी श्रीकृष्ण हैं। अतः पशु जगत् समृद्ध होगा। शुक्र राजा है पर यह ग्रह स्त्री प्रकृतिका और दुर्बल है। अस्थिर वृत्तिका बुध वस्तुतः प्रशासन और सेना दोनोंका प्रमुख होगा। राज ग्रह सूर्य और दैवीय ग्रह बृहस्पतिके मंत्रिमण्डलमें न होना, अनर्थ सूचक है। कुलीनतंत्र पर इस कारण और घातक प्रहार होंगे। सरकारोंके प्रमुखोंका असैद्धान्तिक अति चापलूस और खुशामदियोंके अबुद्धिमत्तापूर्ण परामर्श द्वारा पथ प्रदर्शन करेंगे। उपयुक्त कार्यके लिए उपयुक्त व्यक्तिका चुनाव करनेमें अनेक गलतियां होंगी।

इस वर्ष बृहस्पतिकी गति-विधि महत्वपूर्ण है। ता. २ मई १९५५ तक यह मिथुन राशिमें रहेगा, तदनन्तर कर्क राशिमें ३ मई १९५५ को प्रवेश करेगा, और फिर १ अक्टूबर १९५५ को सिंह राशिमें आयेगा। साधारणतः बृहस्पति एक वर्षमें एक राशिको स्पर्श करता है, पर इस चान्द्र वर्षमें वह तीन राशियोंका स्पर्श करता है। फलतः इस उच्च ग्रहसे होने वाले शुभफल न होंगे। मार्च और सितम्बर के मध्य बृहस्पतिका 'अतिचार' होगा। इस अवधिमें वह ३० का वृत्तार्द्ध पार करेगा। साधारणतः इसको यह १२ मासोंमें पार करता है। यह महत्त्वपूर्ण है। इस अतिचार गतिका सम्बन्ध भारतके राजचिह्नसे ११ वें घरका अधिकतर सम्बन्ध है। फलतः भारत सरकारमें अस्थिरता असन्तोष सन्देह और अनिर्णयकी वृत्तियोंका उदय होनेका भय है।

बृहस्पति तीन राशियोंका स्पर्श करता है। इस कारण सैनिक बड़ी संख्यामें मारे जायेंगे और पृथ्वी लाशों से भर जायगी। क्योंकि कहा है—

अब्दमध्ये यदा जीवः क्रमाद्राशित्रयं स्पृशेत्।
तदा सुभट कोटिभिः प्रेतपूर्णा वसुन्धरा॥
अलिस्थिते रोगभयं जनानां भवेत्पशूनां मृतिरर्कपुत्रे।
ऐणीकुलानां च जनस्य नाशो महीपतीनामुपजापकं स्यात्

इसका शब्दार्थ न ग्रहण करना चाहिए। इसका अर्थ इतना ही है कि शान्ति या मेल करानेमें बृहस्पतिका कार्य सहायक न होगा। शनिका ३०-१०-१९५५ को तुलामें अस्त होगा, अतः बृहस्पतिके 'अतिचार' से होने वाले अशुभ एवं दुष्परिणामका प्रभाव कम हो जायगा। परन्तु शनि जब वृश्चिकमें प्रवेश करेगा, मंगलके घरमें, तब 'बीमारियां फैलेंगीं, पशुओंका नाश होगा, लोगोंको शोक होगा और राष्ट्रोंके मध्य व्यवहारमें षड्यंत्र स्थान लेंगे।

सब ग्रहोंके सम्मिलित एवं सामूहिक प्रभाव पर विचार करनेसे ज्ञात होगा कि शुक्रके राजा होने और बुधके प्रधानमंत्री होनेसे शान्ति एवं समृद्धि रहेगी। पर बृहस्पति अतिचारी है, अतः बड़े परिमाणमें जीवन-नाश होगा।

भाद्रपदका मास मल मास है। रात्रिमें सूर्य मेष राशि में प्रवेश करेगा। अतः जहां शुभ प्रभाव बढ़ेगा, वहां अपराधोंमें वृद्धि होगी, धार्मिक और नैतिक बन्धन शिथिल होंगे, राष्ट्रोंके मध्य गलत-फहमी बढ़ेगी, राष्ट्र अपनी चरम सीमा तक शस्त्रीकरण करेंगे, सुदूरपूर्वमें राजनीतिक क्षितिज सघन होगा। विश्व भ्रम वश झूठे विश्वासमें रहेगा जिसका बादमें भयानक परिणाम होगा।

सूर्य ग्रहण २०-६-१९५५ को होगा। यह ग्रहण मिथुन राशिमें होगा, और यह राशि संयुक्त राज्य अमरीकाकी

लग्न राशि है और भारत के १० वें घरमें है तथा लग्नाधिपति है। वर्षके तीन मासोंके अन्दर सूर्यग्रहणका होना युद्ध छिड़नेकी आशंका उत्पन्न करता है। अमरीका और चीन का सम्बन्ध टूटते-टूटते होने लगेगा। इस वर्ष चन्द्रग्रहण २९-११ ५५ को होगा और दूसरा सूर्यग्रहण १४-१२ ५५ को होगा। ये तीनों ग्रहण भारतमें दिखाई देंगे। इन ग्रहणोंका प्रभाव यह होगा, कि पशुओंका नाश होगा और काश्मीर, बिहार, चीन और जापानके लोगोंके लिए दुःखदायक होगा, और जिन देशोंकी राशियां मिथुन, कन्या, तुला और धनु हैं, उनमें अप्रत्याशित घटनायें घटित होंगी। वर्षके अन्तिम भागमें सुदूरपूर्वमें युद्ध सदृश घटनायें होंगी और एक-दो मुठभेड़ें भी होंगी।

युद्धका देवता मंगल अपने घरमें स्थिरतासे डटा हुआ है और लोकतंत्री शनि उच्चावस्थामें है और इन दोनोंकी एक दूसरे पर दृष्टि है। मंगल और शनिका वर्चस्व आवश्यकताओंकी पूर्तिके लिए साधारण जनताके संग्राम करनेके दृढ़ संकल्पको सूचित करता है। शनिकी उच्च दशासे सूचित होता है कि जनताकी इच्छामें विस्तार होगा और उसकी प्रगति होगी। परन्तु मंगलकी दशासे प्रतीत होता है कि नेताओंकी असावधानी और उनके द्वारा ठीक-ठीक पथ-प्रदर्शन न होनेके कारण यदि उसकी पराजय न हुई। तो उसकी इच्छा पूर्तिमें बाधा पहुँचेगी।

भारतमें बादल इस वर्ष 'द्रोण' नामके होंगे। इनका मूलस्थान मेरुके पूर्वीय भागमें होगा। अतः भारी वर्षा होगी और नाज प्रचुर मात्रामें होगा। बृहस्पतिकी प्रकृति के कारण इस वर्षका नाम 'कर्कशाढ़ा' होगा। इस वर्षके मुख्य बादलोंका नाम 'कम्बल' होगा। इनका मूल स्थान आग्नेय दिशा होगा। दिशासे ही ज्ञान होता है कि वर्षा अच्छी होगी और भारत गणराज्यके उत्तर तथा वायव्यमें पशु बड़ी संख्यामें मरेंगे। सोना, ताम्बा, रेशम और मोती विपुल मात्रामें उपलब्ध होगा। अमान्त श्रावणमास (२०-७-५५ से १७-८-५५ तक) उत्तर-भारतकी अधिकांश नदियों और दक्षिण कावेरी और कृष्णामें बाढ़ आयगी और गंगाके डेल्टा प्रदेशमें भयंकर बाढ़ आयगी। सूर्य और बुध का योग २३-४-१९५५ को होगा। इसका परिणाम ऋतुपरिवर्तनमें दिखाई देगा। मंगल और बृहस्पतिकी एक दूसरे पर दृष्टि है और यह २७-७-१९५५ और २५-५-१९५६ को होगा। फलतः घन गर्जन होगा। मंगलकी दशा सूखेको सूचित करती है। २३-५-१९५५ को मंगल और बुधका योग प्रबल झंझावातको उत्पन्न करता है। उत्तरप्रदेश आसाम और आंध्रमें बाढ़ और विशेषरूपसे आंधी सदृश नैसर्गिक आपत्तियोंसे धन-जनकी भारी क्षति होगी। ऋतुकी दृष्टिसे १५-१-१९५६ को मंगल और शनिका योग महत्वपूर्ण है। समुद्री आंधियां आवेंगी, और जहाजोंको विशेषतः बम्बई और विशाखापत्तनम्में भारी क्षति पहुँचेगी। तूफानों की दृष्टिसे नवम्बर मास महत्वपूर्ण है।

भारत

शुक्रकी दृढ़ स्थितिके कारण सामाजिक राजनीतिक और पारिवारिक जीवनके क्षेत्रमें स्त्रियोंका वर्चस्व बढ़ेगा। नवमांशमें शुक्र दुर्बल सूर्यके साथ है। किसी प्रमुख स्त्री पर कलंक आना इससे सूचित होता है। पारिवारिक क्षेत्रमें बहुत संघर्ष रहेगा और पारिवारिक बन्धन शिथिल हो जायेंगे। कला, संगीत, और नाटकको प्रोत्साहन मिलेगा। "प्रगतिशील विचारों" की नारियां कुछ महान् आदर्शों को जो कि भारतीय नारीकी विशेषता मानी जाती है, अनद्यतन मानेंगी। वैशाखके पिछले भाग (३-५-१९५५) में बृहस्पति कर्कमें प्रवेश करेगा। राजनीतिक समस्यायें इस कारण सरलतासे न सुलझेंगी। वैशाख (२२-४-१९५५ से २१-५-१९५५) में पांच शनिवार होंगे फलतः शान्ति भंग होगी और रेलवे और सूती मिलोंके मजदूर इसमें ग्रस्त होंगे। अष्टमीको मंगल मिथुनमें प्रवेश करेगा। यह अग्निकांडों और मोटर दुर्घटनाओंका सूचक है। फलतः धन-जनकी भारी हानी होगी। ज्येष्ठमें (२२-५-१९५५ से २०-६-५५ तक) में आंधियोंके आनेसे वर्षामें बाधा पड़ेगी। फलतः कहीं अतिवृष्टि होगी और कहीं कम होगी। शासक दल अलोकप्रिय होगा। दुर्घटनाओं और हिंसासे बहुत लोग मरेंगे। क्योंकि आषाढ़ (२०-६-१९५५ से १९-७-१९५५ तक) में पांच मंगलवार पड़ते हैं। देशमें महामारी फैलने से भारी हानि पहुंचेगी। आंध्र और दक्षिण मद्रासमें गंभीर उपद्रव होंगे। अधिकारी इसका कठोरतासे शमन करेंगे। श्रावण मास (२०-७-१९५५ से १७-८-१९५५ तक) में चार ग्रहों—सूर्य, मंगल, बृहस्पति और शुक्रका एक राशि

में मेल हो रहा है। यह प्रशासनके प्रमुखोंके दुर्भाग्य, और शान्ति-भंगको सूचित करता है। चांद्र भाद्रपद मासमें राहु वृश्चिकमें प्रवेश करता है और यह दुर्भाग्यका सूचक है। व्यापारी वर्ग लाभान्वित होगा, पर देशके विभिन्न भागोंमें उपद्रवकारी शक्तियां उत्पात मचायेंगी। सब मूल्यवान् धातुओं और वस्तुओंके मूल्य चढ़ेंगे। 'प्रथम भाद्रपद' (१७-९-१९५५ से १५-१०-१९५५ तक) में अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज युद्धके सघन बादलोंसे व्याप्त होगा, क्योंकि सूर्य शनिवारको कन्यामें प्रवेश करेगा। देशको एक भयंकर एवं नूतन महामारीका सामना करना पड़ेगा। चिकित्सक निदान न ढूंढ पायेंगे। क्योंकि—

"यदा वृश्चिकराशिस्थः सैंहिकेयो विजायते।
वामादिष्टि तमेतंच षष्ठे मासे च रौरवम्॥
पृथ्वी सरोगा नृपतेः सुभवेन्महा युद्धभयं तदानीम्"

नागरिकोंकी स्वाधीनताको कम करने वाले नये कानून बनाये जावेंगे और सरकार अलोकप्रिय हो जायगी। न्यायालय, राजद्रोह, अपमान और शान्ति भंगके अभियोगोंसे पूर्ण होंगे। यह चांद्र मास आश्विवयुज मास (१६-१०-१९५५ से १३-११-१९५५ तक) में होगा। कार्तिकमें पांच मंगलवार आवेंगे और सूर्य बुधवारको वृश्चिकमें जायगा। फलतः विश्वभरमें अशान्त स्थिति रहेगी। सरकार दृढ़तासे स्थिति का सामना करेगी। समस्त भूमण्डल भय एवं त्रास अनुभव करेगा और भारतमें भारत-पाक सम्बन्ध चिन्ताजनक होंगे और पूर्वी बंगालसे हिन्दुओंका और निष्क्रमण होगा। क्योंकि—

"बुधरववारे यदि संक्रमश्चेत्समान वस्तूनि भवेच्चधान्यम्
असौख्य लोका भयभीत पीड़ा सुवृष्टि कालेषु च मंदवर्षा॥"

मार्गशीर्ष (१५-१२-१९५५ से १३-१-१९५६) में अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति सुधर जायगी। देशमें भी शान्ति विराजेगी। परन्तु शुक्रके मकरमें प्रवेश करने पर फसल नष्ट हो जायगी। "मकरे च यदा शुक्रः सर्व सस्य विनाशकृत्" चांद्र पौष मासमें (२५-१२-१९५५ से २१-१-१९५६ तक) में अमरीका, आसाम, क्वेटा और तेहरानमें भूकम्प आवेंगे। कठोर शीतके कारण फसल नष्ट हो जायगी। लाल धातुओं जैसे तांबा, दाल, मूंगफली और तीसीके व्यापारी अच्छा लाभ उठायेंगे। क्योंकि इस मास पांच शनिवार हैं और चांद्र एकादशी (शुक्लपक्ष) को कृतिका योग है। चांद्र माघ और फाल्गुन (२५-१-१९५५ से २४-३-१९५५) मास साधारणतः सारे संसार के लिए अशुभ सूचक है। सूर्य रविवारको कुम्भमें प्रवेश कर रहा है और यह शासकों के मध्य युद्ध, जनताको दुःख और समस्त विश्वके वास्ते अशुभ समाचार देने वाला है। यथाः—

"संक्रांतिरादित्य दिनेन शस्त्राकरोति युद्धं नृपतेरतेव,
धान्यं महर्घं प्रति रौद्रवार्ता प्रजाभवेद्दुःखितहीनदीना

आर्थिक क्षेत्रमें हमारा देश अच्छी प्रगति करेगा, परन्तु वित्त व बेकारीकी समस्याके बारेमें जनता चिन्तित रहेगी। अमरीका और चीनसे नये व्यापार-करार होंगे। राष्ट्रीय वित्तीय अवस्था और व्यावसायिक कार्योंमें सुधार होगा। किन्तु बृहस्पतिके साथ केतुके होनेसे भारी खर्च होगा, बैंक का दिवाला निकलेका और शेयर बाजारमें भय छा जायगा। सूर्यग्रहण (२०जून १९५५) तक एक मुख्य बैंकका दिवाला निकल जायगा और वित्तीय-क्षेत्रमें आतंक रहेगा। यह वर्ष रेलवे, डाक और समाचार पत्रोंके श्रमिकों के लिए लाभदायक है। श्रमी पत्रकारोंके सम्बन्धमें प्रेस कमीशनकी अधिकांश सिफारिशोंको सरकार मान लेगी। परन्तु कर्मचारियोंमें असन्तोष रहेगा, फलतः तालाबन्दी, हड़तालें, रेलवेको हानी होगी। मईसे अगस्त १९५५ में और १९५६ के प्रारम्भमें रेलवे ही नहीं, पर अन्य परिवहन के साधनोंमें दुर्घटनायें होंगी, क्योंकि जनवरी १९५६ के प्रारम्भमें मंगल और शनिकी एक ही क्रान्ति है। मजदूरों का लक्ष्य बहुत कुछ पूरा होगा। किसान लाभमें रहेंगे, पर जमींदार विपत्तिमें पड़ेंगे। सरकार कुछ व्यापक भूमि सुधारके कानून बनायगी। यह चीनके ढंग पर होगा। पर यह राजनीतिक दिखावा मात्र होगा। भूमिका मूल्य गिर जायगा।

आंतों और फुफ्फुस सम्बन्धी रोग बढ़ेगा। रोगके कारण सर्वोच्च न्यायालयमें परिवर्तन होगा। एक प्रमुख धार्मिक नेता लगभग वर्षके अन्तमें जाता रहेगा।

प्रधानमंत्री मार्च १९५६ तक राहु दशा और राहु भुक्तिमें है। उनकी कुण्डलीके छठे स्थानमें बृहस्पति है। अतः "शान्ति पूर्ण सह-स्थिति" की नीतिका अनुसरण करते

रहेंगे और व्यर्थमें यह आशा करते रहेंगे, कि कम्युनिष्ट कृपा पूर्ण रहेंगे। दसवें घरका स्वामी मंगल है और बृहस्पति बुध और मंगल इन तीनोंकी इस पर शुभ दृष्टि है। अतः प्रधानमंत्रीका संकल्प सदा उच्च रहता है। परन्तु आप का जन्म 'कालसर्प योग' में हुआ है, अतः आप सदा काल्पनिक एवं आदर्श मार्ग ग्रहण करते हैं, वास्तविक नहीं। आपके नेतृत्वमें देश तटस्थ रहेगा। पर एक भय भी है। आपकी नरम नीतिसे आक्रान्ताके साहसी होनेका भय है। वृश्चिकमें शनि-राहुका योग है और यह सूचित करता है कि १९५६ में अन्य म्युनिक-करार होगा जिसका परिणाम घातक होगा। "शान्तिपूर्ण सह-स्थिति" की नीतिका जो कुछ भी परिणाम हो, अन्तर्राष्ट्रीय परिषदोंमें भारतकी बात ध्यानसे सुनी जायगी और भावी विश्व-संकटके तापको शान्त करनेमें सहायक होगी। अत: वर्षके आधे भागमें भारतकी प्रतिष्ठा सारे संसारमें बढ़ेगी।

केन्द्रीय सरकार की भाषावार प्रान्तों सदृश समस्याओं के बारेमें ढिलमिल नीतिके कारण राजनीतिक क्षेत्रोंमें भ्रम फैलेगा अत: राष्ट्रीय विकासकी अनेक योजनाओंमें जनताका सहयोग प्राप्त न होगा। अमरीकाके प्रति हमारी कठिनाई आर्थिककी अपेक्षा राजनीतिक होगी। राहुके वृश्चिकमें प्रवेश करनेके साथ भारत द्वारा चीनका समर्थन होनेसे अमरीका असन्तुष्ट होगा और फारमूसाके प्रश्न पर दोनों देशोंमें और भ्रम उत्पन्न होगा। सूर्यग्रहण का प्रभाव प्रधान मन्त्रीके स्वास्थ्यके लिए शुभ नहीं है, अत: उनको सावधान रहना चाहिए। शनि-राहुके योगको देखते हुए वर्तमान शासनकी इकाइयोंमें परिवर्तन करनेसे भारतकी एकता छिन्न-विछिन्न हो जायगी।

राष्ट्रपति डा० श्री राजेन्द्रप्रसादके ग्रह स्वास्थ्यके लिए शुभ नहीं है। एक सम्माननीय नेताकी मृत्युके कारण केन्द्रीय मंत्रिमंडलका पुनर्गठन करना होगा। राजनीतिक नेताओंमें विवादके कारण मंत्रियोंमें परिवर्तन करना अनिवार्य होगा, त्रिवांकुर, कोचीन, मद्रास, बम्बई, बंगाल आंध्र और मध्यप्रदेशमें मंत्रियोंमें परिवर्तन करना अनिवार्य हो जायगा। कम्यूनिस्ट पार्टीमें मतभेद हो जानेके कारण भारत चीनकी मैत्री आशानुरूप नहीं बढ़ेगी। सीमान्त प्रदेशोंमें झगड़ा होगा। अकेला भारत ही मानता है कि चीनकी विस्तार नीति नहीं है। पर वह शीघ्र ही साश्चर्य देखेगा कि एशियाके अन्य भागोंमें "चीनी क्रान्तिका कार्य अभी समाप्त नहीं हुआ है।" ज्योतिषकी दृष्टिसे निकट भविष्यमें भारत और चीन और चीन तथा अन्य एशियायी देशोंके मध्य पारस्परिक लाभके लिए सहयोग होनेकी कोई सम्भावना नहीं। मंगलकी दशा तक चीन विस्तार नीतिका अनुसरण करेगा। काश्मीरकी आन्तरिक स्थिति भारतके लिए चिन्ताका कारण होगी। तुलासे शनिके निकलने पर भारत (मद्रास, मैसूर आंध्र और त्रिवांकुर कोचीन राज्य) शनि और राहुके प्रभावमें आवेंगे और "विचार एवं अभिव्यक्तिकी स्वतन्त्रता "लोक कला" आदि की आड़में कुछ धर्मान्ध वर्ग नास्तिकता का प्रचार करेगा और इससे शांति भंग होगी, उपद्रव होंगे। पर अधिकांश जनता इससे पृथक रहेगी। जातिके सम्बन्धमें विचित्र सिद्धांतों का आविष्कार करके भारतीयों और सिंहलियोंको विभक्त करनेकी चेष्टा की जायगी।

पाकिस्तान

कराचीके प्रति मंगलकी जैसी स्थिति है वह जनतामें असन्तोषकी सूचक है, हड़ताल, उपद्रव, आग, अग्निकांड आदि होना सम्भव है। मंगल और मेषके रूप पर शनिकी दृष्टि है और यह सैनिक क्रिया-कलाप जनताका युद्ध प्रेम और आक्रामक प्रवृत्तिका सूचक है। भारत और पाकिस्तान के सम्बन्ध शनिके वृश्चिकमें प्रवेश करने पर विशेषत: काश्मीरके कारण बिगड़ेंगे। भारतको सतर्क रहनेकी आवश्यकता है। पाकिस्तानमें राष्ट्रीय शोक होगा। श्री मुहम्मद अली पदच्युत किये जावेंगे, वैधानिक सरकार अदृश्य हो जायगी। पाकिस्तानको शनि दशा है २१-७-१९५५ तक रवि भुक्ति है। तदनन्तर चन्द्रभुक्ति है। अतः १९५५-५६ में अप्रत्याशित घटनाओंके कारण पाकिस्तानमें महत्वपूर्ण राजनीतिक परिवर्तन होंगे। पहले छः मास भारत पाक सम्बन्ध अच्छे रहेंगे, पर सूर्यग्रहणके बाद पाकिस्तान अपने स्वरूपमें आ जायगा। किन्तु १९५५में भारत और पाकिस्तानके बीच युद्ध न होगा।

नेपाल

काठमांडूमें कम्यूनिस्ट बड़ी संख्यामें प्रवेश करेंगे। आन्त-

रिक प्रतिस्पर्धाके कारण सरकार अस्थिर रहगी और जनता में असन्तोष बना रहेगा।

संयुक्त राज्य अमरीका

शनि और राहु पुनः वृश्चिकमें मिल रहे हैं, अतः भारत और अमरीकाका दृष्टिकोण एक न होगा। अमरीकाके सामने चीनकी विशेष समस्या रहेगी। कम्यूनिस्ट चीनके धमकी देने पर भी अमरीका च्यांगकाई शेकके साथ विश्वासघात न करेगा। अमरीकाकी सहायतासे च्यांगकाईशेक कोरिया और जापानके बीच ईशान एशिया सन्धि होगी और मार्शल च्यांगकी इच्छा आंशिक रूपमें पूरी होगी। प्रे जीडेंट आइजन होवरको फारमूसा नीतिके बारेमें अपने ही पक्षके ही लोगोंसे उलझना होगा। वाशिंगटनमें धनुः ७ अंशमें उच्च स्थान पर उग्र राहुके साथ है और इस पर शनिकी दृष्टि है। इसका अर्थ है कि कम्युनिस्टोंके साथ अमरीका समझौता नहीं करेगा। राहुके समीप सूर्य है, अतः सरकारी नीतिकी तीव्र आलोचना होगी। अग्नि प्रकोप और कुछ प्रदेशोंमें दंगे और हड़तालें होंगी। ७ वें या युद्धके घरमें केतुके साथ बृहस्पति है अतः विदेशी सम्बन्ध सरल न रहेंगे। प्रशान्त तट पर नौ दुर्घटना होगी। चीन देश पर बम वर्षा की जाय, जनरल मैकआर्थरके इस विचारका बहुत लोग अमरीकामें समर्थन करेंगे, पर प्रे जीडेंट आईजन होवर इस से सहमत नहीं होंगे। इस्लामी देशोंके साथ घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित होगा, पर ब्रिटेनके साथ इसका सम्बन्ध घटता बढ़ता रहेगा। अमरीका इस घोषणाके साथ कि परमेश्वर पर विश्वासके आधार पर आश्रित सभ्यताका आक्रामक अपराधी षड्यंत्रके साथ-साथ रहना असम्भव है जिसने कि सभ्यताके विनाशके लिए अपनेको अर्पित किया हुआ है, चिपटा रहेगा। (यह घोषणा अमरीकी कांग्रेसके दोनों पक्षोंके नौ सदस्यों की एक समितिने की है।) मिसिसिपी नदीमें बाढ़ आएगी। भूकम्प ज्वालामुखी विस्फोट और दक्षिण सागरके भू-गत तत्वोंमें उथल पुथल होगी। दक्षिणी राज्योंमें नीग्रो और गोरोंके बीच जातीय कानूनोंके कारण झगड़े होंगे। १९४५में जब शनि-राहुकी युति हुई थी तब अमरीकाने अणुबम फेंका था। इस बार वह उदजन बम से भी भयानक 'नरकासुर' बमका आविष्कार करेगा। इसको किसी पर छोड़ा न जायगा।

चीन

चान्द्र वर्षके आरम्भमें जब वाशिंगटनमें राहु उदय हो रहा है, तो केतु पेकिंगमें उदय हो रहा है और शान्ति ग्रह बृहस्पति लग्नसे १७ अंश दूर है। जूनमें होने वाला सूर्य ग्रहण भी इसी दशामें होगा। फलतः चीन और अमरीका के सम्बन्ध टूटनेकी चरम सीमा पर पहुंच जायगें। क्योंकि फारमूसा पर आक्रमण होनेकी सम्भावना है। पर धीरज और सहिष्णुताके कारण युद्ध न होगा। चीनमें अन्दर ही अन्दर असन्तोषकी आग सुलगती रहेगी। भारतके साथ चीनका सम्बन्ध वर्षभर मैत्रीपूर्ण रहेगा। माओ-त्से-तुङ्ग का स्वास्थ्य चिन्ताजनक रहेगा। सैनिक दृष्टिसे चीन बहुत तेजीसे प्रगति करेगा। और १९५७ तक शस्त्रीकरणमें रूस के समान हो जायगा। वृश्चिकमें शनि राहुकी युतिके समय जनवादी चीन विश्व शान्तिके लिए भयप्रद हो जायगा। बाहरसे यद्यपि चीन और रूसमें सौहार्द रहेगा, पर माओ-त्से-तुंग चीनी ढंगका कम्युनिज्म आविष्कृत करेंगे। पेकिंग और वाशिंगटन 'षडष्टक' में है, अतः कम्युनिस्ट सेनाके विरोधमें अमरीका फारमूसाकी रक्षा करनेका प्रयत्न करेगा। चीन अपना जीवन नहीं बदलेगा। एक विश्व-शक्तिके रूपमें वह छोटे एशियाई देशों पर वर्चस्व स्थापित करेगा।

सोवियत रूस

लोह दीवारके पीछे अशान्ति बढ़ेगी। बेरिया प्रकृतिके एक दो अभियोग चलनेकी भी सम्भावना है। अणु शक्तिका 'शान्ति कालिक' नवीन प्रयोगकी घोषणा होगी। रूस शान्तिके लिए प्रयत्न करता रहेगा। पश्चिमी राष्ट्रोंके साथ रूस सन्धि-चर्चा चलानेका यत्न करेगा, पश्चिमी राष्ट्र रूसी सचाईको कसौटी पर परखनेकी प्रतीक्षामें रहेंगे। बर्लिनको सोवियत रूस नहीं छोड़ेगा। नवमांशमें मीन लग्न होने और १० में केतुके रहने तथा उस पर बृहस्पति, शनि एवं राहुकी दृष्टि होनेसे सूचित होता है, कि रूस शीत-युद्धका अन्त करनेको उत्सुक है। १० वें घर पर राहु और शनिका प्रभाव 'शासक वर्गका दुर्भाग्य' पीछा कर रहा है और प्रमुख व्यक्तियों तथा सत्तामें जो लोग हैं, उनकी मृत्यु को सूचित करता है। अनुवर्ती राष्ट्रोंमें असन्तोष विक्षोभ

षड्यन्त्र होंगे। कुछ समय बाद सोवियत आर्थिक तन्त्र संशोधित पूंजीवादका रूप धारण करेगा। जीवन संशयमें रहेगा। सूर्यग्रहणका रूस पर प्रभाव शुभ न होगा। रूसके चोटीके भाग्य-विधाताओंमें परिवर्तन होगा। १९५७ रूसके लिए महत्वपूर्ण वर्ष सिद्ध होगा।

राष्ट्र-कुल

ग्रेट ब्रिटेन—मन्त्रिमंडलमें परिवर्तन होगा और कंजर-वेटिव पार्टीके नेतामें परिवर्तन होना अपरिहार्य हो जायगा। लन्दनमें हत्यायें होंगी और परिवहनके क्षेत्रमें हड़तालें होंगी। अप्रैल-मईमें कोहरा होने से ब्रिटेनको कुछ जहाजों की हानि होगी। जिब्राल्टरके प्रश्न पर ब्रिटेन और स्पेनके मध्य तनाव रहेगा। मजदूर दलके नेताका प्रश्न विवादास्पद रहेगा। दक्षिण अफ्रीकाके साथ राजनैतिक सम्बन्धोंमें परिवर्तन होगा और रानीकी नाम-मात्रकी प्रभुत्वशक्ति भी प्रायः समाप्त हो जायगी। सूर्यग्रहणके प्रभावके कारण रेलवे और हवाई दुर्घटनायें होंगी। भारत और ब्रिटेनके सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण और पारस्परिक लाभपूर्ण रहेंगे, रूसके साथ नया व्यापार करार होगा। इस वर्ष ब्रिटेन, आन्तरिक प्रश्नोंकी अपेक्षा बाह्य प्रश्नोंके कारण अधिक चिन्तित रहेगा।

कनाडा—तोड़-फोड़ करने वाला दल सरकारको उलटनेका प्रयत्न करेगा। जनता प्रसन्न और समृद्ध होगी। अमरीकाके साथ महत्वपूर्ण व्यापारिक करार होगा। फसल अच्छी होगी, पर निर्यात कम हो जायगा।

दक्षिण अफ्रीका—दक्षिण अफ्रीकाका स्वतंत्र गण-राज्य होनेका स्वप्न तीन वर्षमें पूरा होगा। एक मंत्रीका देहान्त हो जानेसे सरकारका पुनर्गठन होगा।

आस्ट्रेलिया—अनेक खान दुर्घटनायें होंगी। श्रम-समस्या गम्भीर होगी। विदेशी व्यापार असन्तोष जनक रहेगा। सरकारके अन्दर महत्वपूर्ण परिवर्तन होंगे। सूर्यके मेषमें आने पर भारी जन-क्षय होगा। भारतसे व्यापार करार होना संभव है। मई-जूनमें तीव्र राजनीतिक गीति उत्पन्न होगी। भेड़-पालकोंके लिए वर्ष समृद्धि कारक है। प्रशान्तके मध्य-अणुपरीक्षण होनेसे आस्ट्रेलियाके तट पर भूकम्पीय गड़बड़ होगी।

न्यूजीलैंड—[illegible] आंधियां आवेंगी। गुप्त षड्यंत्र कठोरतासे दबा दिये जायेंगे। देश समृद्ध होगा।

यूरोप

फ्रांस—फ्रेंच साम्राज्य और अभी क्षीण होगा! उत्तरी अफ्रीका परसे उसका प्रभुत्व घटेगा। सरकारमें बार-बार परिवर्तन होंगे। श्रम अशान्ति रहेगी। बृहस्पतिके सिंह के पास पहुंचते-पहुँचते राजतंत्री सरकारकी ओर देशमें प्रवृत्ति बढ़ेगी। जनरल डी. गालेका भाग्य फिर फिरेगा। राजनीतिक उथल-पुथल चालू रहेगी।

जर्मनी—ऐक्य जर्मनीके बारेमें चारों राष्ट्रके प्रयत्न सफल न होंगे। जर्मनीका व्यापार अच्छा रहेगा। व्यवसाय और उद्योगमें जर्मनी पुनः अपना स्थान प्राप्त करेगा। भारत और जर्मनीके बीच व्यापारिक करार होना सम्भव है, बॉन और वाशिंगटनके बीच सम्बन्ध बढ़ेगा। अमरीकाकी सहा-यतासे जर्मनीका शस्त्रीकरण होगा। अमरीकी सेनाका कुछ भाग अमरीकासे हटेगा। सारकी विषम समस्या बनी रहेगी। ब्रिटेनके पूर्णतः यूरोपसे सम्बन्ध रखने पर जर्मनी और फ्रांस के बीच मैत्री बढ़ेगी।

तुर्की—तुर्की पश्चिमी राष्ट्रोंके साथ घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करेगा। रूसका सन्धि-प्रस्ताव ठुकरा देगा। वर्ष के मध्य तुर्कीका नया प्रेज़ीडेंट होगा। १९५५ से १९५७ तकका समय सतर्क दृष्टि रखनेकी अपेक्षा करता है।

मध्य पूर्व

मिश्र—मिश्र विश्व-शांतिके लिए गोला बारूद सिद्ध होगा। आन्तरिक संघर्ष उग्र होंगे। नसरको उसका विश्वस्त साथी ही पदच्युत कर देगा। अमरीका मिश्रके साथ करार करेगा। मिश्रके प्राचीन इतिहास और संस्कृति पर प्रकाश डालने वाले नवीन पुरातत्व सामग्री प्राप्त होगी। दक्षिण ईरानमें उपद्रव होंगे। तेल शुद्ध करनेके उद्योगमें रूसको सम्मिलित करनेका प्रस्ताव ईरान न मानेगा। ईरान के शाहकी कठिनाई बढ़ेगी। इजराइलकी समृद्धि बढ़ेगी, उसकी आर्थिक स्थिति दृढ़ होगी। पर मिश्रके साथ झगड़ा बना रहेगा। ईरान, ईराक और सीरिया अधिकाधिक अमरीका की ओर भी आकृष्ट होंगे। मध्यपूर्वमें आन्तरिक संघर्ष तीव्र रूप धारण करेगा। ईरान और मिश्रमें विशेष रूपसे पुराने नेताओंकी जगह नये नेता लेंगे। शनिराहुकी युति तक यह विप्लव बना रहेगा।

सुदूरपूर्व

जपान—राजनीतिक अस्थिरता बनी रहेगी। लोकतन्त्रकी आड़में अधिनायकपूर्ण शासन स्थापित करनेका प्रयत्न किया जायगा। जापानका व्यापार आस्ट्रेलिया और भारतके साथ बढ़ेगा। अमरीका द्वारा जापानका शस्त्रीकरण किया जायगा। जून दिसम्बरके मध्य जापान पर भूकम्प, तूफान आदिके रूपमें दैवी प्रकोप होगा। सम्राट मिकाडो गुरु दशाके अन्तमें है। फुफ्फुसका कष्ट होनेकी सम्भावना है। हिरोहीतो 'साढ़े साती' के तीसरे दौरमें है।

हिन्द-चीन—वियतमिन्ह द्वारा जनीवा-सन्धि भंग की जायगी। यह १९५५ के मध्य होगा। राजनीतिक अशान्ति रहेगी। अकाल और महामारीके कारण भारी मात्रामें जन-क्षय होगा। कम्बोडियाके शासकको अपनी सुरक्षाका ध्यान रखना चाहिए।

दक्षिण अमरीका

ब्राजीलका प्रेजीडेंट प्रतिकूल प्रभावमें आयगा। वर्तमान सरकारको पलटनेका यत्न किया जायगा। ब्राजील और मेक्सिकोमें भूकम्प और ज्वालामुखीका विस्फोट होगा। अर्जेण्टायनामें प्रकृतिका प्रकोप उसके नगरों और तटवर्ती प्रदेशमें दिखाई देगा। धीमा भूकम्प आयगा। क्यूबामें क्रान्तिका होना सम्भव है। सूर्यग्रहणके बाद मेक्सिकोमें राज्य विप्लव होना सम्भव है।

सं. २०१२ में विश्व युद्धका कोई भय नहीं है। जूनसे अगस्त तकका समय संकटपूर्ण है। मध्यपूर्व और सुदूरपूर्व अत्यधिक उत्तेजनापूर्ण ग्रहोंके प्रभावमें आ रहे हैं। १३-१०-१९५६ के बाद सुदूरपूर्व और आग्नेय एशियामें प्रभाव क्षेत्रके लिए चीन और रूसकी अमरीकाके साथ प्रतियोगिता होगी। बृहस्पतिके प्रभावके कारण और कुछ वर्षों तक अमरीकाका प्रभाव बना रहेगा।



श्रीगुरुपीठ-यात्रा



[कविकुलगुरु महामहोपाध्याय श्री पं० नारायण शास्त्री खिस्ते]

इस लेखको आरम्भ करनेके पूर्व मेरे परम पूज्य श्री गुरुदेवके सम्बन्धमें भी पाठकोंको कुछ जानकारी करा देना आवश्यक है। यों तो प्रत्येक गुरुभक्त शिष्यको अपने गुरुदेवका अभिमान होता है, वह अपने गुरुको सबसे बड़ा विद्वान् महान् सिद्ध, कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुं-समर्थ समझता है। गुरु भक्तिकी दृष्टिसे यह अयोग्य भी नहीं कहा जा सकता। फिर भी वस्तुस्थिति पर प्रकाश डालना उचित ही है।

मेरे परम पूज्य गुरुदेवका शुभनाम श्री रघुनाथ शास्त्री गोडबोले, श्री गोडबोले महाराज था। ये दाक्षिणात्य चित पावन ब्राह्मण तैत्तिरीय शाखाके थे। इनका विस्तृत चरित्र जब लिखूंगा तब इनके विषयमें विशेष परिचय तथा इनसे मेरा सम्बन्ध कैसे हुआ इत्यादि बातें विस्तारपूर्वक लिखूंगा। अभी केवल इतना ही लिखता हूं कि ये महान् ब्रह्मनिष्ठ श्रुति स्मृति आगमादि शास्त्रोंमें परम प्रवीण महान् सिद्ध पुरुष थे। इनको शिवत्व लाभ किये आठ वर्ष हो गये हैं।

प्रायः तीन सौ वर्ष पूर्व शालिवाहनशक १६०० में श्री भास्करराय भारतीय दीक्षित नामके एक महान् विद्वान् सभी शास्त्रोंमें ग्रन्थकार, महान् सिद्धपुरुष हो गये हैं, इनको श्री आदि शंकराचार्यका अंशावतार कहा गया है। शिवरहस्य ग्रन्थमें इसका प्रमाण उपलब्ध है।

भगवान् आदि शंकराचार्यजीने शिवादि गुरुपारंपर्य से चली हुई शुद्ध वैदिक साम्बसदाशिवोपासना—श्रीचक्रोपासना—को परिमार्जित किया, उसी उपासनाके सम्प्रदाय को श्रीभास्करराय भारती दीक्षित महाराजने अनेक ग्रन्थ निर्माण द्वारा तथा शिष्य सम्प्रदाय द्वारा परिपुष्ट किया। मेरे पूज्य गुरुदेव श्रीभास्कररायजी महाराजसे दीक्षाक्रममें नववें पुरुष थे। हम गुरुभक्त शिष्योंकी यह प्रबल धारणा है कि जैसे श्रीभास्कररायजी महाराज भगवान् आदि शंकराचार्यके अंशावतार ही थे, वैसे ही हमारे पूज्य गुरुदेव भी श्रीभास्कररायजी महाराजके अंशावतार ही थे और उनके कार्य शेषोंकी पूर्तिके लिये ही आये थे। वस्तुतः

वे जीवनमुक्त ब्रह्मनिष्ठ थे। उनका थोड़ा भी सत्संग सौभाग्यसे जिन्हें प्राप्त हुआ, उन सब सज्जनोंको यही धारणा होती थी। हम शिष्य वर्ग तो उनके अन्तरंग सत्संगमें रहते थे, अतः हम लोगोंकी यह धारणा हो इसमें आश्चर्य ही क्या हो सकता है?

मेरे पूज्य गुरुदेवने जीवनमें कभी किसीकी नौकरी नहीं की, न किसीके वे आश्रित रहे। मेरे परम गुरुदेव नांदेड़ क्षेत्र निवासी श्री नागेश शास्त्री जोशीजी महाराजसे पूर्ण दीक्षा प्राप्त कर गुर्वाज्ञासे सम्प्रदाय प्रसार करनेके लिए निकले। बम्बई और बड़ौदामें वे चिरकाल तक रहे, वहीं तथा अन्यत्र भी उनके सैकड़ों शिष्य, शिष्यायें हैं, वैसे भी गुरुदेवके परम भक्त हैं। श्रीगुरुदेवका गार्हस्थ्य निर्वाह भी वे लोग ही यथाशक्ति करते थे और अभी भी कर रहे हैं।

श्रीगुरुदेवने पूर्ण दीक्षा प्राप्तकर गुर्वाज्ञासे श्रीजगदम्बाका प्रत्यक्ष दर्शन प्राप्त करनेके लिये विशेषानुष्ठान किया, उन्हें जगदम्बाने परिकर सहित पूर्ण दरबारका दर्शन दिया। श्रीगुरुदेवने अपने एक शिष्य जो अच्छे चित्रकार थे उनमें बलसे विशेष शक्ति संचार कर उनके द्वारा स्वयं देखे हुए जगदम्बाके दिव्य रूपका चित्र लिखाया, जो कि १॥ वर्षमें पूरा हुआ। महाकामेश्वराङ्कस्था पञ्चप्रेतासनासीना श्रीराजराजेश्वरीदेवीका वह दिव्य चित्र वस्तुतः अत्यन्तः अद्भुत है।

श्रीगुरुदेव पूर्व जीवनमें बंबई बड़ोदा आदि नगरोंमें अधिकतर रहते थे, आगमके विशेषतः श्रीविद्या-सम्प्रदायके दुर्लभ ग्रन्थोंका संग्रह करनेके लिये श्रीगुरुदेवने सम्पूर्ण भारतवर्षकी कई बार यात्रा कर अनेक दिव्य दुर्लभ ग्रन्थोंका संग्रह किया, कश्मीर तथा नेपालकी भी यात्रा की, वहां भी उनके अनेक शिष्य शिष्यायें हैं।

हमारा यह गुरु सम्प्रदाय भगवान् शंकराचार्यकी गृहथ शिष्य परम्पराका है। 'विद्यार्णव' नामक श्रीशङ्कराचार्यके साक्षात्प्रशिष्य श्रीविद्यारण्यजीके बनाये हुए ग्रन्थमें श्रीशङ्कराचार्यजीके गृहस्थ-शिष्य परम्पराका 'गृहिणो नव' उल्लेख है। कालक्रमसे श्रीभास्कररायजीके समयमें गृहस्थ-शिष्य परम्परा दक्षिण भारतमें उच्छिन्नप्राय थी। गुजरातमें सूरतमें उस परम्पराके एकमात्र अवशिष्ट पुरुष महान् सिद्ध योगी श्रीशिवदत्त शुक्ल, दीक्षानाम प्रकाशानन्दनाथ थे। श्रीभास्कररायजीने दक्षिण भारतसे सूरत जाकर उनका प्रसाद प्राप्त कर उनसे पूर्णाभिषेक दीक्षा प्राप्त की। श्रीललितासहस्रनाम भाष्यमें श्रीभास्कररायजीने "यश्च श्रीशिवदत्त शुक्ल चरणैः पूर्णाभिषिक्तोऽभवत्" कहते हुए उनका आदर पूर्वक उल्लेख किया है। श्रीभास्कररायजीका जीवनचरित्र श्रीगुरुदेवकी विशेषाज्ञासे हिन्दीमें तथा 'श्रीभास्करचरितचम्पू' नामसे संस्कृतमें लिख रहा हूं। उसमें यह सभी बातें सप्रमाण सविस्तर दी जायेंगी।

श्रीभास्करराय चरित्र लिखनेकी सामग्री संग्रह करनेके लिये ही मैंने यह गुरुपीठ यात्रा की, यथाशक्ति सामग्री संग्रह हो गया है, अब लेखनकार्य भी आरम्भ हो गया है। अब अति संक्षेपमें इस परम्पराका विशेष महत्त्व दिखाता हूँ। श्रीशंकराचार्यकी गृहस्थ शिष्य परम्परामें दीक्षित श्रीभास्करराय भारती दीक्षित, दीक्षा नाम श्रीभासुरानन्दनाथ महाराजके मुख्य शिष्य श्रीउमापत्यानन्दनाथका स्थान 'वसुमति'में है। महाकवि दण्डीने अपने दशकुमार चरितमें जिस 'वसुमति'का उल्लेख किया है, वही यह वसुमति है। वहां पर श्रीभास्कररायजी महाराज द्वारा स्थापित पूजित श्रीचक्र अभी भी वर्तमान है। वह गृहस्थोंका घर होते हुए भी 'श्रीशंकराचार्य मठ' कहा जाता है। वहां पर उस परम्पराके अनेक महात्माओंकी समाधियाँ भी हैं।

मेरे गुरुदेव श्रीरघुनाथ शास्त्री गोडबोलेजी महाराज—दीक्षानाम—श्रीमदम्बानन्दनाथ महाराज—श्रीभास्कररायजीसे दीक्षाक्रममें नवम पुरुष थे। श्रीगुरुदेवने अपनी वृद्धावस्थामें अपने गुरुदेव, हम लोगोंके परमगुरुदेव—श्रीनागेश शास्त्री जोशी दीक्षानाम श्रीभूमानन्दनाथ महाराजकी विशेषाज्ञासे बुलढाणा (मध्य-प्रदेश) में भूमि लेकर घर बनाया और वहां पर पीठ स्थापना की। पूर्वोक्त श्रीराजराजेश्वरीके दरबारके चित्रकी भी वहीं पर सविधि प्राणप्रतिष्ठा की गयी है।

इस प्रकार भगवान् आदि शंकराचार्यजीसे अविच्छिन्न चली हुई उनके गृहस्थ शिष्य-परम्पराका मुख्य पीठ बुलडाणामें ही है। श्रीगुरुदेव बुलढानाको 'बल-स्थान' कहा करते थे। बल भी गुरुका, अतः 'गुरुबल स्थान' उस पीठ का नामकरण हुआ है।

वास्तवमें इस परम्परामें गुरुरूपसे ही श्रीपरदेवताकी उपासना की जाती है। श्रीशंकराचार्यजीका दक्षिणामूर्ति

स्तोत्र प्रसिद्ध ही है, जिसमें प्रत्येक श्लोकके अन्तमें 'तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये' ऐसा उल्लेख किया गया है। श्रीशंकराचार्यके बाद उनके अंशावतार श्रीभास्कर रायजीका भी गुरुस्तोत्र नीचे दे रहा हूँ—

जय नाथ जय नाथ जय सद्गुरुमूर्ते !
हर मम मतिमिहवार्ते परिहृत भव जूर्ते ! जयनाथ०
उन्मन्या अपि परतो निवसस्यति कूटे,
दशशतदल सरसीरुह शशिमय करहाटे।
अकथादिक रेखात्रिक कलिते शृङ्गाटे,
अन्तःकोणत्रयगत लक्षहमय पीठे । जयनाथ०
नाथ ! वराभयवितरणमुद्राकलितकरा,
न भवति देवान्तरवन्मम देवी त्रिपुरा।
तन्मुद्रे तदभिन्ने त्वयि सति किमिति परा,
तस्माद्देशिकवर मयि कथमिव जन्मजरा। जयनाथ०
तव पादाम्बुज मध्वास्वादनतो बुद्ध्वा
योनेमुद्रांबध्वा पवनावपि रुध्वा ।
अहमभवं शिववध्वा वेशोत्थषडध्वा,
मर्शत्यक्त कदध्वा भास्कर सहयुध्वा ॥
जयनाथ०

अन्तिम पदमें 'भास्कर सह युध्वा' श्रीभास्कररायजी ने अपनेको कहा है, इसकी एक ऐतिहासिक कथा है, जिसका विवरण 'श्रीभास्करराय-चरित्र' में किया जायगा । अब मेरे गुरु देवजीने जो अनेक गुरु-स्तोत्र रचे हैं, उनमेंसे एक नीचे देता हूँ—

मन्मुखे तवास्तु गुरो ! नाम नाम नाम नाम ।
यद्भक्तगणैर्मर्दितं नाशयत्यखिल दुरितम् ॥
न तथाशक्तं गीतं साम साम साम साम ।
मन्मुखे० ॥१॥

मानसरूपं मत्तं वृषभं त्वतिदुर्वृत्तं ॥
तत्तं निवारयति दाम दाम दाम दाम ।
मन्मुखे० ॥२॥

नेच्छति सन्तुष्टमना राघुस्त्वत्स्मृतिं विना।
सैवाखिल सौख्यानां धाम धाम धाम धाम ॥
मन्मुखे० ॥३॥

अन्तिम पदमें 'राघु' गुरुदेवकी सैंकड़ों गीतियोंमें सांकेतिक नाम है। श्रीगुरुदेवका नाम रघुनाथ था, उनकी माता उनको दुलारसे 'राघु' कहा करती थी । मराठी भाषामें 'राघु' शुकको कहते हैं, अतः श्रीगुरुदेवको यह मातृ प्रदत्त नाम बहुत प्रिय था। इस प्रकार इस मेरी गुरुपीठ-यात्रा का यह संक्षिप्त वृत्तान्त है । श्रीभास्कररायजीके चरित्रमें विस्तारसे सभी बातोंका वर्णन किया जायगा।

आज हम गुरु भक्त शिष्योंको तो बुलढाना—श्रीगुरु बल स्थान—आदिशंकराचार्यकी अविछिन्न परम्पराका एकमात्र महान् क्षेत्र है ही। इधर भक्तजन भी यहां आकर श्रीजगदम्बाका दिव्य-दर्शन तथा प्रसाद प्राप्त कर अपने मानसिक मनोरथकी पूर्णता प्राप्त करते हैं।

यहां पर हमारी पूजनीया माताजी तथा दो पुत्र तीन पुत्रियां और ज्येष्ठ गुरुबन्धु वयोवृद्ध वेदमूर्ति हेरंब भट्टजी यथाशक्ति श्री गुरुदेवकी आज्ञानुसार पीठ सेवा कर रहे हैं। श्री राजराजेश्वरीके भक्तोंको जीवनमें एक बार इस पीठका अवश्य दर्शन करना चाहिए।

—

गुड़की त्रैमासिक व्यापार व्यवस्था

[श्री० पं० हंसराजजी 'कपिल' ज्योतिषाचार्य]

ता० १७ मार्चसे ५ अप्रैल तक गुड़ तेज । ता० ६ अप्रैलको मंदा। ७ अप्रैलको तेज। ता० ८ से १५ अप्रैल १९५५ तक मंदा। ता० १६ से २५ अप्रैल तक तेज। ता० २६ अप्रैलसे २ मई तक घटा-बढ़ी । ता० ३ मईसे २५ मई तक तेज। ता० २६ से ३१ मई तक घटाबढ़ी। ता० १ से ५ जून तक मंदा। ता० ६ से २१ जून तक विशेष तेजी। ता० २२ जून से ६ जुलाई तक गुड़ मंदा रहेगा। इसके पश्चात् गुड़ भाव घटा-बढ़ीके बहावमें बहता जायेगा। सभी वस्तुओं पर विशेष सूक्ष्म विचार आगामी अङ्कमें दें।

—



"श्रीस्वाध्याय" वी० पी० से नहीं भेजा जायेगा।



ज्योतिष-विज्ञान

[ले०—श्रीहंसराजजी कपिल ज्योतिषाचार्य]

प्राचीन युगकी घटना है। विज्ञानका विषय था। तत्त्वदर्शी महर्षियोंकी सभा भरी थी। ज्योतिषमयी समस्या क्षण-क्षणमें टेढ़ी खीर बनती जा रही थी। चलते-चलते अन्तमें उन दिव्यात्मक स्थानों पर पहुंचे जो कि सृष्टिके विधानके मूलाधार थे। जो कि हिमानी (बर्फानी) तथा आग्नेय-मण्डलके अधिष्ठाता हुए हैं। जिनसे रात तथा दिन का निर्माण हुआ करता है। दूसरे शब्दोंमें जो चन्द्रमा तथा सूर्यके नामसे विख्यात हैं।

चन्द्रमा रसादिक पदार्थोंका उत्पादक है। यह बात सर्व विदित ही है। इसके आधार पर ही प्रायः रक्त स्नायु,, मज्जा, मांस, अस्थि तथा शुक्र आदिका प्रतिपादन होता रहता है। यह समस्त ग्रहोंकी अपेक्षा लघुतम माना गया है। जिसकी दूरी पृथ्वी से केवल २४०००० मील मानी गई है। अतएव शीत तथा शान्ति-प्रिय होनेसे इसे "चन्द्रमा-मनसो जातः" मनका देव भी माना गया है।

दूसरी ओर प्रखर किरण सविता देव अग्नि मण्डलका अधिष्ठाता कहा गया है, जो कि यहां से ९२४०००० नौ करोड़ २४ लाख मीलकी दूरी पर देदीप्यमान है, जिसका कार्यक्रम अत्यन्त विस्तृत रूप से है। जो कि अखिल रसादिक पदार्थोंको निज प्रचण्ड तेजोमय शक्तिसे परिपक्व तथा पुष्ट करता रहता है। जिस कारण इसको "भौमार्कीज्य विहीन मध्यम रविः स्यादाशुकेन्द्रं तु विद्भृग्वोरुक्तमिदम्" इस उक्ति से आशुकेन्द्र भी कहा गया है। अतएव रसादिक पदार्थोंके पालन-पोषण कारण अथवा सर्वत्र प्रकाश प्रदान करनेसे इसको [सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च] वैदिक मतके अनुसार आत्माकी उपाधि भी प्रदान की गई है। इसके उपरान्त इतेरतर बुध, शुक्र, भौम, गुरु तथा शनैश्चर प्रभृति ग्रहोंका अन्वेषण किया गया। क्योंकि इन सबका सम्बन्ध सूर्यके साथ दीख पड़ता था, अतः समुच्चयरूपेण यह सूर्य भगवान्का परिवार माना जाने लगा, तथा गुण, कर्म, स्वभावके अनुसार इन्हें ग्रह संज्ञा प्रदान की गई। एवम् इनके क्षत्रियादि वर्ण, पुरुषादि लिंग, चतुरस्रादि आकार, मध्याह्नादि समय, प्रागादि दिशाएं, स्वर्णादि धातुएं, चतुष्पादादि पाद, उग्रादि स्वभाव, सत्वादिगुण, तिक्तादि रस, पित्तादि अन्तर्दोष, वृद्धादि अवस्था, पाटलादि वर्ण, मूलादि धातुएं तथा वन आदि स्थानोंकी भी देख रेखकी जाने लगी। जिनका पूर्णतया परिचय जरायुज सृष्टिसे उपलब्ध होता है। इस समस्त देव मण्डलकी गति, पूर्वाभिमुखी होनेसे, देश, नगर और ग्रामोंकी प्रगति पूर्वकी ओरसे अग्रसर होने लगी।

इसके विपरीत आसुरी मंडलकी गति पश्चिमाभिमुखी होनेसे देश, नगर और ग्राम पश्चिमकी दिशाकी ओरसे नष्ट-भ्रष्ट होते दीख पड़ने लगे। जैसा कि अब भी यही बात अनुभवकी कसौटी पर पूर्ण रूपेण उतारू है। इसे भूमण्डल के नामसे भी पुकारा गया है। क्योंकि इस मण्डलके संचालक आसुरी शक्तिके नायक राहुजी महाराज हैं। 'राहु कुभामण्डलगः शशाङ्कम्' इत्यादि प्रमाणोंसे पृथ्वी मण्डलकी छायाको [सर्पाकार] राहु माना गया है। सांप जिस ओर मुख उठाएगा, उस ओर ही अपनी विनाश सूचक विषैली ज्वालाओंको प्रसारित कर देगा, यह उसका स्वभाव ही है। अतः इसके पश्चिमाभिमुखी होनेसे उधरके देश, नगर तथा ग्रामोंका विध्वंस प्रायः होता ही रहता है। इसका प्रमाण तो इसके असुर पदसे ही मिल जाता है, जो कि अपनी सार्थकताको प्रकाशकी भान्ति स्पष्टतया प्रकट कर रहा है। इसीलिए यह देवताओंका पूर्ण शत्रु प्रख्यात है। इसी प्रकार शेष सात ग्रहों पर भी आलोचना करते समय इनकी परस्पर मित्रता, समता, तथा शत्रुता देख-रेखमें आती है। पर यदि इनके निज-निज मण्डलस्थ पदार्थोंकी तनिक मात्र छान बीन की जाए, तो इनके विरोध आदि स्वभावका पूर्णतया परिचय मिल जाना कोई बुद्धिसे बाहरकी बात न होगी। जैसा कि शुक्रके मण्डलमें पारा आदि पदार्थ पाये

जाते हैं तथा पारा कभी अग्निके मध्यमें स्थित नहीं रह सकता, यह बात किसीसे अविदित नहीं है। अतएव अग्नि मण्डलके अधिष्ठाता सूर्यदेवका [पारे मण्डलका नायक] शुक्र शत्रु कहा गया है। ऐसे ही और लीजिए, सूर्य मण्डलमें सोना पाया जाता है, तथा गुरुके मण्डलमें भी सोने की खानें पाई जाती हैं। इसके अतिरिक्त चन्द्र मण्डलमें चान्दीकी खानें पाई जाती हैं यह सब जानते ही हैं, कि चान्दी स्वर्णके रूपमें परिणत हो जाती हैं, जिसका ज्ञान हमें रसायन विद्या द्वारा प्राप्त होता है। अतः एक रूपताके नातेसे इन तीनोंकी पारस्परिक मैत्री बखान की गई है। एवं बुधके मण्डलमें कली होनेसे वह चन्द्रमाका शत्रु कहा गया है। क्योंकि यदि पिघलती हुई चान्दीमें कली धातुको डाल दिया जाए, तो वह तत्काल छिन्न-भिन्न हो जायगी। इसी विचारधारा पर बुधको चन्द्रमाका शत्रु कहा गया है। परन्तु यदि संशोधित तथा द्रवीभूत कलीमें चान्दी (पिघली हुई) को मिला दिया जाए तो वह सर्वथा परिष्कृत कली भी उस चान्दीके रंगमें रंगी जायगी। इसी हेतु चन्द्रमाका बुध मित्र माना गया है। एवं अन्यान्य ग्रहोंकी भी पारस्परिक मित्रता तथा शत्रुता विचार लेनी चाहिये। जिन ग्रहोंकी मण्डलस्थ धातुएं न किसीको चार चांद लगा सकती हों तथा न ही किसी पर आंच ला सकती हों, वहां पर ग्रहोंकी समता प्रतिपादन की गई है।

स्मरण रहे, न केवल चन्द्रमासे समुद्रमें ज्वारभाटा, तथा सूर्यसे जगत्में भस्मसात् कारी अग्नि प्रकोप ही आते हैं, अपितु ग्रहोंके पारस्परिक संघर्षसे हो रहे भीषण भूकम्प, प्रदेशोंकी जलमें उमड़ती हुई बाढ़ोंमें विलीनता, भयंकर तूफान ला देने वाली वृष्टियोंकी भरमारें तथा आंधियोंकी सनसनाती हुई झकझोरें तक भी रह-रह कर जनताको आश्चर्य चकित करती हुई दृष्टिगोचर होती हैं।

यह सभी जानते हो हैं कि सकल जगत् ३६० अंशों पर आधारित है। हमारे महर्षियों ने ६० अंशोंके अन्तर पर खगोलको चार भागोंमें विभक्त कर दिया। जिसमें पूर्वसे पश्चिमकी ओर जाने वाली रेखाका नाम "विषुवती रेखा" रखा गया, तथा दक्षिणीय ध्रुव अर्थात् लङ्कासे उत्तरीयध्रुव अर्थात् सुमेरु पर्वत पर्यन्त चित्रित रेखाका नाम 'मध्य-रेखा' नियत किया गया। कई लोगोंका मत है कि 'हिरण्यगर्भ-समवर्ततात्रे' इस उक्तिके अनुसार सहस्रकिरण भगवान् सूर्य देवका उदय स्थान पूर्व दिशाके लिए ही आता है। अतः विश्व-पति विराटस्वरूप भगवान्से प्रचलित रेखाका नाम 'विषुवती रेखा' पड़ गया और इसको मध्यमें काटने वाली रेखाको 'मध्य' रेखा'के नामसे कहा जाने लगा। जो कि ग्रहोंके यातायातका पथ है। निरक्ष लङ्का प्रदेशसे सुमेरु पर्यन्त १२ अंश ५१ कलाके अन्तरसे शनि, गुरु, भौम, रवि, शुक्र, बुध, तथा चन्द्रमा क्रमशः सात स्वामी माने गए हैं। जिनकी सत्ता परस्पर ६० अंशोंके अन्तर पर अनुभव होती है। इनमें जब शत्रु ग्रहोंकी आपसकी युति बन जाती है तो उन ग्रहोंसे प्रभावित प्रदेशोंमें अर्थात् मध्यरेखासे दक्षिण पार होनेसे पाश्चात्य देशोंमें तथा उत्तर पूरा होनेके कारण पूर्वके देशमें ऐसे-ऐसे भयंकर उत्पात उत्पन्न हो जाते हैं कि जिनका वर्णन करना लेखिनीकी शक्तिसे बाहरकी बात है। स्थान-स्थान पर महायुद्धोंके अनलकुण्डोंमें गिरती हुई लाखों प्राणियोंकी आहुतियां, लूट मारके बाजारोंकी सरगर्मियाँ, अराजकताके बवण्डर तथा जनता का क्रान्तिकारी युगको आमंत्रित करना आदि, न जाने जनताको कैसी-कैसी आध्यात्मिक आधिभौतिक तथा अधि-दैविक विपत्तियोंका शिकार होना पड़ता है।

सन् १९१४ की घटना है, जब कि ३९ अंशसे ५२ अंशके भीतर सूर्यके मण्डलमें देवासुर महामन्त्री शुक्र तथा बृहस्पतिकी युति हुई थी। जिसका परिणाम योरूपके रमणीय खण्डहरोंके स्तूपोंसे स्पष्टतया झलक पड़ता है। एवम् सन् १९३९ में दूसरी युति हुई थी। जिसका फल सूर्य, शनि तथा भौमके प्रदेशोंमें देखा गया। उसी समयमें १०० वर्ष पर्यन्त एक नक्षत्रमें रहने वाले, सप्तर्षियोंके परिवर्तनके सन्धि कालका सूत्रपात भी हुआ था, जो कि अब सन् १९५७ से १९६० की समाप्ति तक द्वितीय नक्षत्रमें प्रवेश कर जाएंगे। जिसमें अपने संचारके अन्तिम दृश्यका पट परिवर्तन स्पष्ट-तया प्रकट कर देंगे।

केन्द्रोंकी रूप रेखा

ऊपर लिखा जा चुका है कि हमारे महर्षियोंने खगोल को ६०, ६० अंशों अर्थात् तीन-तीन राशिके अन्तरसे चार भागोंमें विभक्त किया है, जिनको हमारे माननीय श्री वराह-मिहिराचार्यजीने केन्द्रोंके नामसे माना है, जिनका विलक्षण प्रभाव प्रत्येक प्राणीको चकाचौंध पैदा कर देता है। प्रायः

देखा गया है; कि यहां केन्द्रोंका आरम्भ होता है अर्थात् जिस मनुष्यकी कुण्डलीमें जन्मलग्नमें केन्द्रोंकी प्रारम्भिक राशियां, मेष, कर्क, तुला तथा मकर राशियोंमेंसे यदि कोई राशि हो, उस कुण्डली वाले मनुष्यका मकान सदा गली, कूचे तथा बाजारके कौनेमें होगा। जहां केन्द्रका अन्त होता है अर्थात् ६० से ६० अंश पर्यन्त होने वाली मिथुन, कन्या, धनुः तथा मीन राशियोंमेंसे यदि कोई राशि लग्नमें हो, तो उस मानवका घर गली, कूचे, या बाजारके अन्तमें होगा। इनसे शेष केन्द्रोंके मध्यभागको प्राप्त करने वाली वृष, सिंह, वृश्चिक तथा कुम्भ राशियोंमेंसे कोई राशि यदि किसीके लग्नमें हो, तो उस नरका मकान वा बैठक आदिका गली वा बाजारके मध्यमें होना अनिवार्य है। इन्हीं केन्द्रोंके आदि मध्य तथा अन्तके अनुसार चर, स्थिर और द्विस्वभाव राशियां संज्ञारूपेण प्रतिपादित की गई हैं। इन्हीं १२ राशियों को हमारे महर्षियोंने दो भागोंमें बांट कर एक उत्तरीय गोल और दूसरेको दक्षिणीय गोलके नामसे कहा है। जिनके कारण कुछ विशेषता पाई जाती है, कि चर राशियोंमें मेष तथा कर्कके उत्तरीय गोल होनेसे, गलीका प्रथम घर होगा और दक्षिणीय गोलमें चर राशियोंमें तुला मकरके लग्न होनेसे गलीके अन्तमें घर होगा। इसके अतिरिक्त स्थिर राशियोंमें सिंह राशि जो कि गलीके मध्यमें आती है, उस मानवके घरके बाह्य द्वार दो होते हैं। इसका कारण यह है, कि प्रत्येक पशुके गमागमका द्वार-स्थान प्रायः एक ही हुआ करता है। परन्तु सिंहकी प्रकृति दूसरे चौपायोंसे भिन्न प्रकारकी है। वह जिस पथसे गुफामें प्रवेश करता है, उसमें से वापस नहीं लौटता। प्रत्युत दूसरे किसी द्वार-पथसे बाहर निकलता है। अतएव सिंहराशि वाले मानवके बाह्य द्वार दो होंगे। यह उसकी प्रकृतिकी विशेषताका फल है। यह तो रही आकाश गोलकी बात, अब भूगोलकी ओर चलिए। शास्त्रकारोंका कथन है "यथा ब्रह्माण्डे तथा पिण्डे"। भाव यह है कि इन सात ग्रहोंका पांचभौतिक मानव शरीरसे घनिष्ठ सम्बन्ध है। सूर्यका आत्मासे तथा चन्द्रमाका मनके साथ होने वाला संबन्ध तो वेदोंमें भी प्रतिपादित है। शेष पांच ग्रहोंके प्रति श्रीवराहमिहिराचार्यजीने बड़े अनूठे ढंगसे वर्णन किया है। वे वृहज्जातकमें लिखते हैं—"शिखि-भू-ख-पयो-मरुद्‌गणानामधिपा भूमिसुतादयः क्रमेण" अर्थात् आग्नेयंतत्वका मंगल, पार्थिवतत्वका बुध, आकाशतत्वका वृहस्पति, जलतत्वका शुक्र, तथा वायु तत्वका शनैश्चर नायक है। भौम-सूर्य सम्बन्धसे अग्निदाह, बुधके बलवान् होनेसे भूमि सुख, गुरुके बलवान् होनेसे बुद्धि-विकास, शुक्र के प्रबल होनेसे शारीरिक पुष्टि वा वृक्ष बनस्पति आदि जीवोंकी अधिकांश उन्नति [उत्पत्ति] के अतिरिक्त नदी, नालोंमें बाढ़ोंकी प्रबलता, शनैश्चरसे आन्धी, तूफान, आदिके भयावने उत्पात उठ खड़े होते हैं। इन्हींके विषय रूप, गन्ध, शब्द, रस, स्पर्शका प्रतिपादन निम्न प्रकारसे है। ज्ञानेन्द्रियोंमें आदान तथा कर्मेन्द्रियोंमें प्रदान होता है। इनमेंसे आकाशके गुण "शब्द"को ज्ञानेन्द्रियोंमें कान ग्रहण करते है और कर्मेन्द्रियोंमें "वाक्" शब्दका उत्पादन करती है। जो प्राणी वाणीसे मूक होगा, वह बृहस्पतिके दूषित होनेसे कानसे भी वधिर होगा। शनिसे ज्ञानेन्द्रियोंमें 'त्वचा' स्पर्शको ग्रहण करती है तथा कर्मेन्द्रियोंमें हाथ "वायु" को जन्म देता है। क्योंकि चलते समय हाथ स्वतः वायुको उत्पन्न करते रहते हैं। ज्ञानेन्द्रियोंमें "नेत्र" रूपको ग्रहण करते हैं और कर्मेन्द्रियोंमें पांव अग्नि [गर्मी] को पैदा करते हैं। कदाचित् चरणोंसे उत्पन्न हुई बिजली यदि दिमाग की ओर उमड़ पड़े, तो वही पागलपन ला देती है। ज्ञानेन्द्रियोंमें 'रसना' कटुतिक्तादि रसोंको ग्रहण करती है। कर्मेन्द्रियोंमें 'जननेन्द्रिय' 'मूत्र' का त्याग करती हैं। ज्ञानेन्द्रियोंमें 'नासिका' गन्धका ग्रहण करती है, तथा कर्मेन्द्रियोंमें गुदा, गन्धका परित्याग करती है।

"वैदिक विज्ञानमें ग्रहस्थिति"

"तस्मादेतस्मादाकाशः संभूतः, आकाशाद् वायुः, वायोरग्निरग्नेरापः, अद्भ्यः पृथ्वी समुत्पद्यते" इस वेद मन्त्रके अनुसार आकाश तत्वके स्वामी गुरुका मस्तिष्क पर, वायु तत्वके स्वामी शनैश्चरका फेफड़ों पर, अग्नितत्वके स्वामी भौमका जठराग्नि तथा यकृत् पर, जलतत्वके स्वामी शुक्रका मूत्राशय पर, पृथ्वी तत्वके स्वामी बुधका गुदा चक्र पर, शुभाशुभ ग्रहोंके दृष्टियोग सम्बन्धके बलसे सुख, दुख आदि प्रदान करने वाला प्रभाव पड़ता है। यथा—भौमके दृष्टि-योगसे ग्रस्त गुरुसे शिरमें व्रण, विस्फोटक तथा घाव आदि होते हैं। शनिसे शिरमें व्यथा तथा चोट आदि, राहुसे मूर्छा, और केतुसे उन्माद हो जाया करते हैं। किसी भी

भाग्यफल

[श्री पं० नेमिचन्द्रजी शास्त्री ज्योतिषाचार्य]

आश्विनमासमें जन्मे व्यक्तियोंका फलादेश

इस मासमें जन्मे व्यक्ति अत्यन्त दयालु, परोपकारी और संवेदनशील होते हैं। इनकी बुद्धि इतनी प्रखर होती है कि दुःसाध्य और असंभव कार्योंको भी बातकी बातमें सुसाध्य और संभव बना लेते हैं। मिल और बड़े बड़े कार्य्यालयोंके संस्थापक होते हैं। प्रत्येक वस्तुकी आलोचना विचक्षण दृष्टिसे करतेहैं। यद्यपि इन्हें थोक माल बेचनेकीअपेक्षा खुदरा माल बेचनेमें अधिक लाभ और सुविधा प्रतीत होती है, पर अधिकतर ये बड़े बड़े व्यापार ही करते हैं। ये सदा सिलसिलेवार और शांतिपूर्वक काम करना पसन्द करते हैं। बेतरीकेके अस्त-व्यस्त काम इन्हें पसन्द नहीं होते। कड़ाई इन्हें अधिक अच्छी जचती है, इसीलिए प्रत्येक कार्यको व्यवस्थित ढंगसे करनेका प्रयत्न करते हैं। दूसरोंको आदेश देना तथा उस आदेशका पालन कराना इनका स्वाभाविक गुण होता है।

इस मासमें उत्पन्न हुए व्यक्ति अच्छे स्कालर, पुरातत्त्व-वेत्ता, दार्शनिक, नैयायिक, ज्योतिर्विद् और विज्ञान-वेत्ता होते हैं। समझदार, सावधान अनुभवशील और कोमल प्रकृतिके व्यक्ति इस मासके जन्मे होते हैं। समाचार-पत्रोंका सम्पादन, भाषण शक्ति एवं तरह तरहके पम्फलेट आदि लिख कर

भावके स्वामी बृहस्पतिसे दूसरे भावमें शनि होनेसे उस घर वाला मूक होता है। शुभ ग्रहके दृग्योगसे लड़खड़ाती वाणी वाला होता है। क्योंकि कर्मेन्द्रियोंमें वाक्पति गुरुकी अपनी सत्ता नष्ट-भ्रष्ट हो जाती है। एवम् शनि भौम तथा केतुके समन्वय होनेसे फेफड़ोंमें व्रण हो जाया करते हैं। भौमके शनि तथा राहुसे दृष्टि योग सम्बन्ध होने पर जठराग्निमें मन्दता, और रक्तोत्पत्तिमें पूर्ण विराम लग जाता है। इतना ही नहीं, यदि चतुर्थ भावमें शनि हो, तो उदरमें वायु प्रकोप, तथा तिल्ली आदि रोग उत्पन्न हो जाया करते हैं। क्योंकि चतुर्थ घरका दूसरा नाम उदर स्थान भी तो है न। एवम् भौमके नीच होने पर प्रतिश्याय [जुकाम] आदि रोग उत्पन्न हो जाता है। इसका हेतु यह है कि भौम की नीचतामें अग्नितत्वका ह्रास हो जाया करता है। एवं शुक्रके सूर्य युक्त होनेसे नपुंसकता, भौम युक्त होनेसे उपदंश, शनिसे मूत्र निरोध, अथवा पथरी, तथा गुरुसे शोथ [सोजिश] हो जाते हैं। सन्तपनशील सूर्य जिस जिस ग्रह के साथ सम्बन्ध पैदा करता जायगा, उसी उसी को सन्तप्त करता जाएगा। एवम् सूर्य, बुधके साथ मिलकर मसूरिका शीतलता तथा चेचक आदि रोगोंको देता है। भौमसे खारिश, प्रावाहिक मरोड़ रक्त विकारादि, शनिसे विड्बन्ध अथवा गुर्दा आदि रोग होते हैं। गुरुसे शोथ (सोजिस) होती है। स्मरण रहे, राहुके भुजङ्ग रूप होनेसे जिस २ ग्रह से इसका सम्बन्ध पैदा होता जाएगा, उसके स्थानमें कीट आदिकी उत्पत्ति करता जाएगा।

अतः इन तात्त्विक वा तन्मात्राओंसे समुत्पद्यमान आधि तथा व्याधियोंके निवारणार्थ, चक्र, गदा पद्म तथा शंखके व्याजसे अग्नि, पृथ्वी, वायु तथा जल तत्वोंको समेटती हुई, भगवती चतुर्भुजा भूतेश्वरीको शास्त्रकारोंने उपास्य देवता कहा है। अतः—

धृत्वा करैश्चक्रगदाब्ज शङ्ख,
मिषेण वह्नि क्षिति वारि वातान्।
श्रीः सच्चिदानन्द मयीह शक्तिः
प्रकाशयत्वात्मनि वाङ्मयं वः॥

जनताको अपने अनुकूल करनेकी कलामें अत्यन्त निपुण होते हैं। इनका स्वभाव उन्नत अच्छा और परोपकारी होता है, दूसरेके दुःखसे ये शीघ्र द्रवित हो जाते हैं।

यद्यपि इनका स्वभाव डरपोक होता है किन्तु ये दूसरे लोगोंको निर्भय बनानेका प्रयत्न करते हैं। पुस्तकें संचित करनेकी इनकी बड़ी भारी लालसा रहती है। अपने निकट सदा एक पुस्तकालय रखना चाहते हैं। इनका जीवन गतिशील होता है। अवसर आने पर ये बड़ेसे बड़ा कार्य अपने ही हाथों कर डालते हैं, ये परीक्षा प्रधानी होते हैं और अपनी पैनी दृष्टिसे दूसरे व्यक्तियोंका निरीक्षण बहुत जल्द कर लेते हैं। इनका प्रारम्भी जीवन दरिद्री और दुःखपूर्ण होता है तथा आगे जाकर इनका अच्छा विकास होता है। आवेगशील होनेके कारण ये लोग शीघ्र ही किसी बातका निर्णय कर लेते हैं। परिश्रम साध्य कार्योंको कम पसंद करते हैं और अर्थोपार्जन बहुत आसानीसे कर लेते हैं।

इस मासमें जन्मे व्यक्तियोंका मस्तिष्क बहुत तेज होता है और ये इतने प्रभावशाली होते हैं कि शायद ही संसारमें कोई ऐसा व्यक्ति मिलेगा, जो इनके प्रभावसे प्रभावित न हो। इनके वचन अधिक प्रामाणिक माने जाते हैं। सत्य-अहिंसा आदि नैतिकताओंको ये अपने जीवनमें पूर्ण-रूपसे उतारते हैं। यद्यपि वासनाका प्रभाव इन्हें भी अछूता नहीं छोड़ता है, पर तो भी इनकी सारी बातें विलक्षण होती हैं। इनका चेहरा सुलक्षणमय होता है, मस्तिष्क बड़ा और ज्ञान-विज्ञानका भण्डार होता है। कानून, धर्मशास्त्र और राजनीतिके ये पूर्ण ज्ञाता होते हैं। इनके अनुयायियोंकी संख्या अपरिमित होती है, ये किसी मार्गके प्रवर्तक भी हो सकते हैं, देश, समाज और राष्ट्रोंके महास्तम्भ भी हो सकते हैं।

जिन व्यक्तियोंका जन्म आश्विन कृष्णा २, ४, ६ और ६ को होता है वे बड़े भारी प्रभावशील होते हैं, ये अन्य लोगोंके भाग्य-विधाता और विद्या-प्रेमी होते हैं, इनके समक्ष बड़ी-से-बड़ी शक्ति भी झुक जाती है। मंगलवार, शनिवार और गुरुवारको जन्म लेने वाले महापुरुष होते हैं, लोग इन्हें देव और आराध्यके समान पूजते हैं, इनके संकेत पर चलनेके लिये अनेकों लोग तैयार रहते हैं। ये साहित्यके भी मर्मज्ञ ज्ञाता होते हैं, इनके द्वारा नवीन साहित्यका भी सृजन होता है। कभी-कभी इन लोगोंका स्वभाव भी झक्की होता देखा गया है, इसलिये ये अपनी धुनमें आकर अनुचित कार्य भी कर डालते हैं, किन्तु इनके सम्बन्धमें इतना सुनिश्चित है कि ये धुनके पक्के होते हैं। संसारमें किसीकी परवाह नहीं करते हैं जो उचित जँचता है तथा जो न्याय संगत होता है, उसीका प्रचार करते हैं।

इनके जीवनमें एक विशेष बात यह होती है कि ये विचारक होनेके साथ-साथ कभी-कभी भावुकतामें बह जाते हैं और कुछ अनुचित कार्य भी कर डालते हैं। आचार्य नारचन्द्रका मत है कि इस मासमें जन्मे व्यक्ति 'वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि' होते हैं। इनमें असीमित विश्वास होता है। ये प्रायः सभीका विश्वास करते हैं। इस मासके अन्तमें उत्पन्न होने वाले और भी अधिक पराक्रमी होते हैं।

इनका जीवन एक बृहद् दैवी जुलूस होता है, यह जीवनके प्रथम क्षणसे लेकर मृत्यु तक लगातार चलता ही जाता है। ये भगवान्के बड़े भारी भक्त होते हैं, पक्के सुधारक भी इन्हें कहा जा सकता है। इनका जीवन वस्तुतः सत्यकी प्रयोगशाला होता है और इनके सारे प्रयत्न मोक्षकी प्राप्तिके लिये होते हैं। यदि अर्थोपार्जनके क्षेत्रमें ये प्रविष्ट हो जाते हैं तो उस क्षेत्रमें भी इनका मुकाबला कोई नहीं कर सकता। इनकी दृढ़ता और कार्यलग्नतासे व्यापारिक क्षेत्रमें इन्हें अपूर्व सफलता मिलती है। बाजारमें इनका बोलबाला होता है। इनकी साख सर्वत्र मानी जाती है।

यदि ज्ञानके क्षेत्रमें इनका झुकाव हुआ तो फिर उस क्षेत्रमें भी इन्हें अपूर्व सफलता मिलती है, आजीवन ज्ञानकी साधनामें ये लोग रहते हैं और संसारके ख्यातिप्राप्त ज्ञानियोंमें इनका स्थान होता है। विवेक और विचार दोनों ही इनके प्रौढ़ होते हैं और ये सर्वदा अपने कार्यकी सिद्धिमें सब कुछ छोड़ कर लग जाते हैं। इनका उत्तरार्द्ध जीवन बड़ा महत्त्वपूर्ण होता है और उसमें सुमेरुकी तरह अडिग रहकर अपने कार्योंको संपन्न करते हैं। स्वभावसे इस मास वाले भीरु होते हैं, पर परिस्थितियां इन्हें इतना सुदृढ़ और निडर बना देती हैं जिससे इनकी सारी भीरुता कर्पूर हो जाती है।

आश्विन मासमें उत्पन्न होने वाले व्यक्तियोंके स्वभावमें

एक विचित्रता यह भी होती है कि ये यदि अच्छे कार्योंमें लगे रहें तो अन्त तक अच्छे ही कार्य करते रहेंगे और कदाचित् बुरे कार्योंकी ओर प्रवृत्ति हो गई तो अन्त तक उन्हींमें लगे रहेंगे। इनके स्वभाव पर दूसरोंके उपदेशोंका प्रभाव नहीं पड़ता, अपितु दूसरे ही इनके प्रभावमें आ जाते हैं।

अधिक परिश्रम करनेके कारण इन लोगोंको स्नायु सम्बन्धी रोग भी हो जाते हैं। हाथों, आंखों और चेहरे पर गुठलियां पड़ जाती हैं और अन्तमें रक्तप्रवाह तथा पक्षाघात होनेका भी भय रहता है। इन्हें पूर्ण विश्राम लेना तथा पर्याप्त सोना अधिक लाभप्रद होता है।

इस मासके उत्पन्न हुए कृषक खेतीके कार्योंमें खूब निपुण होते हैं, ये इस दिशामें अधिक उन्नति करते हैं तथा इनका भी इतना प्रभावशाली व्यक्तित्व होता है कि अन्य लोग इन्हें अधिक मानते हैं तथा जहां ये रहते हैं वहांकी पंचायत या आपसी झगड़ोंका निपटारा करते हैं। इनके पांवमें एक प्रकारका निशान होता है जिससे सदा इन्हें सवारीकी सुविधा रहती है। कभी पैदल चलनेका इन्हें मौका नहीं आता और ये सदा सुख शान्तिसे अपना जीवन व्यतीत करते हैं। प्रायः इस मासमें जन्म लेने वाले व्यक्तियोंमें ६० प्रतिशत शिक्षित, २० प्रतिशत मजदूर और २० प्रतिशत कृषक होते हैं।

व्यापारी इस महीनेमें जन्म लेने वाले केवल १५ प्रतिशत होते हैं। २ प्रतिशत वकील, ४ प्रतिशत प्रोफेसर, १८ प्रतिशत साधारण शिक्षक, ४ प्रतिशत महापुरुष, १० प्रतिशत लड़ाका, डाकू, चोर आदि, १५ प्रतिशत सेनापति या पुलिस अफसर, १० प्रतिशत जहाज चालक, मोटर ड्राइवर या अन्य सवारियोंके चालक, और १५ प्रतिशत इधर उधर घूमने वाले आवारा होते हैं। इस मासके जन्मे व्यक्तियोंमें एक विशेषता यह भी होती है कि वे एक ही कार्यमें प्रवीण हो सकते हैं। जिनका जीवन स्वार्थकी ओर झुक जाता है वे पक्के स्वार्थी होते हैं। नारचन्द्रने एक स्थानमें बताया है कि आश्विन मासमें ३० घटी १० पल इष्टकालसे लेकर ३६ घटी ४८ पल इष्टकालके भीतर जन्म ग्रहण करने वाले व्यक्ति बड़े ही विलक्षण होते हैं, इनके हृदयका पता लगाना बड़ा ही कठिन होता है। इनके सारे कार्य राजनीतिकी नींवके आधार पर चलते हैं। कार्यका प्रारम्भ तो ये बड़े उत्साहसे करते हैं किन्तु अन्त होते समय इनका सारा उत्साह समाप्त हो जाता है। इनका जीवन निश्चित दिशाकी ओर जाता है और सहयोगियोंकी सहायतासे ये अपने अभीष्ट कार्योंमें अधिक सफलता प्राप्त करते हैं, इस मासके कुछ व्यक्ति महात्मा होते हैं।

विवाह और मित्रता—इस मासमें उत्पन्न हुए व्यक्तियोंका विवाह बहुत जल्द छोटी आयुमें ही हो जाता है। इनमें वासना प्रारम्भमें अधिक होती है, तथा छोटी आयुमें कुसंगतिके प्रभावसे ये बिगड़ जाते हैं। १०, ११, १४, १७, १८, १९, २० २१, २३, २४, २८ और ४५ वर्षकी आयुमें विवाहके प्रबल योग आते हैं, जिनका जन्म आश्विन कृष्ण २, ३, ४, ६, ७, ९, १०, ११को होता है उन्हें वैवाहिक सुख बहुत कम होता है। तथा ये आदर्श-मार्गके प्रवर्तक होते हैं। परन्तु कृष्णपक्षकी अवशेष तिथियोंमें जन्म लेने वाले व्यक्तिके दो या तीन विवाह भी हो जाते हैं।

जिनके हाथमें तिलका चिन्ह होता है उनके प्रायः दो विवाह होते हैं, वे एक उपपत्नी भी रखते हैं। इन्हें प्रेमके जालमें फंसकर कष्ट भी उठाने पड़ते हैं और कभी-कभी प्रेमके कारण इन्हें आत्म-हत्या भी करनी पड़ती है। प्रेमके क्षेत्रमें इन्हें सफलता कम मिलती है, परन्तु इनके सम्बन्ध में इतना सुनिश्चित है कि जब इनका प्रेम-मार्ग वासनासे हट कर विशुद्ध क्षेत्रमें आ जाता है, उस समय ये पक्के भगवद्भक्त हो जाते हैं। करुणा, दया, और सहानुभूति ये तीनों गुण इनमें विशेषरूपसे घर कर लेते हैं, तथा ये सदा प्रिय होकर रहते हैं। २८ वर्षसे लेकर ३४ वर्षकी आयुके बीचमें इनके जीवनमें अनेक तूफान आते हैं और ये अपनी प्रेमिकाओंको ढूंढ़ते हैं। विचारक होनेके कारण ये दुश्चरित्र स्त्रियोंके फन्देमें नहीं पड़ते पर कभी-कभी अपनी स्वयंकी निर्बलताके कारण प्रेमके गड्ढेमें गिर जाते हैं। एकान्त स्थानकी साधना इस मास वाले व्यक्तियोंके लिये बड़ी हितकर हो सकती है।

इनके मित्रोंकी संख्या अधिक होती है। अलौकिक प्रभावके कारण अधिकांश जनता इनकी मित्र हो जाती है। चतुराई और व्यवहार कुशलता इनमें इतनी अधिक होती है

कि जिससे ये सदा अपने चारों ओर शान्तिका वातावरण बनाये रखते हैं। इस मास वाले व्यक्तियोंके शत्रु प्रायः नहीं होते और जो होते भी हैं, वे भी अपनी शत्रुता छोड़ कर मित्र बन जाते हैं। जिनका जन्म मंगलवार और गुरुवारको होता है वे सफल सुधारक और अपने वचनोंके अमृतमय प्रवाहके कारण शिक्षित, अशिक्षित सभी प्रकारकी जनताके मित्र बन जाते हैं, शनिवार और सोमवारको जन्म लेने वालोंके शत्रु भी अनेक रहते हैं, प्रायः इनके शत्रु अवसर-वादी होते हैं और अवसर आने पर कुछ अनिष्ट कर देते हैं। ऐसे व्यक्तियोंको ३२, ३४, ३५, ३६ और ४१ वें वर्षमें शत्रुओंसे अधिक अनिष्ट होनेकी संभावना होती है।

अच्छा और बुरा समय—इस मासमें जन्मे व्यक्तियोंकी उन्नति १४ वर्षकी आयुसे आरंभ हो जाती है। १७, १८, २०, २१, २३, २४, २५, ३२, ४८, ५२, ७५ और ७६ वें वर्षोंमें विशेष उन्नति होती है। २७ वें वर्षमें गुरुका प्रभाव अधिक पड़नेके कारण देश-विदेशमें प्रायः सर्वत्र कीर्ति कौमुदी फैल जाती है और यह इतना महत्व-पूर्ण होता है कि इस मासमें जन्मा प्रत्येक व्यक्ति इससे लाभ उठाकर अपनी उन्नति कर सकता है। यदि इस समयका सदुपयोग नहीं किया गया तो फिर जीवनमें उन्नतिका अवसर मिलना कठिन ही समझना चाहिये। १५, १६, २२, २६, ३१, ४५, ४६, ५४, ५८, ६२, ६८, ७४वें वर्ष कुछ कष्टकारक होते हैं। इनमें व्यक्तिको आर्थिक और शारीरिक कष्ट उठाने पड़ते हैं। प्रायः आश्विन मासमें जन्मे व्यक्तियोंके लिए ३२ वर्षकी आयुसे शुभ ग्रहोंका योग अच्छा रहता है, जिससे इनकी उन्नति होती चली जाती है।

घातक वर्ष—इस मासमें जन्में व्यक्तियोंको जन्मसे १, २, ४, ५, ७, १०, १४, १८, २२, २६, ३७, ४६, ५३, ५४, ५८, ६२, ६६, ६७, ७१, ७४, ७८, ८२, ९०, ९४ और ९७ वें वर्षमें रोग उत्पन्न होते हैं। इनकी दीर्घायु होती है तथा ये ११० वर्ष तक जीवित रह सकते हैं। असाध्य बीमारियाँ इन्हें कम होती हैं, रक्तचाप और नसों का कमजोर होना, ये रोग इन्हें प्रायः होते हैं। जिनका जन्म शुक्लपक्षकी १, ३, ४ और ५ को होता है, उन्हें राजयक्ष्मा होनेका योग भी रहता है। प्रमेह और धातुक्षय जैसी बीमारियां ३५ वें वर्षमें कष्ट देती है। २९ वां वर्ष रोगकारक अधिक होता है, अल्पायु वाले वर्ष २३, २८, ३७, ४६, ५३, ६७, ७१, ७४, ८५, ९३ और ९७ बताये गये हैं। पूर्णायु इस मास वालोंकी ११० वर्ष ७ मास १३ दिनकी होती है। अन्य व्यक्तियोंके आक्रमण द्वारा भी इस मास वालोंकी मृत्यु होती है।

सन्तान सुख—इस मासमें जन्मे व्यक्तियोंको सन्तान सुख अच्छा होता है, परन्तु सन्तान निकम्मी और जी जलाने वाली होती है। संतान संख्या इस महीनेमें जन्मे व्यक्तियोंकी ९ से लेकर १६ तक जाती है। जिनका जन्म कृष्णपक्षकी २, ४, ७ तिथियोंमें होता है उन्हें प्रायः संतान का अभाव रहता है या संतानके दुश्चरित्र होनेसे मानसिक संताप रहता है।

जिनका जन्म शुक्ल पक्षकी ७, ८, १०, १२, १४ १५ को होता है, उन्हें ५ कन्यायें और ६ पुत्र तक हो सकते हैं तथा कन्याएं सुशीला और सद्गुणी होती हैं पर पुत्रोंमें अधिकतर स्वार्थी और पितृ दुखदायक होते हैं। रविवार, गुरुवार और शुक्रवारको जन्म ग्रहण करने वाले व्यक्तियोंके २ कन्याएं और ५ पुत्र होते हैं तथा अन्य स्त्री से प्रेम हो जाने पर २ कन्याएं और ३ पुत्र उससे भी होते हैं। साधारणतः इस मास वाले व्यक्तियोंको अच्छा संतान-सुख होता है।

अनुकूल समय—यों तो इस मासमें जन्म लेने वाले व्यक्तियोंको सभी महीने अनुकूल होते हैं, पर वैशाख, ज्येष्ठ भाद्रपद विशेष लाभदायक होते हैं। इन मासोंमें काम करनेसे जल्दी काम सफल होता है। शुक्रवार और मंगल-वार दिनोंमें विशेष सफलता प्राप्त होती है। तिथियोंमें २, ३, ४, ७, १०, ११, १३, और १५ विशेष फलदायक बताई गई हैं। इन समयोंमें काम करनेसे विशेष सफलता प्राप्त होती है।

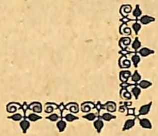
आश्विन मासमें उत्पन्न हुई नारियोंका फलादेश

इस मासमें उत्पन्न हुई नारियां सफाईको अधिक पसन्द करती हैं, फैशनसे इन्हें अधिक प्रेम होता है। कुटुम्बके प्रति अपने उत्तरदायित्वको कम निभाती हैं। स्वार्थ मात्रा इनमें अधिक होती है। अवसर आने पर ये अपने पुत्रकी हत्या करनेमें भी नहीं हिचकिचाती हैं। चरित्र इनका

साधारणतया अच्छा नहीं होता । इन्हें मेला, उत्सव, सिनेमा आदि देखनेकी लालसा अधिक रहती है । गृहस्थीके कार्यो को जानती अवश्य हैं परन्तु मन लगाकर करतीं कम हैं। शिक्षा इन्हें अच्छी मिलती है पर ये उसका दुरुपयोग करती हैं, इन्हें वास्तविकताका विवेक कम रहता है और अधिकतर ऊटपटांग कार्योंको करती रहती हैं । इनका स्वभाव चंचल होता है, यदि प्रारम्भसे इन्हें दबावमें रक्खा जाय तो ये अच्छी लेखिका और अध्यापिका बन सकती हैं । अभिमान की मात्रा इनमें अधिक रहती हैं । अपने जीवनको ये दिखावटी अधिक बनाना चाहती हैं, अधिकतर इस मासमें जन्मी नारियोंको शिक्षित और धनी पति मिलते हैं ।

कुछ नारियोंको आजन्म कौमार्य ही बिताना पड़ता है । इनका स्वभाव मिलनसार और स्वार्थी होता है, बोलचाल साधारणतया अच्छी होती है । पतिदेवको ये प्रसन्न करने का प्रयत्न करती हैं । किन्तु अपने स्वभावके कारण पूर्णतया प्रसन्न नहीं कर पातीं । इन देवियोंमें एक विशेषता यह भी होती है कि ये कभी-कभी सत्संगके प्रभावसे सर्वश्रेष्ठ नारियां भी बन जाती हैं । इनके ऊपर उपदेशोंका प्रभाव बहुत पड़ता है और सरलतासे जिधर चाहें उधर झुकाया जा सकता है । हां, इनमें एक विशेषता यह भी होती है कि ये समय पड़ने पर कष्ट सहन करनेमें भी अद्वितीय होती हैं ।

यों तो इनका स्वभाव स्वार्थी होता है, पर इनके द्वारा कुटुम्बकी विशेष उन्नति होती है । इनका विवाह करनेमें माता-पिताको कष्ट उठाना पड़ता है तथा अधिक दौड़-धूप करनी पड़ती है । इनके लिये घातकवर्ष २, ८, १४, १६, १७, १८, २२, २४, २५, २८, ३०, ५४ और ६२ होते हैं । साधारणतः इनका दाम्पत्य-जीवन सुखमय होता है । इस मासमें जन्मी नारियोंको संतान सुख साधारण होता है । ५४ वें वर्षमें पक्षाघात, अनिद्रा और स्वांसका प्रकोप होता है । इनके जीवनमें २२ वाँ वर्ष विशेष महत्वका होता है । २५ वें और २७ वें वर्षमें विशेष प्रकारका कष्ट आता है ।



मीनलग्न - जातक



[श्री अम्बालाल गोविन्दराम दबे, बी. एस. सी.]

राशि मीन, द्विस्वभाव, जलचर, उभयोदय, स्त्री, सम, स्वामी बृहस्पति ।

मीनका अर्थ मछलीसे है । ठीक मछलीकी भांति इस लग्नमें जन्म लेने वाले अपनी तरलतामें बहे-बहे फिरते हैं । उन्हें हरी-हरी घास और किसी नदी अथवा किसी जलाशयके किनारे रहना अति सुन्दर प्रतीत होता है । उनका डील-डौल साधारण होता है । आंखें अधिकतर बड़ी होती हैं । और मुख पर सौम्यताका भाव होता है । कभी-कभी उनके नेत्रोंमें शून्य भाव दृष्टि गोचर होता है, जैसे उनके मस्तिष्कने एकाएक कार्य करना छोड़ दिया हो । चेहरे पर विह्वलता बनी रहती है । जिससे प्रतीत होता है कि वे भीतरसे अति परेशान हैं । कभी-कभी उन्हें देख कर यह भान होता है, कि जैसे वे अपने देशको छोड़ कर किसी अन्य देशमें भटक रहे हैं, जहां उन्हें कुछ भी आराम नहीं, और बार-बार उन्हें फूलोंवाले देशका स्मरण हो आता है । उनके चेहरेकी विह्वलताके साथ एक निराशाका भाव भी सर्वदा विद्यमान रहता है । इस संसारमें कोई आकर्षण नहीं देखते । उनके चेहरे पर खेलती अकारण वेदनासे प्रतीत होता है, कि वे संसारमें जीवित रह कर मानो किसी पर अहसान कर रहे हैं और इस प्रकार अपने आपको शहीद समझते हैं । अपने कष्टोंको वे बड़ी उत्सुकता और उत्साहसे सुनाते हैं, मानो उनको सहन कर उन्होंने बड़ा एहसान वा उपकार किया हो । कभी-कभी वे अपनी आपत्तियोंको इतने गौरवके साथ सुनाते हैं, जैसे कोई शहीद आप बीती सुना रहा हो । उनके लिए संसारमें जीवित रहना ही शहीद होनेके समान है । किंचित् वे समझते हैं कि ईश्वरने उन्हें जन्म देकर उनके प्रति बड़ा अन्याय किया है । उनकी बेचैनी देखकर अत्यन्त कौतूहल होता है ।

मीन राशिमें शुक्र अपनी उच्चावस्थामें होता है और बुध नीच अवस्थामें अतः इस राशिसे प्रभावित व्यक्तियोंमें शुक्रके गुण अधिक होते हैं, किन्तु बुध के गुण बिल्कुल नहीं होते। उनका प्रेम भावुकता और सरसतासे भरा रहता है। वे प्रत्येक किसी-न-किसी भावमें भरे रहते हैं, किन्तु उनकी तर्क शक्ति अत्यन्त दुर्बल होती है। लम्बी चौड़ी दलीलें वे नहीं समझ पाते। और न कभी उनसे प्रभावित ही देखे गये हैं। उनके निकट आप केवल हृदयके मार्गसे ही जा सकते हैं। यदि बृहस्पतिकी स्थिति प्रबल हुई तो मीन लग्न वाले अतिशय भावुक और उच्चकोटिके कवि अथवा कलाकार होते हैं। शुक्र स्त्रियोंका निरूपक है, और मीन शुक्रकी उच्चराशि है, अतः इस लग्न वाले जहां कड़ेसे कड़े शत्रु को पराजित करनेकी क्षमता रखते हैं, वहां स्त्रियोंके समक्ष शिर झुका देते हैं। नारीके प्रति उन्हें सहज खिंचाव रहता है।

वे इस पृथ्वी पर चलते अवश्य हैं, किन्तु उनकी विचारधारा कहीं और भटकती है। उनकी चेतना किसी आकाशी छायावादके पीछे दौड़ती प्रतीत होती है। और इससे उन्हें असीम शान्तिका अनुभव होता है, फिर चाहे उनका यह प्रयास मुठ्ठीमें धुएंको पकड़नेके समान ही हो। उनका सारा वातावरण रहस्यमय होता है। वे इस संसार में क्या ढूंढने आते हैं, कोई नहीं जानता। यदि बृहस्पति प्रबल हुआ, तो उनके प्रश्न अति गहन होते हैं, ब्रह्म क्या है? जीव क्या है? ब्रह्माण्ड क्या है? जीवन मृत्युका रहस्य क्या है? इन प्रश्नोंको सुलझानेमें ही वे अपना जीवन बिताते हैं, वे इतना कभी भी सुखी नहीं होते, जितना इन प्रश्नों पर विचार करते समय होते हैं। उनके इन विचारों को समझ सकना अत्यन्त दुर्लभ होता है। कभी-कभी इसी कारण वे दूसरोंको विक्षिप्तसे प्रतीत होते हैं, किन्तु यदि बृहस्पतिकी उन पर कृपा दृष्टि हुई, तो वे सत्यका प्रकाश देखने में सफल होते हैं और जगत्को अपने अनोखे व्यक्तित्वसे चकित कर देते हैं। सृष्टि रहस्यके सूक्ष्म द्रष्टा श्री अरविन्द घोष इसी लग्नसे प्रभावित हुए थे।

धनुर्लग्न वालोंकी तेजी उनमें नहीं होती। और न उनके समान कार्य कुशलता अथवा व्यावहारिकता ही। भौतिक क्षेत्रमें वे अपने बल पर कुछ भी नहीं कर पाते। सांसारिकतासे बचनेका अवसर खोजते रहते हैं। और जब कहीं परवश उन्हें इस संसारमें लिप्त रहना पड़ता है, तो उनका मस्तिष्क कुछ समय पश्चात् जवाब दे देता है। और उनकी स्थिति बच्चेकी भान्ति असहाय और दयनीय हो जाती है। यदि भाग्यसे स्वयं ही सम्पत्ति उनके पास पहुंच जाती है, तब फिर आध्यात्मिक क्षेत्रमें वे अत्यन्त ऊंची उड़ानें भरते हैं।

वे द्विस्वभाविक होते हैं। प्रत्येक कार्यके प्रति उनकी दो राय होती है। कभी-कभी वे नहीं तय कर पाते, कि उन्हें क्या करना है। दुर्बल इच्छा शक्ति उन्हें स्थिर नहीं रख पाती। अपनी दुर्बलताओं पर विजय पानेके हेतु कभी-कभी वे इन्हीं दुर्बलताओंकी लगाम इतनी ढीली कर देते हैं कि विजय पाना तो दूर रहा वे अपना जीवन नष्ट कर लेते हैं। महिला वा मदिराके चक्करमें पड़कर इस सीमाको पहुँच जाते हैं, कि फिर पागल ही हो जाते हैं। मीन राशि १२ वीं है १२ वां स्थान नष्ट होनेका है। मीन लग्न वाले (बृहस्पति की दुर्बलतामें) अपने ही कारनामोंसे अपनेको नष्ट कर मिट्टीमें मिला देते हैं। इस भांति हम देखते हैं कि मीन राशि कितनी रहस्यमय है। एक ओर तो इसके अन्तर्गत बड़े-बड़े आध्यात्मिक सूक्ष्म द्रष्टा होते हैं। और दूसरी ओर अतिभरमाए हुए व्यक्ति जो विक्षिप्त और पागल हो जाते हैं।

मीन लग्न वाले कविका दृष्टिकोण लिये रहते हैं। प्राकृतिक दृश्योंको देखकर जितने चलायमान ये व्यक्ति होते हैं, अन्य नहीं होते। उनका हृदय इतना तरल अथवा भावुक होता है कि किसी भी दयनीय अवस्थाको देखकर द्रवित हो जाता है। और तब वे अपना सब कुछ दे सकने की क्षमता रखते हैं। वे पुरुष और प्रकृतिके प्रेमी होते हैं। अपनी आध्यात्मिकताको मदिराके प्याले में डुबो सकने वाले ये व्यक्ति सभी कुछ कर सकते हैं। बृहस्पतिका उन पर हाथ होता है। जिससे उनके लिये कुछ भी दुर्लभ नहीं होता, विशेष कर भाव क्षेत्रमें। वे स्वप्न-द्रष्टा छायावादी कवि होते हैं। बंगालके सुप्रसिद्ध महाकवि ठाकुर श्रीरवीन्द्रनाथ मीन लग्नके व्यक्ति थे। उनकी कविताओंमें स्वप्न की प्रधानता है और उसमें रहस्यवादका नाम भी नहीं। मीन लग्न वाले ऊंचीसे ऊंची उड़ान भर सकते हैं और गहरीसे गहरी गहराईमें पहुँच जीवन तथ्योंको ढूंढ निका-

लग्नकी योग्यता रखते हैं। यह अन्तिम राशि होती है। अतः मानवके जीवन मरणका रहस्य इसी लग्न वालोंके समक्ष खुलता है। ऐसा प्रतीत होता है कि इसी गुत्थी को सुलझानेको वे जन्म लेते हैं। एकान्तमें बैठे हुए जब वे मनन करते हैं, तब अपनेको वे विभूतिके सम्पर्कमें पाते हैं, उनका यह अनुभव एक विचित्र अनुभव है। जो अन्य किसी भी लग्न वालोंको नहीं होता। ब्रह्मांडमें अतीतकी गुत्थियोंको सुलझानेका प्रयास करने वाला डार्विन मीन लग्नका ही व्यक्ति था। इसी प्रकार आइन्स्टाईन जिसने अपने ही सिद्धान्तोंसे कितने ही रहस्योंका उद्घाटन किया है मीन लग्नका ही व्यक्ति है। संक्षेपमें वे अति विद्वान्, रहस्यमय प्रेमी, कवि, निर्लोभी, सन्त, विचारक व अत्यन्त मननशील व्यक्ति होते हैं।

सूर्य षष्ठेश होनेसे अशुभ होता है।
चन्द्रमा पंचमेश होनेसे शुभ होता है।
मंगल द्वितीयेश और नवमेश होनेसे शुभ होता है।
बुध चतुर्थेश और सप्तमेश होनेसे शुभ होता है।
बृहस्पति लग्नेश और दशमेश होनेसे शुभ होता है।
शुक्र तृतीयेश और अष्टमेश होनेसे अशुभ होता है।
शनि एकादशेश और द्वादशेश होनेसे अशुभ होता है।

नीचे श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर और अब्राहम लिंकनकी जन्म कुण्डलियां दी जा रही हैं।

श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर

बु. १ शु. रा.
११
२
चं. १२
१०
मं. ३ के.
९ रा.
गु. ४
६
८
श. ५
७

अब्राहम लिंकन

के. १
सू.बु.११
२
गु. शु. १२
१० चं.
-
९
४
८ श.
-
५
मं रा-७

सामुद्रिक शास्त्र पर हमारा अनुभव

[ले०—राजवैद्य डा० श्रीअमरदत्तजी मिश्र]

इस लेखमें पाठकोंके लाभार्थ कुछ सामुद्रिक सामूहिक लक्षणोंका विवेचन करता हूं, आशा है सामुद्रिक प्रेमियोंके लिए यह रुचिकर होगा।

हथेलीमें आप निम्न चिन्होंको जहां भी पावेंगे वहां उनका लिखित फलादेश जानें। ताराका चिन्ह Star ❇ यह तारा का चिन्ह हथेलीमें यदि गुरुके स्थान पर होवे तो मनुष्यको प्रतिष्ठा, गौरव और पराक्रमको देने वाला जानें, यानि जिसके भी हाथमें उक्त स्थानों पर यह ताराका चिन्ह है तो वह व्यक्ति प्रतिष्ठित और पराक्रम वाला अवश्य ही होगा। यदि यह ताराका चिन्ह सूर्य के स्थान पर हो तो धनवान और ख्याति प्राप्त व्यक्ति होता है और उस मनुष्यका जीवन जनताके हितोंसे सम्बन्धित होता है। या तो नेता होता है या रचनात्मक कार्य करने वाला होता है। मंगलके स्थान पर यह ताराका चिन्ह हो तो वह व्यक्ति अपना अधिक समय जीवनमें युद्धमें ही व्यतीत करेगा और युद्ध कार्योंमें ही उसे विशेष प्रगति मिलेगी। अंगुष्ठमूलसे नीचे और गुरुके साथसे नीचेके स्थानको मंगल का स्थान माना है और एक स्थान मंगलका बुधके स्थानसे नीचे होताहै यदि वहां पर यह ताराका चिन्ह हो तो मस्तिष्कके युद्ध में सफलता देता है। सारे जीवनमें यदि यह ताराका चिन्ह

चन्द्रमाके स्थान पर होवे तो वह मनुष्य कई प्रकारकी खोज करने वाला होता है। यदि यह चिन्ह शुक्रके स्थान पर हो तो केन्द्रमें Center जीवनमें स्त्रियोंके साथ अपनी काम वासनामें विशेष सफलताका चिन्ह है। ऐसा व्यक्ति पशुवत् स्त्रियोंके साथ वासनाके निमित्त व्यवहार करने वाला होगा। ताराका चिन्ह यदि बुधके स्थान पर हो तो व्यापारमें विज्ञानमें वक्तृव्यतामें कुशल होता है। यदि यह तारा का चिन्ह शनिके स्थान पर है तो बड़ा अशुभकारक होता है। इस चिन्ह वाला व्यक्ति जीवनभर दुःखोंका आगार बना रहता है। O O गोलाकार बिन्दु Circle सूर्यके स्थान पर हो तो अच्छा है और दूसरे स्थानों पर हानिकारक होता है। यदि यह गोलाकार बिन्दु Circle चन्द्रमाके स्थान पर होवे तो उस व्यक्ति की मृत्यु जलमें डूबनेसे होगी।

Spot गोलाकार धब्बा ● जिस स्थान या लाइन पर होगा उस लाइनकी विशेषताको उस समयमें समाप्त करेगा यथा यदि यह धब्बा मस्तिष्क रेखा पर है तो दिमागमें खराबी होगी और कहीं चोट लगेगी उसी Periode में। यदि यह धब्बा जीवन रेखा पर होवे तो उस समयमें सहसा रोगी होवे। यदि जीवन रेखा पर है तो उस समयमें ज्वर Fever होगा।

▯ चौकोर Square यह सुरक्षाका चिन्ह है। यह जहां जिस रेखा पर होगा उस समय पर आने वाले भयसे बचाता है। यदि यह चिन्ह जीवन रेखा पर हो और रेखा वहां टूटती है तो मौतसे रक्षा होती है। यदि यह चिन्ह भाग्य रेखा पर इसी प्रकार हो तो क्षतिसे रक्षा होती है। आर्थिक हानिसे बचाता है। गुणित तथा क्रोसका चिन्ह × = ऐसा चिन्ह केवल गुरुके स्थान पर हो तो उत्तम है इसकी उत्तमता प्रेमके साथ भाग्य वृद्धि जीवनमें अवश्य ही होती है। इससे इतर स्थानों पर हानिकारक समझें। यदि यह चिन्ह शनिके स्थान पर है तो भयावह मृत्यु होगी। "Violent Death" सूर्यके स्थान पर धन प्राप्तिमें रुकावट करती है, बुधके स्थान पर हो तो धर्महीन होता है, मंगलके स्थान पर बुधके नीचे हो तो जीवनमें भयंकर विरोध होते हैं और गुरु के नीचेके मंगल पर हो तो लड़ाईमें मौत होती है। यदि चन्द्रमाके स्थान पर हो तो संघातिक रोग होते हैं और यदि इस चिन्हका होना चन्द्रमाके स्थानसे उतरता होता है तो जलमें डूब कर मरता है। यदि शुक्रके स्थान पर है तो प्रेम में बड़ा भय होता है। यदि मस्तिष्क रेखा पर हो तो शिर में चोट लगती है। यदि यह हृदय रेखा पर है तो किसी प्रेमीकी मृत्युसे हृदय पर चोट लगती है।

यवका चिन्ह Island सौभाग्यका चिह्न नहीं है। यह जहां भी होगा वहां की विशेषताको समाप्त कर देगा। यदि जीवन रेखा पर है तो उस अवस्थामें स्वास्थ्य बिगड़ता है, मस्तिष्क रेखा पर हो तो मस्तिष्ककी कमजोरी पागलपन और रुग्ण बनाता है। उस समयमें जहां जिस लाइन पर यह होता है। हृदय रेखा पर हो तो हृदयकी कमजोरी बतलाता है। भाग्य रेखा पर हो तो बड़ी भारी आर्थिक हानिकी सूचना देता है और चिन्तातुर बनाता है, यदि सूर्य रेखा पर हो तो व्यक्तित्वमें धब्बा आता है कुछ खराब कामों से। जीवन रेखा पर हो तो भयानक रोगका होना बतलाता है। ऐसा चिन्ह Grille यह चिन्ह हाथमें कमही पाया जाता है और जहां होवे वहां यह आपत्तियोंको बतलाता है जिस स्थान और जिस लाइन पर हो उससे सम्बन्धित कार्योंमें।

———

एक झलक दशाकी ओर

[ले०—श्री शारदाचरण शास्त्री विद्यालंकार]

'श्रीस्वाध्याय' के 'हेमन्ताङ्क' में इसी विषय पर श्री-हंसराजजी कपिल ज्यौतिषाचार्यके मत पर आलोचना करते हुए श्रीचिमनलालजी ज्यो० ने प्रमाणोंकी शृङ्खला बान्ध दी। परन्तु जिस बात पर आचार्यने अपने विचार प्रकट किए हैं, उस पर आलोचना करते करते उन्हींके सिद्धान्तकी पुष्टि कर दी और फिर बादमें हेय कह दिया। इस विषय पर हम एक बार फिर विचार करते हैं।

श्री कपिलजीने पहले दो नक्षत्रों २६ अं० ४० कलाओं के त्यागमेका कारण बतला कर, कृत्तिका नक्षत्रसे आरम्भ कर स्वातिनक्षत्र पर्यन्त ९ का भाग देनेसे राहुकी दशा दिखला दी तथा उसमें ४ अं० ५० कलाओंके अन्तर ६वर्ष ६ मा० ६ दि० को राहुकी भोग्य दशामें से घटानेसे ६ व० १ मा० भोग्य दशा काल प्रदर्शित किया है। स्मरण रहे, यह दशा संस्कार उन्होंने कृत्तिकादिसे ही आरम्भ किया है। परन्तु २७, २८, २९ और ३० अक्षांशों पर ग्रह दशा संस्कारका सुगम तथा वैज्ञानिक भाषाके आधार पर नवीन पथ प्रस्तुत किया है। श्री कपिलजीने कृत्तिका नक्षत्रसे दशाक्रमका आरम्भ किया, उसी ही कृत्तिकानक्षत्रकी पुष्टि करनेके लिए, आलोचक महोदय प्रमाणोंका राग अलापने लगे। निष्कर्ष यह हुआ कि खण्डन करते २ मण्डन अर्थात् कपिलजीके मतकी पुष्टि कर दी। परन्तु इस बात पर ध्यान रखना चाहिए, कि प्रत्येक वस्तु सीमित रूपसे ही फल दिया करती है। यदि आलोचक महोदय दशासे अन्यत्र भी सर्वत्र कृत्तिकाको ही मुख्य मानें, तो क्या आप बतला सकते हैं कि—

(१) मेष राशिका उदय अश्विनीसे होता है या कि कृत्तिका से?

(२) लङ्कोदयोंमें स्वदेशीय स्वोदयोंको घटाने और जोड़नेसे मेषादि राशियोंके साथ अश्विनी आदि नक्षत्रोंका आरम्भ होता है या कि कृत्तिकादिका?

(३) श्रीनीलकण्ठजी द्वारा प्रोक्त 'तत्खतर्कध्नधिष्ण्येषु युक्रम्"। चन्द्र स्पष्टीकरणमें अश्विनी आदि नक्षत्रसे गणना होगी या कृत्तिकासे?

(४) उत्तराषाढ़का अन्तिम चरण और श्रवणकी प्रथम चार घड़ियों तक "अभिजित्" नक्षत्र कहलाता है। ध्यान रहे कि पार्श्ववर्ती नक्षत्रोंसे अधिकतर देदीप्यमान (Reri lgent) होनेके कारण "अभितो जयति—इति" अभिजित् नामकरण हुआ, न कि पृथक्रूपतासे। जैसा कि गायत्री मंत्रमें २३ अक्षर हैं। परन्तु "वरेण्यम्" पदको वैदिक विद्वानोंने "वरेणियम्" लिखकर गायत्री छन्दमें त्रुटि (Irregularity in metre) की पूर्ति की है।

(५) राशियोंमें "उत्तराणां त्रयः पादाः श्रवणधनिष्ठार्धं मकरः" यहां पर अभिजित्का नाम मात्र भी नहीं है।

इसके अतिरिक्त २७ से ३१ अक्षांशों पर्यन्त उत्पद्यमान जीवोंकी भोग्य दशामें आलोचकने उक्त लेखमें अपनी ओरसे, भेद शब्दका प्रयोग किया है, न कि अन्तर। स्मरण रहे भाषा-विज्ञानके अनुसार "अन्तर" तथा 'भेद' शब्दोंमें भी आकाश पाताल का अन्तर है। वर्णभेद, जाति भेद, तथा देशभेदादिसे स्पष्ट है कि "भेद" शब्द भिन्नता—वाचक है।

(६) श्रीवराहमिहिराचार्यजीने नष्ट जातक-प्रकरण में नक्षत्रोंके विषयमें २७ का भाग लिखा है, न कि २८ का। यदि आलोचकके मतानुसार २८ नक्षत्र ही मान लिये जावें, तो विंशोत्तरी दशाके स्पष्टीकरणमें ९ का भाग देनेसे एक शेष बचेगा, भला सोचिए उसके लिए कौनसा स्थान प्रदान किया जायगा? एवम् ग्रहदशामें गड़बड़ी फैल जायगी।

(७) आलोचकने "निर्मूल" तथा "हेय" पद लिखे हैं। परन्तु यह बात भी ध्यान देने योग्य होगी, कि ग्रह तदधीन दशाओंमें चर संस्कार करते समय सर्वदा अक्षांश की ही प्रधानता मानी गई है। जैसे कि—"क्रान्त्यक्षभागा इति पंचमांशश्चरं पलाख्यं गगनेचराणाम्" इति। केतकीमें अक्षांश और क्रान्तिसे चर संस्कार करना सर्वत्र लिखा है तो यही दशामें अक्षांशोंके अन्तरसे संस्कार करना दर्शाया है। एवम् सर्वत्र अक्षांशोंकी आवश्यकता होनेसे "निर्मूल" निर्मूल तथा आचार्यका मत युक्ति संगत और समूल सिद्ध होता है। "हेय" अथवा "उपादेय" के विषयमें सर्वदा अनुभव ही निर्णायक हो सकता है॥ अतः—

"क्वचित् स्वातन्त्र्य मीमांसा क्वचित्पौर्वमतादरः।
परीक्ष्यैवान्यभावस्य हेयोपादेयता भवेत्"॥

त्रैमासिक प्रर्वव्रतादि निर्णय

['श्रीविश्वविजयपंचांङ्ग' से]

चैत्र शुक्ल	११ रविवार ता० ३	अप्रैल	कामदा एकादशी व्रत दोलोत्सव।
	१२ सोमवार ता० ४	,,	सोमप्रदोषव्रत।
	१३ मंगलवार ता० ५	,,	अनङ्ग १३ श्री महावीर (जैन) जयन्ती
	१४ बुधवार ता० ६	,,	सत्यव्रत चान्द्रायणी पूर्णिमा।
	१५ गुरुवार ता० ७	,,	चैत्री १५ बैशाख स्नानारम्भ।
वैशाख कृष्ण	३ रविवार ता० १०	,,	श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० १० ५
	६ बुधवार ता० १३	,,	मेला बैशाखी मेष संक्रान्ति अर्ध रात्र्युत्तर स्टे० टा० ३।४५ मु० ३०
	७ गुरुवार ता० १४	,,	मेष संक्रान्ति पुण्य काल मध्यान्ह पर्यन्त
	११ सोमवार ता० १८	,,	वरूथिनी एकादशी व्रत स्मार्त्त गृहस्थोंका।
	१३ बुधवार ता० २०	,,	प्रदोष व्रत
	३० शुक्रवार ता० २२	,,	अमावस्या
बशाख शुक्ल	१ शनिवार ता० २३	,,	चन्द्रदर्शन मु० १५
	२ रविवार ता० २४	,,	श्रीपरशुराम जयन्ती श्रीमातङ्गी जयन्ती
	३ सोमवार ता० २५	,,	अक्षया ३ श्रीबगुलामुखी जयन्ती श्रीशिवाजी जयन्ती
	५ मंगलवार ता० २६	,,	श्री आद्यशंकराचार्य जयन्ती
	६ बुधवार ता० २७	,,	श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती
	७ गुरुवार ता० २८	,,	श्रीगंगा सप्तमी
	११ सोमवार ता० २	मई	मोहिनी एकादशी व्रत
	१३ बुधवार ता० ४	,,	प्रदोषव्रत
	१४ गुरुवार ता० ५	,,	श्रीनृसिंह-जयन्ती १४, श्रीछिन्नमस्ता जयन्ती।
	१५ शुक्रवार ता० ६	,,	सत्यव्रत वैशाखी पूर्णिमा वैशाखस्नान समाप्तिः कूर्मज.
ज्येष्ठ कृष्णा	३ मंगलवार ता० १०	,,	श्री गणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे. टा. १०।७
	७ शनिवार ता० १४	,,	वृष संक्रान्ति अर्धरात्र्युत्तर ०।१८ मु० ३० पुण्यकाल दूसरे दिन
	११ बुधवार ता० १८	,,	अपरा (भद्रकाली) एकादशी व्रत
	१२ गुरुवार ता० १६	,,	प्रदोषव्रत
	३० शनिवार ता० २१	,,	शनैश्चरी अमावस्या वट सावित्री पूजन
ज्येष्ठ शुक्ल	२ सोमवार ता० २३	,,	चन्द्र दर्शन मु० ३०।
	३ मंगलवार ता० २४	,,	श्रीप्रताप जयन्ती
	५ गुरुवार ता० २६	,,	गुरुपुष्य योग
	७ शनिवार ता० २८	,,	श्रीधूमावती जयन्ती

ज्येष्ठ शुक्ल	१० मंगलवार ता० ३१	मई	श्री गङ्गा दशहरा
	११ बुधवार ता० १	जून	निर्जला एकादशी व्रत
	१२ गुरुवार ता० २	,,	प्रदोषव्रत ।
	१४ शनिवार ता० ४	,,	श्री सत्यव्रत चान्द्री पूर्णिमा
आषाढ़ कृष्ण	४ गुरुवार ता० ९	जून	श्री गणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्ट० टा० ९।५९
	१० बुधवार ता० १५	,,	मिथुन संक्रान्ति पुण्यकाल स्टे० टा० १२।५३ पर्यन्त मु० ३०
	११ गुरुवार ता० १६	,,	योगिनी एकादशी व्रत
	१२ शुक्रवार ता० १७	,,	प्रदोषव्रत
	३० सोमवार ता० २०	,,	सोमवती अमावस्या सूर्यग्रहण मेला कुरुक्षेत्र
आषाढ़ शुक्ल	२ मंगलवार ता० २१	,,	चन्द्र दर्शन मु० ४५ श्री जगदीश रथ यात्रा
	९ मंगलवार ता० २८	,,	भड्डुली नवमी

व्यापार - भविष्य - विवेचन

[ले०—श्री पं० हेमन्तकुमार शर्मा साहित्यालंकार]

हमने अपने दिसम्बरके लेखमें (जो कि 'श्रीस्वाध्याय'के नव-वर्षाङ्कमें प्रकाशित हुआ था) लिखा था कि ८ जनवरीसे भारी मंदेकी लाइन चालू होगी। यद्यपि जनवरी फरवरी मासमें बीच बीचमें तेजीके झटके कई बार आए, किन्तु वह तेजी टिकी नहीं तथा प्रत्येक वस्तुके भाव टूटते ही चले गए। कई वस्तुओंमें तो इतना मंदा आया कि पिछले १० वर्षके सभी मंदेके रिकार्ड तोड़कर नये भाव बन गये। आज तारीख ५ मार्चको यह लेख लिखते समय जैतो मंडीमें तैयार चनेका भाव ६॥) प्रति मन तथा जेठ वायदेका भाव ५॥) मन है। यह भाव सन् १९४२-४३के पश्चात् ११ वर्षमें वापिस आए हैं। ८ जनवरीको ३२० एफ. क्वालिटीकी रुईका भाव ७६॥) प्रति मन था। आज इसी क्वालिटीकी रुईका भाव ६२) प्रति मन है। दो महीनेसे भी कम समयके भीतर १४॥) प्रति मनका मंदा आ चुका है। इसी प्रकार अन्य सभी वस्तुओंके भाव मंदे हैं, केवल गेहूंका भाव ऊंचा है, अर्थात् १२) १२॥) का भाव है। गुवार वायदा बैसाख ४।।।≡) गुड़ वायदा बैसाख ११॥)का भाव है।

हमारे पास कई व्यापारियोंके पत्र आये हैं। उन्होंने लिखा है कि आपका मंदेका विचार बिल्कुल ठीक निकला, लेकिन हमने कुछ नहीं कमाया। एक दो पत्र तो इस आशयके भी आए हैं कि हमने बिकवालीका काम करके भी नुकसान उठाया। जब किसी वस्तुका भाव लगातार टूटता चला गया तो इन व्यापारियोंने माल बेचना आरम्भ किया तथा तेजीका रीऐक्शन आते ही घबरा कर बिका हुआ माल काट कर नुकसान उठाया। जिस व्यापारीने दुहरा माल खरीद कर लिया उसके नुकसानका तो ठिकाना ही नहीं रहा।

वास्तवमें हानि-लाभ तो अपने अपने प्रारब्ध तथा ग्रह दशाके अनुसार होकर ही रहता है। यह शास्त्रीय सिद्धान्त है। जब ग्रह दशा उल्टी चल रही हो तो सोनेको हाथ लगानेसे भी मिट्टी हो जाता है तथा जब प्रारब्धका सितारा चढ़ा हुआ हो तो अपने आप ही मनुष्यको ऐसी-ऐसी बातें सूझने लग जाती हैं कि जिस काममें भी वह हाथ लगाए उसीमें दिन दुगना रात चौगुना लाभ होता है। ज्योतिष विद्यामें यह शक्ति नहीं है कि किसीके प्रारब्धकी रेखको बदल सके। यह विद्या तो केवल भविष्यका ज्ञान प्राप्त करनेका साधनमात्र है। जब कभी मनुष्यको भविष्यमें ग्रह दशा खोटी आने वाली दिखाई दे तो उसको चाहिए कि सब प्रकारका व्यापार बंद करके धैर्य और शांतिसे समय व्यतीत

करे, तथा जो भी हानि या कष्ट उन दिनों आए उसको सहन करनेका प्रयत्न करे। जिस समय ग्रह दशा अच्छी आती दिखाई दे उस समय धीरे धीरे व्यापारको बढ़ाए तथा साहसके साथ घर आती हुई लक्ष्मीका सत्कार करे। सारांश यह कि व्यापार करते समय आप प्रथम तो अपने दिनमानकी परीक्षा करें तथा फिर हमारी भविष्यवाणी सच है या नहीं इस बातकी परीक्षा करें। दोनों बातें परीक्षामें ठीक उतरें तब तो साहसके साथ व्यापार करें तथा लाभ होने पर व्यापारको बढ़ाएं। अन्यथा व्यापार बंद करके कुछ दिन चित्तको शांति दें।

हमारे विचारमें अब प्रत्येक वस्तुमें पर्याप्त मंदा आ चुका है। भारत सरकारकी भी अब यही चेष्टा है कि कृषि पदार्थोंके मंदेको रोका जाए। इन टूटे हुए भावोंमें माल बेचने वालेको कदाचित् थोड़ा बहुत लाभ भाग्यवशात् हो जाए तो कोई बड़ी बात नहीं। किन्तु हमारे विचारमें अब तेजीका व्यापार ही करना अधिक लाभदायक होगा। १६ मार्चको बृहस्पति मार्गी होगा। यहांसे बाजार पलटा खा जाएंगे तथा धीरे धीरे बाजारोंकी रंगत सुधरने लग जाएगी। हमारी इच्छा थी कि इस ग्रहकी गति बदल जानेके पश्चात् ३-४ दिन बाजारकी रंगत देखकर भविष्यके लिए अपने विचार लिखें। किन्तु 'श्रीस्वाध्याय'के सुयोग्य सम्पादकजीकी आज्ञा है कि ता० ७ मार्च तक लेख उनकी सेवामें अवश्य पहुँच जाना चाहिए। अतः इस लेखके पाठकोंसे हमारी यह प्रार्थना है कि १६ मार्चके पश्चात् कमसे कम १५ दिन बाजारकी रंगतको परीक्षा करें। यदि लगातार १५ दिन थोड़ी बहुत तेजीकी रंगत रहे तब तो आगेके लिए तेजीका व्यापार करें। अन्यथा हमारे इस लेखको अशुद्ध समझ कर, हमसे पत्र व्यवहार करके हमारे विचारकी जानकारी प्राप्त करें। पत्र 'श्रीस्वाध्याय'के मार्फत लिख सकते हैं।

बाजारोंकी रंगतकी परीक्षा किस ढंगसे करें, इसके लिए पाँच विशेष योग यहां लिखते हैं। (१) १७ मार्चको राहु चन्द्रमाकी युतिके कारण एक बार सब बाजार तेज खुलने चाहिएं। इसके पश्चात् दिन भर या तो भाव टिके रहने चाहिएं अथवा साधारण तेजी रहनी चाहिए। यदि १७ मार्चको खुलते बाजार तेजी न आवे या तेजी आकर शाम तक फिर मंदा रह जावे तो समझ लें कि बृहस्पतिका तेजीका प्रभाव निश्चित नहीं हुआ, अभी इसमें शंका है।

(२) इस मासकी संक्रान्ति १४ मार्चकी है। १५ मार्च को यदि तेजी रहे तब तो बृहस्पतिके मार्गी होनेके प्रभावसे आगे अच्छी तेजी आनेकी आशा करें। यदि १५ मार्चको बाजार मंदे रहें तो कमसे कम २४ मार्च तक तो अवश्य ही मंदा रहेगा तथा इसके पश्चात् भी तेजीकी आशा कम रखनी चाहिए।

(३) २१ मार्चसे पंचक प्रारम्भ होते हैं तथा २५ मार्च तक रहेंगे। २५ मार्चको नववर्ष तथा नवरात्रका आरम्भ है। २४ मार्चको रवि चन्द्रमाकी युति है। अतः २१से २५ मार्च तक तेजी रहे तब तो भविष्यके लिए तेजीकी आशा रखें। यदि यह दिन मंदेके रहें तो बृहस्पतिकी चालसे तेजीकी आशा न रखें।

(४) २७ मार्च रविवारको चंद्रमा तथा मंगलकी मेष राशिमें युति है। अतः २८ मार्चको अच्छी तेजी आनी चाहिए। यदि २८ मार्चको तेजी न आवे तो तेजीकी आशा न रखें।

(५) ३१मार्चकी रात्रिके समय बृहस्पति तथा चंद्रमाकी युति है। अतः गुरुवार १ अप्रैलको भी अच्छी तेजी आनी चाहिए।

ऊपर जो ५ विशेष योग लिखे हैं इन सबकी परीक्षा करें। यदि इस परीक्षासे आपको तेजीकी रंगत दिखाई दे तब तो बेखटके होकर तेजीका व्यापार करें। अन्यथा हमसे पत्रव्यवहार करके फिर व्यापारमें हाथ लगावें।

यदि ऊपर लिखी हुई परीक्षा से तेजीकी रंगत बन गई तो यह तेजी ३ मई तक अवश्य चालू रहेगी। १ मासके अन्दर ही अच्छी तेजी आनेकी आशा है। इस समय वस्तुओंके भाव बहुत टूटे हुए हैं। अतः यदि तेजी चल पड़ी तो अप्रैल मासमें प्रत्येक वस्तुके सवाये भाव हो जायेंगे।

३ मईके पश्चात् तेजी समाप्त होकर एक बार फिर मंदेकी लाइन चालू हो जायगी। किन्तु इतने दिन पहले कोई पक्की धारणा निश्चित करना हमें उचित नहीं प्रतीत होता। कहीं ऐसा न हो कि हमारी धारणा गलत निकले और हमारे प्रेमी व्यापारी वर्गको हानि हो जाए। अतः आपसे हमारा यही अन्तिम निवेदन है कि ३ मई तक

खरीदे हुए मालका नफा खाकर भविष्यके लिए पत्र द्वारा हमारे विचार जान लें। उसके पश्चात् कोई नया काम करें, तथा हर समय भगवान् पर भरोसा बनाए रखें। प्राणि मात्रके भाग्यका नियंता भगवान् ही आपकी रक्षा करने वाला है।

इन तीनों ही मासोंमें व्यापारमें अकल्पित घटाबढ़ी होगी, अप्रैल मासमें रुख तेजीका रहेगा, शेष दो मासोंमें फिर मन्दी ही आयेगी। अबकी बार मन्दा तेजीके खास-खास दिन दे रहा हूं। ता. १ अप्रैलको हर्शल मार्गी होता है, ता. १० अप्रैलको बुध महाराज अस्त होते हैं, १३ अप्रैलको सूर्य मेष राशिमें प्रवेश करता है अतः अप्रैल मासमें तेजीका ही रुख रहेगा।

१० मईको गुरु तथा हर्शलकी युति होगी जिससे अब पुन: मन्देकी लाईन चल पड़ेगी, मन्दा तेजीके विशेष दिन इस भांति है—

८ अप्रैलको प्रातः ८-३१ पर चद्रमा तथा नेपच्यूनकी अंशात्मक युति होगी, जिससे समस्त बाजारोंमें तेजीकी लहर दौड़ जायेगी। १० अप्रैलको चन्द्रमा तथा शनिकी अंशात्मक युति होगी साधारण मन्दा रहेगा। १३ को चन्द्रमा तथा राहुकी अंशात्मक युति होगी, बजार तेजीकी ओर बढ़ते चले जायेंगे। २० को चन्द्रमा तथा शुक्रकी अंशात्मक युति प्रातः ५-३० पर होगी, रुई, चांदीमें विशेष मंदा आयेगा। २३ को सूर्य तथा बुधकी अंशात्मक युति प्रातः १० बजे होनेसे गुड़, गुवारमें साधारण मंदा आयेगा। २८ को प्रात: ही चन्द्र तथा गुरुकी एवं चन्द्र तथा हर्शलकी अंशात्मक युतिसे समस्त बाजार मन्दे रहेंगे। ३० अप्रैलको चन्द्रमा तथा प्लुटोंकी अंशात्मक युति सायं ३ बजे होगी जिससे समस्त बाजारोंमें अचानक तेजी आ जायेगी।

५ मईको दिनके १-२६ पर चन्द्रमा तथा नेपच्यूनकी युतिसे तेजी आयेगी।

७ मईको चन्द्रमा तथा शनिकी युतिसे मंदा आयेगा।

१० मईको चन्द्रमा तथा राहुकी युतिसे तेजी आयेगी।

११ को गुरु तथा हर्षलकी युतिसे साधारण लाईन मन्देकी चल पड़ेगी।

१६ को विशेष मंदा आयेगा।

२१ को सूर्य तथा चन्द्रमाकी युतिसे सूर्यका प्रभाव जो तेजीका था, समाप्त हो जायगा।

२३ को चन्द्रमा तथा बुधकी युतिसे गुड़, गुवारमें मंदा।

२५ को चनोंमें और चांदीमें मंदा आयेगा।

२७ को चन्द्रमा तथा यमराजकी युतिसे तेजीका झटका।

१ जूनको चन्द्रमा तथा इन्द्रकी युतिसे बाजार तेज।

३ जूनको बाजार मन्दे रहेंगे।

१६ जूनको सूर्य तथा बुधकी युतिसे बाजार मंदे होंगे।

२२ को पुन: मन्दा ही आयेगा।

२४-२८ जूनको तेज रहकर बादमें मंदे होंगे।

संग्रह करनेवाले व्यापारियोंको भाद्रपद मासके अनन्तर ही स्टाक करना चाहिये, शेष जानकारीके लिए समय-समय पर पत्र द्वारा पूछें, अब बिनौले संग्रह करके लाभ उठाना चाहिये। यह लेख लिखनेके समय जैतोमंडीमें विनोलोंका भाव ३२० का काला ९॥।) प्रति बोरी है तथा श्वेत देशी का ११) प्रति बोरी है जो कि आगे ३२० के बिनौले १४) प्रति बोरी हो जायेंगे, संग्रह कर्ता लाभ उठायें।

——

[पृष्ठ ८ का शेष]

है, जैसा कि सिंगापुरका पतन या 'प्रिंस-आफ-वेल्स' जहाजका जापान द्वारा डुबोया जाना था। अमरीका यदि इन द्वीपोंको खाली करता है तो एशियामें वह अपना वर्चस्व स्थापित करनेकी आशा नहीं कर सकता। यदि वह इनके लिए लड़ता है तो वह युद्ध-पिपासु कहलायगा और युद्धाग्निके प्रचण्ड होनेकी सम्भावना है। शान्तिसे इस समस्याका हल होना सम्भव है, यदि जनवादी चीन च्यांगके प्रतिनिधिके साथ एक मेज पर न बैठनेका दुराग्रह छोड़ दे। क्या शान्तिकी रक्षाके लिए पेकिंग यह दुराग्रह छोड़ेगा?

——





तीन मासका दैनिक व्यापार-भविष्य

[श्री जगद्गुरु आश्रम]

['श्रीस्वाध्याय' के पाठकोंके लिए इस लेखके लेखक बिलकुल नये हैं। व्यापारी वर्ग पहले मासका अनुभव करके फिर आगे लाभ उठावें।

—सम्पादक]

रुई, चांदी, गुड़, गुवार, चनोंके मंदी तेजीके दिन इस भांति है—

अप्रैल १९५५

ता० ८ को अच्छी तेजी।
१० को साधारण मन्दा।
१३ को तेजी।
२० को अच्छा मंदा।
२३ को मंदा।
२८ को मंदा।
३० को अचानक तेजी।

मई १९५५

ता० ५ को आशातीत तेजी।
७ को मंदा।
११ को विशेष मंदा।
१६ को पुनः मंदा।
२१ को अच्छा मंदा।
२३ को मंदा।
२५ को मंदा।
२७ को अचानक अच्छी तेजी।

जून १९५५

ता० १ को तेज।
३ को मंदा।
६-७ को तेज।
१६ को अच्छा मंदा।
१९ को पुनः मंदा।
२० को तेज।
२२ को विशेष मंदा।
२४ को अच्छी तेजी।
२६ को तेज।
३० को पुनः मंदा।

नोट—यदि आपको इन चांसोंसे लाभ हो तो स्पेशल लाइनके लिए श्रीस्वाध्याय द्वारा पत्र-व्यवहार करें।

दैनिक व्यापार-भविष्य

[ले०—श्रीफूलचन्द्र जैन अर्जीनवीस]

[ये नये लेखक हैं, पाठक इनकी लिखी तारीखोंका मिलान करके हमें सूचित करें। यदि लाभदायक सिद्ध हुआ तो आगे भी प्रकाशित करेंगे।

—सम्पादक]

तारीख ३० मार्च ५५को बुध मीन राशिमें प्रवेश हो रहा है यह सोना, चांदी, गुवार और अनाजमें एक दम मन्दा करेगा। चान्दी १०) तक सोना ४) ५) रु० तक गुवारा १) ११) तक मन्दा होगा। यह एक खास चान्स है। यह मन्दा १६ अप्रैल तक रहेगा। इसके बाद १८-४-५५ शुक्र मीन राशिमें प्रवेश हो रहा है जो सोना चांदीमें जबरदस्त तेजी करेगा। ३० मार्चसे १६ अप्रैल तक जितना बाजार गिरा था उतना ही तेज आजावेगा और यह तेजी १२ मई तक चालू रहेगी। १३ मईको शुक्र मेष राशिमें प्रवेश होगा और २५ मईको बुध मिथुनमें प्रवेश होगा जो सोना, चान्दी, गुवारामें जबरदस्त मन्दा लावेगा।

मईकी दैनिक तेजी मंदी

२ मई चांदी खुले बाजार खरीदो तेज होने पर बेचो।
३ मई मामूली तेज होने पर डबल बेचो, मन्दा होगा।

४ मई चांदी तेज होने पर बेचो, घटा बढ़ी खूब। गुवाराका नजराना लगाओ।

५ मई गुवारा तेज होकर डबल मन्दा।

६ मई गुवार तेज होकर मन्दा।

७ मई सोना चान्दी गुवार तेज होकर मन्दा फिर तेज।

६-१०-११ को इसी तरह बाजार चलेगा।

१२-१३ को सोना और गुवारा का नजराना लगावें।

१४ तारीखको मामूली तेज होकर मन्दा। बाजार इसी तरहसे ३१ मई तक चलता रहेगा। खुले बाजार माल खरीदते रहो। तेज होने पर बेचते रहो।

बाजार एक बार तेज अवश्य होगा क्योंकि शनैश्चर तुलामें है इसलिए एक बार बाजारको अवश्य तेज करेगा।

जूनकी दैनिक तेजी मंदी

१ जूनको चांदी, सोना, गुवार तेज होकर डबल मन्दा तथा गुवारा तेज होकर मन्दा फिर तेज।

२ जून तेज होकर मन्दा फिर तेज बन्द।

३ जून सोना, चांदी, गुवारा तेज होकर डबल मन्दा।

४ जून सोना चांदीमें मामूली घटाबढ़ी। गुवाराका नजराना लगावें।

६ जून सोना, चांदी, गुवारा तेज होकर खुले। बाजार बन्द तेज।

७ तारीख को खुले बाजार सोना खरीदो। तेज होने पर डबल बेचो। खुले बाजार मंदा होकर फिर तेज बन्द। गुवारा मामूली तेज होकर फिर मन्दा बन्द। ८-९ को सोना और गुवाराका नजराना लगावें।

१० तारीखको गुवारा तेज होकर डबल मन्दा फिर तेज बन्द। सोना चांदी मामूली तेज होक काफी मन्दा।

११ तारीख सोना ॥) ॥=) तेज होकर खुले। बाजार बन्द। गुवारा मामूली तेज होकर ≡) तक मन्दा हो सकता है।

१३ जून सोनाका नजराना लगावें। गुवारा तेज होकर मन्दा और फिर तेज।

१४ जून सोना चांदी तेज होकर खुले भाव होकर फिर तेज बन्द गुवारा खुले बाजार तेज होकर फिर खुले भाव बन्द।

१५ तारीख मामूली तेज होकर मन्दा, आगे लाइन ३० जून तक तेज थोड़ा होगा और मन्दा अधिक।

त्रैमासिक अनुभूत रिपोर्ट

[ले०—दैवज्ञभूषण श्री पं० गिरधारीलालजी शर्मा]

(१) प्रथम सप्ताह—चैत्र शुक्ल १० शनिवार ता० २ से ७ अप्रैल तक

एक बार मंदीका पूरा झटका लगेगा, रुईमें १०) १५) चांदीमें १।।) २) की मंदी होगी। ता० २ को साधारण तेजी होगी वहाँ बेचो। ता० ५, ७ को अच्छी मंदी। ता० ४-६ तेजी होके मन्दी होगी। नोट—ता० २६ मार्चको यदि चांदी मन्दी रहे तब ही आगे मन्दी समझना अन्यथा चांदीमें मंदी नहीं है।

(२) दूसरा सप्ताह—ता० ८ से १६ अप्रैल तक

घटबढ़ होते हुए भी तेजीका ध्यान रखो। घटे भाव खरीदो। ता० ८ को एक बार घटेगा वहाँ खरीदो। ता० ६-१० तेजी। ता० ११ को मंदी या तेजी अच्छी होगी और एक तरफा होगी। ता० १२ को घट-बढ़से रुई तेज चांदी मन्दी। ता० १३-१४ को तेज। ता० १५ को घट-बढ़। ता० १६ को २-३ बजेसे तेजी।

(३) तीसरा सप्ताह—ता० १७ से २३ अप्रैल तक

छुटबढ़से मन्दी होके तेजी होगी। यहाँ दोतरफा लगाना अच्छा है। ता० १८-१६ को अच्छी घट-बढ़ होगी। ता० २० को तेजी। ता० २१ और २२ को दिन भर घटबढ़ चलता रहेगा। ता० २३ को तेजी।

(४) चौथा सप्ताह—ता० २४ से ३० अप्रैल तक

ता० २७ तक सब तेज ता० २८ से रुई मन्दी, चांदी सोना, तांबा, पीतल सब तेज। ता० २५-२६-२७ में दो तारीखें अनिवार्य तेज होंगी। ता० २७-२८ में चांदी अचक

तेज। ता० २७ की रात्रीसे ३६ घंटोंमें अच्छी तेजी। यहाँ पर संसारमें विग्रह व्याप्त रहेगा।

५ पांचवाँ सप्ताह—ता० ३० अप्रैलसे ७ मई तक

घटबढ रहेगा, पहले तेजी होके मंदी होगी। चांदी मंदी नहीं होगी। रुई, कपास, जवाहरात चन्दन कपूर सब मन्दे होंगे। ता० ३० को तेजी। ता० २ को तेज खुलके मंदी होगी। ता ३ को घटबढसे मन्दी, रात्रीमें तेजी। ता० ४ को तेजी १२ या २ बजेसे होगी, यहां पर गुड़ तेज। ता० ५-६ को अच्छी घटबढ होगी। हमारा ध्यान मन्दी पर है, परन्तु इस दिन दोतरफा लगाना अच्छा है।

(६) छठा सप्ताह ता० ७ मईसे १४ मई तक

रुई अचूक तेज होगी, कोई नहीं रोक सकता करने वाला ईश्वर है। ता० ६ से या ११ से चांदी भी तेज होगी घटबढसे। ता० १३ को घटबढसे मन्दी होगी।

(७) सातवाँ सप्ताह—ता० १५ से २१ मई तक

घटाबढी रहेगी। यहां पर शेयरोंमें तेजी होगी। रुई, चांदी घटबढसे तेज। ता० १६ को अच्छी तेजी होके मंदी होगी। ता० १७ को घटबढ। ता० १८ और १६-२०-२१ को अद्भुत घटबढ होगी। ता० ७ मईसे २१ तककी स्पेशल रिपोर्ट कार्यालयसे मंगाने वाला निश्चय लाभ कर सकता है हरेक वस्तुमें घटबढ है।

(८) आठवाँ सप्ताह—ता० २२ मईसे २८ मई तक

रुई अवश्य तेज, चांदी सोना साधारण घटबढमें रहेगा। रुईका नजराना लगाना बहुत अच्छा है, या केवल तेजी लगावें। चांदीकी मन्दी लगावें। ता० २६-२७ को फीचर अवश्य तेज। ता० २७ को चांदी तेजी वा मन्दी जैसी रहेगी वैसे ही ७ दिन तक रहेगी, तेजी तो तेजी, घटबढ तो घटबढ।

(६) नौवां सप्ताह—ता० २६ मई से ५ जून तक

घट बढ रहेगी। ता० २ से तेजी ता० ३० को ४ बजे तक एक तरफा बाजार रहेगा। ता० ३१ को पहले घटबढ रहेगी, ३ बजे अचानक चांदी सोना तेज। ता० १ को मंदी होके तेजी। ता० २ को सायंकाल वंद बजार तेज रहे तो ता० ५ तक तेजी, मंदी रहे तो मन्दी। हमारा ध्यान तेजी का है।

(१०) दशवां सप्ताह—ता० ६ से १३ जून तक

रुई चांदीमें घट बढ रहेगी, एक तरफा बाजार नहीं रहेगा। घटे वहां खरीदो बढ़े भाव बेचो। ता० ६ को मन्दी। ता० ७ को तेजी। चांदी तेज रुई मंदी। या चांदी मन्दी रुई तेज विपरीत रहेगी। ता० १०-११ को शेयरमें अच्छी तेजी। ता० ११ को और वस्तु मन्दी। ता० १२ को एक तरफा बजार रहेगा।

(११) ग्यारहवाँ सप्ताह—ता० १४ से २० जून तक

रुई अवश्य मन्दी। चांदी सोना घट बढमें रहेगा। यहां रुईके व्यापारियोंको मुफ्त स्पेशल रिपोर्ट भेज सकते हैं जो ।=) आना के टिकीट भेजने पर मिल सकती है। ता० १६-१७-१६-२० में रुई अच्छी मंदी होगी।

(१२) बारहवाँ सप्ताह—ता० २१ से २८ जून तक

दैनिक व्यापार करना ठीक है या नजराना लगाना ठीक है। यहां उत्पातिक ग्रहोंका संयोग हो रहा है। ता० २१ को अच्छी तेजी। ता० २२ को तीन चार बजेसे मंदी। ता० २३ को मंदी होके तेजी। ता० २४-२५ घट बढ़। ता० २७-२८ दोनो मंदी नहीं तो एक अवश्य मंदी। आगे सर्वज्ञ ईश्वर है।

अनुभवसिद्ध व्यापारिक निर्णय

[ले०—श्री राजाराम जैन ज्योतिर्विद्]

चैत्र शुक्ला ९ शुक्रवार ता० १ अप्रैलको हर्शल मार्गी होगा—जो कि चांदीको और भी अधिक तेजीकी ओर ले जावेगा। ३० मार्चसे चला आने वाला सूर्य-बुध-योग चांदी सोनाको तेज करता हुआ यहां बलवत्तर बनेगा। २ अप्रैल को बृषे भौम केतकी ग्रन्थोक्त होगा जो कि इस तेजीका समर्थक होगा। जब कि करण ग्रन्थोक्त बृषे भौम ४ अप्रैल को होता है जो कि बादल चालके साथ बाजार गुड़, अन्न, तिलहन, बीयाँ चांदी सोनाको गिरा देगा। ५ अप्रैलको केतकी ग्रन्थोक्त बुधास्त प्राक् २६ मार्चके विपरीत भाव बनावेगा। ६ अप्रैलको ओछी घड़ीकी चतुर्दशी उपरान्त पूर्णिमा खाद्य वस्तु मात्रको तेज करेगी, कारण यहां चित्राका योग नहीं बना है। ७ अप्रैलको तेज वस्तुएं रातको बेंचें, २ दिन में लाभ लें। वैशाख कृष्ण तृतीया विशाखा नक्षत्र सहित अन्न तिलहन बीया गुड़में श्रेष्ठ तेजी ला सकेगा। यह योग सम्वत् २००१।२००४।२००६।२००७।२००९।२०१० में भी बना था तब १२ वर्षीय तेजीका वक्र सम्वत् २००८ तक चल रहा था। जैसे—संवत् १९६१ से १९७२ पर्यन्त गुरु मेषसे मीन पर्यन्त श्रेष्ठ मन्दा लाया था, पश्चात् संवत् १९७२ से १९८४ पर्यन्त मेषसे मीन पर्यन्त इन्हीं गुरुदेवने श्रेष्ठतम तेजीकी थी। तत्पश्चात् सं० १९८४ से १९९६ पर्यन्त इन्हींकी इन राशियोंके भ्रमणकालमें श्रेष्ठतम मन्दी रही। तदुपरांत सम्वत् १९९६ से २००८ पर्यन्त महानूतम तेजी रही, जिस ने व्यापारकी तेजीके रिकार्डको ही तोड़ दिया था, तो अब संवत् २००८ के अन्तसे चली मन्दी सम्वत् २०२० पर्यन्त क्या स्थिति दिखा सकेगी यह सोचनेका विषय है। असंख्य बीघा ऊसर बंजर भूमिमें खेती होने लगी है, अब कपासके उत्पादनके लिए गवर्नमेंट का ध्यान भी सोचिये। नव ग्रह पंचागमें दशवां ग्रह व्यापारी वर्ग तथा ग्यारहवां ग्रह गवर्नमेंट है। जब तक दो का गुट्ट न मिले काम बन नहीं सकता, अत: जब भी दो का गुट्ट बनेगा, वही पार्टी विजयी होगी। इस वर्षका वर्षेश शुक्र मन्त्री बुध है। गवर्नमेंट और ग्रह गतिका गुट्ट एक है। अब इनके पीछे व्यापारी बहुत सोच कर कदम रखना चाहता है, यह नितान्त सत्य है, किन्तु व्यापारीका दिवाली से वर्षारम्भ, राजाका (गवर्नमेंटका) चैत्र शुक्ला १ से तथा ग्रहोंका वर्ष भी इसी तिथिसे प्रारम्भ होता है। १४-४ ५५ को मेष संक्रान्ति गत संक्रान्तिसे तीसरे वार चौथे नक्षत्र रातको बुधवारमें लगेगी। यथा फल—

सूर्ये धिष्ण्ये च पूर्वस्मात् यदि वारे तृतीयके।
संक्रांतिर्निशि सूर्यस्य सुभिक्षं स्यात्तदोत्तमम्॥

साथ ही यहां सूर्य शनिका प्रतियोग भी हो गया है तथा एक योग और भी बना है जो कि नेताको व्याधि और संसारमें भयकी स्थिति अग्निकांडोंका भयङ्करतम प्रकोप दिखावेगा, तथा बच्चोंको चेचक रोगसे पीड़ित होना पड़ेगा। जिससे हाहाकार मचेगा। शास्त्रोक्त फल—

मेषे च भवति भानुर्वृषे भौमसुत: स्थिति:।
नृपतेश्च भवेद् व्याधिर्लोकानां च महद् भयम्॥

तात्पर्य यह है कि १४ अप्रैलको जिस वस्तुका रुख जिस ओरका रात तक बनता दिखाई दे वह ग्रहण करना उचित है।

१५ अप्रैलको करण ग्रन्थोक्त मेषे बुध गुड़में श्रेष्ठ मन्दा लावेगा। करणकेतकी दोनों मतसे मीने शुक्र तीन दिनमें हर वस्तुमें—विचित्र तेजी मन्दा चलायेगा, नजराना लगाना सोनेमें सुहागा होगा। १५ अप्रैलसे सूर्य बुध योग मेषमें चांदी सोनाके भावको बढ़ानेमें तत्पर होगा। २० अप्रैलको उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्रका क्षय खाद्य वस्तुमात्रको मन्दा करेगा। २३ अप्रैलको शनिवारी प्रतिपदा उपरान्त द्वितीयाको १५ मुहूर्त्त चन्द्रदर्शन खाद्यवस्तुमात्र, चांदी सोनाको तेज करेगा। मेष संक्रान्तिमें वायुके प्रकोपसे अनेक स्थानोंमें महान् क्षतियां होंगी। २५ अप्रैल सोमवारको ओछी घड़ीकी अक्षयतृतीयाको रोहिणी कोई महत्त्वपूर्ण योग नहीं है। २६ अप्रैलको करण ग्रन्थोक्त कर्के गुरु: बाजार में आकाशी पाताली भावोंका दिग्दर्शन होगा। आशा-तेजीकी जान पड़ती है किन्तु बिना रुख देखे व्यापार करना

खतरेसे खाली नहीं है। २७ अप्रैलको तिथि क्षय भारण्यां रवि: खाद्य वस्तु मात्रको तेज करनेमें अग्रसर होगा। २६ अप्रैलको करणग्रन्थोक्त बुधोदय पश्चिममें भयानक आंधी और हर वस्तुके भावोंको एकदम तेज करेगा। ता. १ मईको वृष बुधः एक सप्ताहमें अनेक नये स्थानोंमें भूकम्प कर देगा। यहां वृष राशिमें मंगल बुध योग चांदी सोना में असाधारण मन्दीकी लायन बना दे तो कोई बड़ी बात नहीं है। कहा भी है—

दो आश्विन दो भादवा दो कार्तिक दो माह।
गहना कपड़ा बेचिके नाज विसाहो साह॥

चांदीके लिए स्पष्ट लिख दिया गया है, कपड़ा सबसे मन्दा तथा अन्न कब संग्रह किया जावे, स्पष्ट जाननेकी फीस भेजें। लौंद वाले वर्षमें तेल गुड़ प्रत्येक द्विदल अन्न अमचूर, दालें, जीरा, धनियां, मेथी, हल्दी, लालमिर्च बीयांमें श्रेष्ठ तेजी आया ही करती है। अनेकानेक बार परीक्षित योग है। मंगल बुध योग अन्य वस्तुओंमें भी कोई नई स्थिति बना देगा। ३ मई केतकी ग्रन्थोक्त बुधोदय पश्चिममें २६ अप्रैलसे विपरीति स्थिति उत्पन्न किए बिना न रहेगा। इसी दिन केतकी ग्रन्थोक्त सर्वाङ्ग शुद्ध कर्के गुरुः दिनके साढ़े ग्यारह बजे होगा, बाजारमें कोई विचित्र स्थिति उत्पन्न करेगा। बादल वर्षा भी कृषि प्रधान क्षेत्रों में होगी। पूर्णिमा विशाखा नक्षत्र रहित प्लूटो मार्गी बड़े विचित्र योग एकत्रित हुए हैं। बाजारको देखकर या खुला नजराना लगाने वाला भी धनी बन सकेगा। ज्येष्ठकी प्रतिपदा शनिवारी अतः मनुष्योंका प्राणनाश राज्य सत्ता पर विपत्ति तथा १ मास बाद तेजीका संचार करेगी। द्वितीयाको बुध सूर्य शनिकी प्रतियुति १४ अप्रैलसे विपरीत बाजार चलायेगी। वृष संक्रान्ति चौथेवार चौथे नक्षत्र शनिवारी है, जो कि सम्वत् २००६ में इसी तरह शनिवारी होने पर भी श्रेष्ठ मन्दी आयी थी, सचेत। लाभ हानिका पूर्ण उत्तरदायित्व प्रयोक्ता महोदय अपने ही ऊपर जानकर बाजार की स्थिति और अपनी शक्तिको तोलकर या नजराना लगा करके कार्य करें।

—

तीन मासका साप्ताहिक व्यापार भविष्य

रुई, चांदी, सोना, जूट, शेयर्स, एरण्डा, गुड़, गवार, मटर आदिकी स्पेशल रुख

[लेखक— श्री पं० गङ्गाप्रसादजी ज्योतिषाचार्य]

(१) ता० ४ से ११ अप्रैल तक—

ता० ४ को २ बजे चांदी, सोना खरीदो। ता० ५ को २॥ बजे डबल बेचो। गुरुवारी पूर्णिमा मन्दीका योग बना देगी। ता० ८ को खुलते बाजार खरीदो, ता० ६ को २॥ बजे डबल बेचो, २॥ घंटेकी मंदी हवा बांध देगी। सावधान! ता० ११ के घटे भावोंमें खरीद करना ही चांस है। गुड़, शक्कर, चावल, धान, कपड़ा रुई, कागजके भावोंमें तेजी, ता० ५ को खरीदो ११ तक लाभ हो जायगा। सरसों-अलसी, गेहूं, चना. मटर, गुवारके भावोंमें मन्दी रहेगी। ता० ४ को बेचो, ता० १० तक लाभ हो जावेगा। बम्बई मारकेट, कलकत्ता मारकेटमें इण्डियन आइरन, टाटा आर्ड-नरी शेयरोंमें तेजी रहेगी, ता० ५ को खरीदो ११ तक नफा हो जायगा।

(२) ता० १२ से १६ अप्रैल तक—

ता० १२ को खुलते बाजार चांदी, सोना, रुई, गुड़, शक्कर, चावल, सरसों अलसी, गुवार, मटर, गेहूं, चना, हल्दी, किराना, मूंग, मसूर, खरीदनेके चांस हैं। इस सप्ताहके ग्रह संयोग इकतरफा तेजीके द्योतक हैं। मूंगफली, तेल-मूंगफली, घृत, तिल तेल, आर्डनरी, आयरनके भावोंमें पर्याप्त तेजी रहेगी। सावधान! ता० १२ को खरीदो ता० १४ के मन्दीके रियेक्शन पर ध्यान जमाओ, ता० १६ तक लाभ उठाओ। इस पक्षमें चांदी, रुईके अच्छे चांस हैं, गली लगाकर लाभ उठावें। मूंगफली, गल्ला, खरीदनेके चांस हैं। अरण्डा, गुड़की तेजी ता० १७।१२ को हवा बांध देगी, ४२ घंटेकी तेजी फेंककर भाग्य जगावें। अमरीका कोटन फीचर ता० १७।१८।१६ ३ दिनकी ४२की लड़ीका कौतुक देखना, ४।४।६ का जोड़ा साथ रहेगा।

(३) ता० २० से २७ अप्रैल तक—

इस सप्ताहमें ग्रह संयोगसे बाजार दोनों तरफ चलेगा, नीचेमें खरीदो ऊंचेमें बेचो लाभका कारण होगा। ता० २० को २॥ बजे चांदी, सोना, रुई, आर्डनरी, आयरन, जूट खरीदो। ता० २३ के २॥ बजे तक नफा लो, ता० २५ की मंदीमें फिर खरीदो, ता० २७ को डबल बेचो, सावधान! ता० २७ को २॥ बजे जिस तरफ बाजार चले उसी गाड़ीमें सवार हो जाओ, मूंगफली, गुड़, शक्कर, कपड़ा, लालमिर्च, हल्दी, सूत, आयरन टाटा आर्डनरीके भावोंमें तेजी रहेगी, जहां मंदी आवे वहां ही खरीदो, दो तरफा लाभकी आशा रखो। ता० १५ को रोहिणी नक्षत्र पर मंगल तिलहनोंमें तेजी करेगा, सरसों अलसीके गिरे हुए भावोंमें सुधार करेगा, मंदीमें खोये व्यापारियोंको तेजीका सहारा प्राप्त होगा, अपने ग्रह देखकर हमारी लाईनको बाजारसे मिलाकर व्यापार करें। खोटी दशा वालोंको दर्श अमावस्याको घृतपात्रमें छाया दान करना चाहिए।

(४) ता० २८ अप्रैलसे ४ मई तक—

इस सप्ताहमें पुनः कर्कगुरु तेजीका समर्थन करेगा। हर एक वस्तुमें ता० २८।३० में दोतरफा घटबढ़ दिखाकर तेजीको भड़कायगा। चांदी, सोना, रुई ता० २६ को बेच कर ता० २ को २॥ बजे डबल खरीदो, ता० ४ तक लाभ रहेगा। तिलहन वा गल्लेके बाजारोंमें खामोशी इकतरफा लाइनका संकेत दिखावेगी। ता० ३ के बाजारकी २॥ बजेकी रुख वाली गाड़ीमें सवार हो जाओ, अगले सप्ताहमें मुराद पूरी होगी। टाटा आर्डनरी, मूंगफली, तिलतेल, आयरन, गुड़, शक्करके बाजारोंकी खामोशी तेजीका रुख बना देगी। सावधान—इस सप्ताहमें जिन वस्तुओंमें मंदीका रुख चले वही संग्रह करो, अगला सप्ताह तेजीका द्योतक है।

(५) ता० ५ से १२ मई तक—

इस सप्ताहमें दोतरफा बाजार चलेगा। चांदी, सोना, रुई—ता० ५ को २॥ बजे बेचो, ता० ६ को २॥ बजे डबल खरीदो, ता० १२ तक दोतरफा लाभ हो जायगा। अलसी, सरसों, अरंडा, मूंगफली, गुड़, गल्लेके बाजारोंमें मंदीका

रियेक्शन आवेगा। ता० ६ को बेचो, ता० ६ को डबल बेचो, ता० १२ तक मन माना लाभ हो जायगा, टाटा आर्डनरी, आयरन, जूटके भावोंमें तेजीका रियक्शन आकर रुख स्टेडी रहेगा। कपड़ा, सूत, कागज, कालीमिर्चके भावोंमें तेजीका उछाला आते ही बेचो २॥ दिनकी मंदीकी चाल बराबर नफा दे जायगी।

(६) ता० १३ से २० मई तक—

इस सप्ताहमें ग्रह संयोग इकतरफा तेजीके द्योतक हैं। ता० १३ को खुलते बाजार चांदी, सोना, रुई, अलसी, अरंडा, मूंगफली, गुड़, शक्कर, हल्दी, कालीमिर्च, आयरन, आर्डनरी खरीदनेके चांस हैं। चांस पर भरोसे वाले लाभ उठा जांयगे बाकी देखते रह जायेंगे। इस सप्ताहमें लाभके इच्छुक ७ दिनकी तेजीमंदी लगाकर लाभ उठावें। अरहर, मटर, गुवार, जौ, चना गेहूँ, मसूरके भाव ता० १६ से तेजीकी ओर जायेंगे, ता० १६।२० तक लाभ होनेकी आशा है।

विशेष चांस—गुड़, जूट, मटर, गुवार, सरसोंमें होगा। स्टाकमें नफा मिले तो छोड़ो नहीं, आगे मंदीकी धारणा है। तिलहन, गल्ला आगे जूनमें मंदा रहेगा। चेतावनी व्यापारियोंके कामकी है।

(७) ता० २१ से २८ मई तक—

इस सप्ताहमें दोतरफा रुख चलेगा। प्रायः सभी वस्तुके बाजारोंमें खामोशी होकर भाव ऊंचे नीचे होंगे। हमारी राय घटे भावोंमें खरीदने ऊंचे भावोंमें बेचनेकी है, हरसमय मिलता हुआ मुनाफा ले लेना चाहिये। ता० २३ की मंदीमें चांदी, सोना, रुई, जूट, आर्डनरी, खरीदो, ता० २७ के ३ बजे लाभ उठाओ, ता० २८ को डबल बेचो, ता० ३० को २ बजे बराबर कर लेना ही चांस है। गुवार, मटर, सरसों अलसी, अरण्डामें एक प्रखर मंदीका रुख चलेगा। चढ़े हुए भावोंमें ता० २२ को बेचो, २८ तक लाभकी आशा रखो। आर्डनरी शेयरोंमें उतार चढ़ाव विशेष रहेगा, ता० २३ को २॥ बजे आयरन, आर्डनरी, जूट, बारदाना, कपड़ा, सूतके भावोंमें तेजीका रुख रहेगा, ता० २४ को १॥ बजे खरीद करके ता० २७ तक नफा लो और बेचो।

(८) ता० २६ मईसे ५ जून तक—

इस सप्ताहमें मंदीके योग अधिक बन रहे हैं। ता० ३१ को १॥ बजे बाजार चांदी, सोना, रुई, जूट खरीदो। ता० २ को ५ बजे डबल बेचो, ता० ७ की श्याम तक नफा मिलेगा। सावधान! ता० ३१ को ९ बजेका बाजार देखो तेजीके तार आवें तो अवश्य ही खरीदो, यहां दोतरफा बाजारोंकी प्रगति होनेसे लिखा है। गुड़, शक्कर, तिल, तेल, गल्लेके भावोंमें मंदीका जबरदस्त रियेक्शन आवेगा। व्यापारी चिन्तित हो जायेंगे, हमारा ध्यान अगले सप्ताहमें तेजीका है। टाटा आर्डनरी, आयरन, कालीमिर्च कपड़ा सूत, रेशमके भावोंमें कुछ मंदीका रुख रहेगा।

स्पेशल चांस—रुई, अरंडाकी मन्दी लगावें—अमरीकन कोटन फीचरमें ४४ की लड़ी ३०, ३१ की देखो ६। ४० लगाओ।

(९) ता० ६ से १३ जून तक—

इस सप्ताहमें अचानक तेजी, बिदेशी खबरों पर आवेगी। ता० ६ को २॥ बजे चांदी, सोना जूट, बारदाना खरीदनेके चांस हैं। ता० १० के ४ बजे तक लाभ हो जायगा। टाटा आर्डनरी आयरन मूंगफली, तिल, तैल, अलसी, मसूर, चना जौ, गेहूँ, अरहर, गुवार मटरके भावोंमें ता० ७ को २॥ बजे खरीदनेकी राय है। अचानक तेजी ७ दिनमें नफा दे जायगी। गुड़, शक्करके भावोंमें मंदी रहेगी, इनका बेचना ता० ७ को अच्छा रहेगा। अगले सप्ताहमें सूर्यग्रहणकी तेजी ८ दिन पहले ही सूचना देगी, व्यापारी सावधान, मंदीको पकड़कर मत बैठना।

(१०) ता० १४ से २० जून तक—

इस सप्ताहमें चांदी, रुई, जूट, आयरनमें अच्छी तेजी रहेगी, खरीद करने वाले लाभ उठा सकेंगे, बाकी देखते रह जायेंगे, ता० १४ को १॥ बजे खरीदो, ता० १७ के श्याम तक नफा उठाओ, गुड़, मूंग, मूंगफली, अरंडा, अलसी, सरसोंके भावोंमें तेजीका जोर रहेगा, घटे भाव खरीदो ऊंचे भावोंमें बेचो। जहां नफा मिले उसे छोड़ो नहीं, गुड़, शक्कर, गुवार, मटर, अरहर, मसूरके भावोंको तेजी पर्य्याप्त ही दिखाई देगी। आगे हमारा ध्यान मंदीकी तरफ है। बाजार देखकर व्यापार करना ही समझदारीका काम होगा।

(११) ता० २१ से ३० जून तक—

इस सप्ताहमें ग्रह संयोग द्वारा इकतरफा मन्दीका रुख है। चांदी, सोना, रुई, जूट, आयरन ता० २१ को २॥ बजे बेचो और ता० २४ को रियेक्शनमें और बेचो, ३० तक लाभ हो जायगा। सावधान ! ता० २१ के २ बजेसे और ता० २२ के २॥ बजे तक बाजारोंमें इकतरफा मन्दी चले तो ७ दिनकी मन्दीकी गली लगाने वाले अच्छी कमाई करेंगे। गल्ला, तिलहन, गुड़, शक्कर, मटर, गुवारके भावोंमें भी मन्दीकी सूचना है, वर्षाकी खैंच तथा विदेशी वातावरणके कारण ता० २८के बाजारोंमें तेजी प्रतीत होती है। व्यापारी ता० २७ के ४ बजे तक नफा लेकर रुख देखें।

त्रैमासिक स्पेशल रुखकी आगाही

रुई जरीला—यह रिपोर्ट लिखते समय १४ मार्चको रुई मई वायदा ५५२) का भाव है। भावी ग्रहगणना देखते अधिक मंदीके योग नहीं पाये जाते, ५४६) होते टरनिंग भाव ५३५॥।) होते ही खरीदना ही चांस है। अप्रैल-मईमें ग्रहोंका अभिप्रायः देखनेसे मईके भावोंमें ६४) टकोंकी तेजीका चांस है। अतएव बढ़कर ६१०।।) से अधिक भी हो जाय तो आश्चर्य नहीं है। भावोंकी टरनिंग लाइनें ५५२) ५४६) ५३५) ५४१) ५५४) ५६६) ५७०) ५७८) ५८५) ५६२) ६०४) ६१०) ६१८) ६२५) ६३८) खरीद और बेचीके भाव—टरनिंग पोइंटोंमें ध्यान रखते हुए व्यापार कीजिये। ता० ४, ११, १६ अप्रैलको २१ मई की तेजियां लगाते बीच बीच में टरनिंग भावोंमें तारुणी करते व्यापारको नफेमें सुधारते रहें।

सोना—रिपोर्ट लिखते सोनेका भाव ६२॥=) है ग्रह-संयोग देखते मंदीका योग ६०) ६१॥) भले ही हो जाय किन्तु ज्यादा मन्दीका योग नहीं है। भावी आगाही सोना ६८) १००॥) तक बढ़नेका योग पाया जाता है। ता० १४ अप्रैलको २४ मईकी तेजियां लगावें, टरनिंग भाव ६३) ६१) ६२) ६४) ६५) ६७) ६८) १००) तक प्रत्येक मन्दीके रियक्शनोंमें खरीदो, धीरे-धीरे नफा सुधारते रहें। सावधान ! ता० १६ अप्रैलसे २० तक तेजी नहीं आवे तो सोना ६०) की टरनिंग लाइनके नीचे ८६) होकर तेजीमें प्रवेश करेगा।

चांदी—रिपोर्ट लिखते समय १६४) बम्बईका भाव है। ग्रह संयोगसे मन्दीकी लाईन केवल रियक्शनोंसे ३) ४) की आकर १६०) भले ही बन जाय, किन्तु ग्रहसंयोग तेजीका समर्थन करता है। चांदीमें तेजीकी आगाही १८४) की है। अप्रैल मईमें अच्छी तेजी दिखाई दे रही है, अप्रैलमें ता० ४, ११, १६, २५ मईमें ९, १६, २७ तारीखोंमें खरीद करना ही अचूक चांस है। ७, १५ दिन की तेजीयां लगाकर नफेमें व्यापार सुधारते रहें। चांदीके भावोंकी टरनिंग लाईनें १६४) १६२) १६०) १६२) १६४) १६६) १६८) १७१) १७३) १७६॥) १७८) १८०) १८१) १८४॥) खुलासा १६०) से १८४) तक २४) टकेकी तेजीकी लाईन बनने जा रही है। अप्रैल, मईमें विशेष असर होगा। मार्चके अन्तमें नीचेसे भाव १५४) या १५७) शायद बन जाय नहीं तो १६०) से नीचा नहीं जंचता है। खरीद करने वाले ही लाभ उठा सकेंगे बाकी देखते रह जायेंगे। अतएव प्रत्येक मन्दीके रियक्शनोंमें चांदी का खरीदना ही चांस है।

जूट—कलकत्ता मारकेटमें जूटका भाव रिपोर्ट लिखते समय भाव १३०) है। ग्रह संयोग देखते ७) ६) की मंदी का रियेक्शन मार्चमें आकर १२१) भले ही हो जाय, किन्तु हमारी धारणा तेजीकी है। मार्च, अप्रैल, मईमें टरनिंग लाइनें, जूट-वायदा (कलकत्ता) मारकेट १३०) १२८) १२५) १२३) १२६) १३०) १३२) १३४) १३७) १४०) १४२) १४६) खरीद बेचीके भावोंकी टरनिंग लाईनोंका ता० ४ अप्रैलसे बराबर मिलान करके व्यापार करते रहें, या तेजीयां लगाकर व्यापारका सुधार करते रहें। सावधान ! ता० १४ अप्रैलसे २१ के बाजारोंमें मन्दी नहीं भूलें तो अचूक चांस तेजीका परीक्षित है। वह मन्दी आप को खरीदका अच्छा मौका देगी—टरनिंग भावोंकी नीची लाईन १२३) से १२०) आ जावें तो डबल खरीदनेकी राय है। टाटा आर्डनरी, इण्डियन आयरन, बम्बई मारकेटके भाव रिपोर्ट लिखते समय आर्डनरी २४१) आयरन ३५) तीन मासके ग्रहसंयोग देखते अप्रैल मईमें आर्डनरी, इण्डियन आयरनके भावोंमें अच्छी तेजी दिखाई दे रही है, आर्डनरी मार्चमें पुनः २३४ आयरन ३४), मन्दीका रियेक्शन लेकर भले ही बन जाय किन्तु भावी आगाही तेजीका समर्थन कर रही है, आर्डनरी २५०) आयरन ३६) अप्रैल

मईमें ऊंचा जानेके योग बहुमतोंसे स्पष्ट होता है। इसलिये अप्रेल ता० ५, १५, २१, मईमें ता० १, ६, १७ को खरीदो या तेजीयां लगाकर व्यापार करो, ता० २८ तक अच्छा चांस है।

टाटा आर्डनरी—की टरनिंग लाईनें २४१) २२५) २३४) २३७) २३६) २४४) २४७) २५०) २५४) २५७) २६०) २६२) २६७) है। इण्डियन आयरनकी टरनिंग लाईन ३४) ३५) ३५॥) ३६) ३७) ३६) ३७॥) ३८) ३६) है। प्रत्येक मन्दीके रियक्शनोंमें खरीदना ही चांस है।

एरंडा—रिपोर्ट लिखते समय ७०)का भाव है। इसमें ४) ५) की मन्दीका रियेक्शन भले ही आ जाय, ग्रहसंयोग तेजीका ही समर्थन करते हैं। अप्रेल, मईमें एरंडा ८४) ऊंचेमें, नीचेमें ६४) प्रत्येक मन्दीके रियेक्शनोंमें खरीदो। टरनिंग लाईनें ७०) ६८) ६६) ६४) ६८) ७२) ७६) ७८) ८०) ८२) ८४) पर ध्यान रखो, बराबर अच्छी मंदीके रियेक्शनोंमें खरीद करके टरनिंग लाइनों पर व्यापार का सुधार करते रहें।

गुड़, मटर, गुवार—रिपोर्ट लिखते समय गुड़ १०) मटर गुवार ५) के करीब है। ग्रहसंयोगसे गुड़में ॥=) मटर, गुवारमें ॥=) का मंदीका रियेक्शन भले ही आ जाय, किन्तु अप्रेल, मईमें तेजीका बहुमतोंसे समर्थन है, इसलिये हमारी धारणा गुड़में ३) की तेजी, मटर गुवारमें २) मन की तेजी आवेगी। गुड़की टरनिंग लाईनें—१०) ६॥) ६।) ६॥) १०।) ११) ११॥) १२) (दिल्ली मारकेट) मटरकी टरनिंग लाईनें—४॥) ४॥।) ५) ५।) ५॥) ५॥।) ५॥।=) ६) (दिल्ली मारकेट) गुवारकी टरनिंग लाइनें—४।=) ४॥) ४॥।) ५) ५।=) ५॥=) ५॥।) (दिल्ली मार्केट) हमारी धारणा तेजीकी है, प्रत्येक मन्दीके रियेक्शनोंमें अप्रेल ता० ४, ७, ११, १५ में खरीदो।

आवश्यक निवेदन

जो सज्जन गत वर्ष चैत्रमासके 'वसन्ताङ्क' अप्रैल १६५४ से ग्राहक बने थे उन्हें गत 'हेमन्ताङ्क' तक वर्ष भरके चारों अङ्क भेजे जा चुके हैं और गताङ्कमें ही उनका मूल्य भी समाप्त हो चुका है, अतः अब वे अपना वार्षिक मूल्य ४) भेजकर शीघ्र ही यह अङ्क प्राप्त कर लें। विलम्ब करनेसे यदि यह अङ्क समाप्त हो गया तो फिर उन्हें यह अङ्क न मिल सकेगा। हमने कई बार ग्राहकोंसे निवेदन किया है कि जो सज्जन समर्थ हैं वे "श्रीस्वाध्याय" के सहायक वा ११) वार्षिक के सम्मान्य ग्राहक बनकर, अथवा कमसे कम एक नया ग्राहक बना कर ही पत्रकी सहायता करें। परन्तु पाठकोंने इस ओर विशेष ध्यान नहीं दिया। इधर 'श्रीस्वाध्याय' की आर्थिक स्थिति संकटापन्न होती जा रही है। जिस पत्रके पास न तो अपना प्रेस हो, न कोई धनी पृष्ठपोषक हो, न विज्ञापनकी आय हो, न उसके पर्याप्त ग्राहक हों, और न दो चार निःस्वार्थ भावसे सेवा करने वाले कार्यकर्त्ता ही हों तो वह पत्र कब तक पेट पर पट्टी बांधकर चल सकता है। भारतीय संस्कृति और ज्योतिर्विज्ञानकी विगत १४ वर्षोंमें 'श्रीस्वाध्याय' ने जो यत्किंचित् सेवा की है, वह पाठकोंसे अविदित नहीं। हमने अपने स्वास्थ्य और व्यक्तिगत आयकी भी पर्वाह न करके १४ वर्ष पर्यन्त अहर्निश सेवा की है। परन्तु अब आयुके साथ-साथ उत्तरोत्तर बल का भी ह्रास होता जा रहा है, अतः यदि अब ग्राहकों और धर्म संस्कृति एवं ज्योतिर्विज्ञानानुरागी धनी सज्जनोंका उचित सहयोग न मिला तो आगामी १५ वें वर्षसे बाध्य होकर 'श्रीस्वाध्याय' को बन्द करना पड़ेगा। अथवा यदि केवल व्यापारी और ज्योतिष प्रेमियोंका ही सहयोग रहा तो केवल मात्र उसी एक विषयके एकाङ्गी छोटे पत्रके रूपमें इसे परिवर्तित कर देना पड़ेगा। इसका उत्तरदायित्व स्वतंत्र-भारतके साहित्य संस्कृति और धर्मप्रेमी पाठकों पर होगा।

निवेदकः—

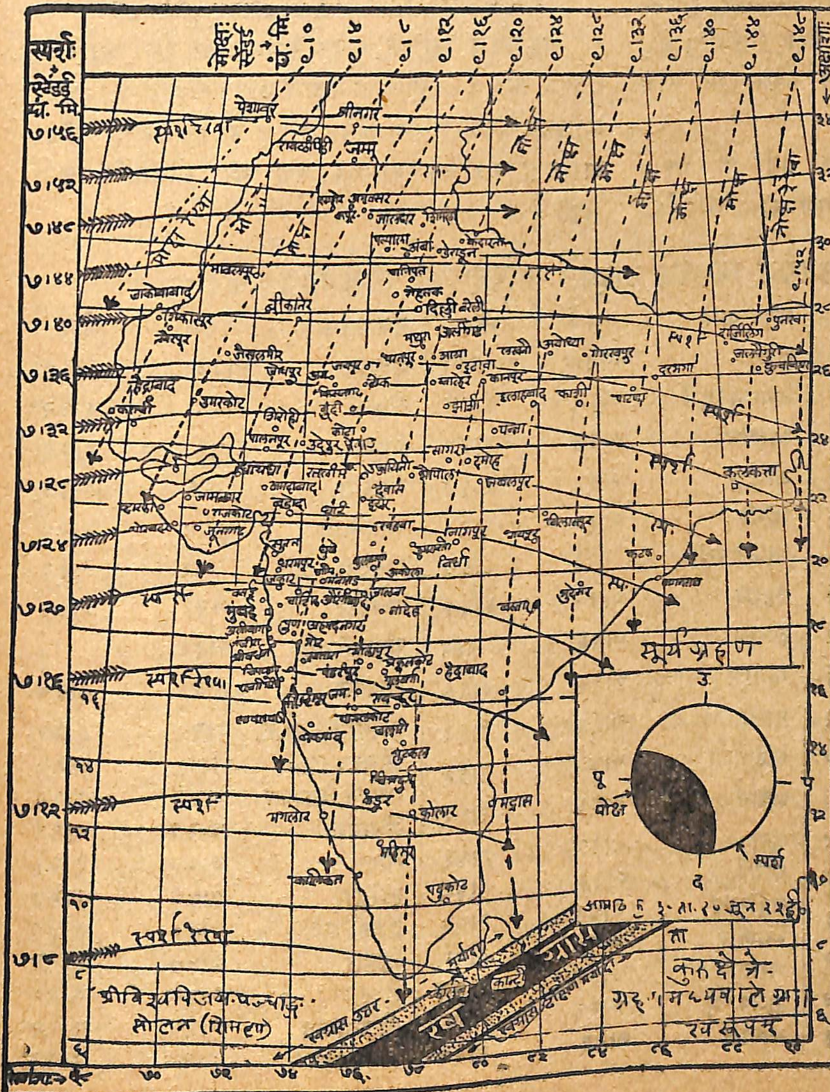
हरदेव शर्मा त्रिवेदी

सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय'

खण्डग्रास-सूर्यग्रहण

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्य]

सं० २०१२ आषाढ़ कृष्णा ३० सोमवार ता० २० जून १९५५ ई० को खण्डग्रास सूर्यग्रहण होगा। कुरुक्षेत्र और दिल्लीमें ग्रहण मध्यकालके समय ८।२६ पर इस मानचित्र में नीचे दिये हुए आकार जितना सूर्य ग्रहण दिखाई देगा। भारतके मानचित्रमें बाणाकार पूर्ण रेखा स्पर्शकाल सूचक और······ऐसी त्रुटित रेखा मोक्षकाल सूचक है, अर्थात् भारतके इस मानचित्रमें आड़ी बाणाकार रेखा (पश्चिमसे पूर्वको जाने वाली) चार-चार मिनटके अन्तरसे दी हैं वे सब स्पर्शकाल सूचक हैं और इसी प्रकार ऊपरसे नीचे वा उत्तरसे दक्षिणकी ओर जाने वाली त्रुटित बाणाकार रेखा चार-चार मिनटके अन्तरसे मोक्ष-काल सूचक है। इस मानचित्रमें अपना इष्ट स्थान वा नगर दोनों रेखाओं पर वा मध्यमें जहां भी हो वहां अनुपातसे स्पर्श मोक्षकालका शुद्ध समय जान लेना चाहिए।



यह सूर्यग्रहण श्रीलङ्कामें कोलम्बो, कांडी, अनुराधापुर आदि नगरों और श्याम ब्रह्मदेशके दक्षिण भाग बैंकाक हिन्दचीन एवं मनीला द्वीपके मध्यभाग तथा फिलीपाइन द्वीपमें ६ मिनट तक खग्रास (पूर्ण-ग्रस्त) दिखाई देगा। सम्पूर्ण भारत, पाकिस्तान, पूर्वीय अफ्रीकाकी पूर्वी-सीमा, एबीसीनिया, सुमालीलैण्ड, मेडागास्करके उत्तरी भाग, सूडान, दक्षिण अरबस्तान, ईरान, ईराक, अफगानिस्तान, मध्य-एशिया, जापान, चीन, ब्रह्मदेश, जावा, सुमात्रा, हिन्देशिया, ईस्ट इण्डीज द्वीपसमूह, न्यूजीलैण्ड, पूर्वोत्तरीय आस्ट्रेलिया, हिन्द-महासागर, प्रशान्त-महासागरके दक्षिण भाग और श्रीलंकाके दक्षिणी भागमें यह सूर्यग्रहण सर्वत्र न्यूनाधिक रूपमें खण्डग्रास ही दिखाई देगा।

भूमण्डलके शेष स्थलोंमें यह सूर्यग्रहण बिल्कुल दिखाई नहीं देगा। सूर्यग्रहण सर्वत्र एक समय पर एक जैसा दिखाई नहीं देता (इसका सप्रमाण विस्तृत विवेचन हम 'श्रीस्वाध्याय' के ७ वें वर्षके अंकमें 'ग्रहण-विवेचन' निबन्धमें कर चुके हैं वहां देखें) भारत भूमण्डलीय ग्रहण-गणितके द्वारा गणना करके इस सूर्यग्रहणका भारतीय चित्रपट (नक्शे) पर स्पर्श मोक्षबोधक रेखाएं दी गई हैं। इससे भारतमें प्रत्येक स्थानके स्पर्श मोक्ष कालका स्टेण्डर्ड-टाइम सरलतासे ज्ञात हो सकेगा। इधर उत्तरभारतके किसी भी अन्य पंचांग वा जन्त्रीमें इतना परिश्रमसाध्य भारत-भूमण्डलीय सूर्यग्रहणका सूक्ष्म गणित नहीं मिलेगा। कुछ प्रधान नगरोंका स्पर्श मोक्ष काल नक्शेसे अलग भी नीचे दिया गया है।

कुरुक्षेत्रमें सूर्यग्रहणका विशेष पर्व वा महत्त्व माना जाता है, वहाँ सूर्यग्रहण पर विशाल मेला भी होता है जिसमें भारतके प्रत्येक भागसे असंख्य श्रद्धालु नर-नारी कुरुक्षेत्र पहुँचकर पर्वका पुण्योपार्जन करते हैं। अतः पहले कुरुक्षेत्रमें इस ग्रहणका स्पर्शादि काल दिया जाता है। सोमवती अमावस्याको यह सूर्यग्रहण होनेसे स्नानादिके लिए विशेष पुण्य पर्व बन गया है।

कुरुक्षेत्रे स्पर्शादि कालाः

प्रातः	स्पर्श	मध्य	मोक्ष	पर्वकाल
घंटा	७	८	९	१
मन.	४४	२६	१८	३४

ग्रहणवेध (सूतक)—इस सूर्यग्रहणका वेध चतुर्दशी रविवार ता० १९ जूनको सायंकाल ७।४४ से प्रारम्भ होगा। ग्रहणवेधमें भोजनादिका निषेध है। बाल वृद्ध रोगी और अशक्त पुरुष रात्रिके १०-४४ तक भी भोजनादि कर सकते हैं।

भारतके कुछ प्रधान नगरोंमें स्टेण्डर्ड टाइमसे सूर्यग्रहणका स्पर्श-मोक्ष काल—

नगर नाम	स्पर्श घं. मि.	मोक्ष घं. मि.	नगर नाम	स्पर्श	मोक्ष	नगर नाम	स्पर्श	मोक्ष
अमृतसर	७।५८	९।११	जम्मू	७।५०	९।८	मद्रास	७।११	९।३२
अजमेर	७।३५	९।१७	जगन्नाथपुरी	७।२३	९।४४	मथुरा	७।३५	९।२२
अलवर	७।३६	९।१९	जालन्धर	७।४६	९।१२	मैसूर	७।९	९।२६
अयोध्या	७।३५	९।३२	जोधपुर	७।३३	९।१४	रतलाम	७।२६	९।१९
अम्बाला	७।४३	९।१७	झांसी	७।३०	९।२५	रत्नागिरि	७।१४	९।२०
आगरा	७।३६	९।२४	त्रिचनापल्ली	७।९	९।३०	रामेश्वर	७।९	९।३१
इन्दौर	७।२६	९।२२	देहली	७।४०	९।२१	राजकोट	७।२३	९।११
उज्जैन	७।२५	९।२१	द्वारका	७।२३	९।८	रावलपिण्डी	७।५१	९।४
उदयपुर (मेवाड़)	७।३०	९।१६	नागपुर	७।२३	९।२९	लखनऊ	७।३४	९।३०
कलकत्ता	७।३१	९।४७	पटना	७।३६	९।३९	विलासपुर म.प्र.	७।२४	९।३५
कराची	७।३१	९।३	पटियाला	७।४३	९।१५	श्रीनगर का०	७।५५	९।१८
काशी	७।३४	९।३५	प्रयाग	७।३४	९।३२	सोलन शिमला	७।४७	९।१९
कानपुर	७।३३	९।२८	पूना	७।१८	९।१९	सोमनाथ	७।२१	९।१२
खण्डवा	७।२२	९।२३	बम्बई	७।१९	९।१८	सागर	७।२७	९।२६
गया	७।३२	९।३२	बद्रीनाथ	७।४५	९।२२	हरिद्वार	७।४४	९।२१
ग्वालियर	७।३५	९।२४	बैंगलौर	७।१०	९।२८	हजारीबाग	७।३०	९।४७
जयपुर	७।३९	९।१९	भरतपुर	७।३४	९।२२	हिसार	७।४०	९।१६
			भुजकच्छ	७।२९	९।८	हैदराबाद द०	७।१८	९।२९
			भोपाल	७।२९	९।२४	हौसंगाबाद	७।२४	९।२५
						होश्यारपुर	७।४७	९।१२

राशिफल

यह सूर्यग्रहण मृगशीर्ष नक्षत्र और मिथुन राशि पर हो रहा है, अतः मिथुन कर्क वृश्चिक मीन राशि और मृगशीर्ष नक्षत्र वाले प्राणियों तथा राष्ट्रोंको यह ग्रहण अनिष्ट फलकारक है। वृष, कुम्भ, तुला, धनुः राशियोंको मध्यम और मेष, सिंह, कन्या, मकर राशिवालोंको शुभ फल कारक है। अशुभ राशि नक्षत्रवाले ग्रहणका दर्शन न करें। कल्याणार्थ यथाशक्ति जप-दान हवनादि करना चाहिए।

विशेष फल—राजा वा शासक, कलाकार, लेखक, गायक, उत्तम स्त्रियां, कामी पुरुष, सुगन्धित पदार्थ, फल, पुष्प, वस्त्र मोती, रत्न, नदी, तड़ाग, यमुनातट, मत्स्यदेश चीन, कंधार, काश्मीर, पुलिन्द और मध्यदेश पर इस ग्रहणका बुरा प्रभाव पड़ेगा। धान्य और तैल संग्रह करनेसे आगे लाभ होगा। भारतमें किसी अग्रगण्य नेताका स्वास्थ्य चिन्ताजनक बनेगा। काश्मीर समस्याको लेकर आगे भारत पाकमें कटुता बढ़ेगी। अन्तर्राष्ट्रीय राजकारण दूषित होंगे। यूरोप वा अमेरिकाके किसी प्रसिद्ध पुरुषकी मृत्यु होगी। ग्रहण मध्यकालीन कर्क लग्नमें उच्चका गुरु विराजमान है अतः भारत प्रत्येक स्थितिका साहस पूर्वक सामना करके दूरदर्शितासे भविष्य उज्ज्वल बनाता रहेगा। यह सूर्य ग्रहण इस 'वसन्ताङ्क'की समाप्ति पर हो रहा है और इसका फल भी २० जूनके बाद होगा, अतः इस पर विशेष विवेचन आगामी 'ग्रीष्माङ्क' में करेंगे।

लेखकोंसे निवेदन

लेख कागजके एक ओर ही स्पष्ट सुवाच्य अक्षरोंमें संशोधनके लिए मार्जन छोड़ कर लिखा होना चाहिए। कई लेखक कागजके दोनों ओर अथवा बहुत बारीक अक्षरोंमें पंक्तिके साथ पंक्ति सटाकर लिख देते हैं। ऐसे लेखोंकी प्रेस-कापी और सम्पादनमें बड़ी कठिनाई होती है, अतः भविष्यमें ऐसे कोई भी लेख प्रकाशित न हो सकेंगे। आगामी अङ्कके लिए सब लेख ता० २१ मई १९५५ तक कार्यालयमें सम्पादकके पास पहुँच जाना आवश्यक है। इस बार यह अङ्क साधारण सब अङ्कोंसे ८ पृष्ठ अधिक ६८ पृष्ठ होने पर भी पूर्व सूचनानुसार चैत्र शु० १ ता. २५ मार्चको ही प्रकाशित हो गया। श्रीगणेश दैवज्ञ और विद्यासागर विश्वनाथ दैवज्ञके लेख बहुत विलम्बसे प्राप्त होनेके कारण इस अङ्कमें प्रकाशित न हो सके। आगेके लिए जो लेख समय रहते अवधिके अन्दर प्राप्त हो जावेंगे, और नियमानुसार स्पष्ट लिखे होंगे, वे ही प्रकाशित हो सकेंगे, इसका लेखक पूर्ण ध्यान रक्खें।

—सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला)

दैवीचांस कार्यालयके नियम

(१) हमको गुरु-कृपासे चिरकालकी साधनाके अनन्तर इष्टदेवका अनुग्रह प्राप्त हुआ है, जिनके अनुग्रह से अनुष्ठान द्वारा इच्छित वस्तुमें सीधी लाइनका दैवीचांस प्राप्त किया जाता है। हम अपने प्रेमी ग्राहकोंको दैवीचांसोंके अनेक चमत्कार गत तीन वर्षोंसे बराबर दिखाते चले आ रहे हैं। हम विशेषकर रुई, कपास, सोना, चांदी, सरसों, गुड़, गवारा, चनाके वायदा तथा हाजर, अरण्डी वायदा बम्बई और काटन वायदा बम्बईके ही दैवीचांस प्राप्त करते हैं, अतः इन्हींके सम्बन्धमें ही पत्रव्यवहार करें।

(२) कोई सज्जन किसी खास एक वस्तुका भाव अथवा अपनी विशेष समस्याका समाधान दैवीचांस कार्यालय द्वारा जानना चाहें तो वे पांच सौ रुपया भेजकर अपना अनुष्ठान करवाके इच्छित वस्तुका दैवीचांस अथवा अपनी समस्या का समाधान प्राप्त कर सकते हैं। यदि कोई सज्जन अपने स्थान पर ही बुलाकर अनुष्ठान कराना चाहें तो स्थान और समयकी परिस्थितिके अनुसार फीस १०००) से ५०००) तक देनी होगी।

(३) १०१) रु० पेशगी भेजकर लाभमेंसे धर्मपूर्वक दशांश देनेकी प्रतिज्ञा करने वाले व्यापारीको एक वस्तुकी एकतर्फा तेजी अथवा मंदीकी लाइन बताई जाती है। एक वस्तुमें पूरी मंदी और तेजीकी वर्ष भरकी सम्पूर्ण लाइनकी फीस २५१) रु० है। इन सम्पूर्ण लाइन वालोंको भी लाभका दशांश एक लाइन पूरी होते ही सौदा काट कर साथ साथ भेजना होगा।

(४) जो व्पारी वर्षारम्भमें पहले एक मुश्त ५००) रु० भेजकर एक वर्षके लिए स्थायी ग्राहक बन जायेंगे उनको वर्षभरमें सभी दैवी चांसोंकी जनरल लाइनें यथासमय पत्र द्वारा एवं विशेष परिस्थितिमें तार द्वारा वर्ष भर तक दी जावेंगी। लाभका दशांश इन्हें भी साथ ही साथ भेजना पड़ेगा।

(५) जो ग्राहक लाभका दशांश धर्मपूर्वक पूरा नहीं देंगे वा देनेमें आनाकानी करेंगे ऐसे स्वार्थी व्यापारी आगेके लिए दैवीचांससे लाभ नहीं उठा सकेंगे।

(६) ५००) रु० भेजने वाले स्थायी वार्षिक ग्राहकोंको जनरल लाइनोंमें जो मंदी तेजीके रियेक्शन आते रहते हैं उनकी भी यथासमय सूचना अपने तत्कालीन दैवी अनुभवों द्वारा दी जाती है।

(७) व्यापारमें किस वस्तुसे लाभ कब होगा ? और ग्रह-स्थिति भाग्योदय लाभकारक है भी या नहीं ? इसका निर्णय किसी योग्य विद्वान्से जन्मपत्र वर्षफल द्वारा करवा लेवें। यदि हमारे द्वारा निर्णय करवाना चाहें तो कुण्डलीके साथ फीस ५१) भेजें। अथवा असमर्थ व्यापारी प्रश्न तिथि तारीख और समय (टाइम) के साथ ५) भेजकर प्रश्न-कुण्डली द्वारा भी अपने भाग्यका निर्णय करा सकते हैं।

(८) यदि किसीको हमारे दैवी-चांसों पर विश्वास न हो तो वे सज्जन अपनी फीस भारतके सुप्रसिद्ध इस पत्र 'श्रीस्वाध्याय' के सम्पादक श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी सोलन (शिमला) के पास अथवा हमारे नगरके किसी भी प्रतिष्ठित व्यक्तिके पास इस शर्त पर जमा करा देवें कि चांस सत्य होने पर ही वह रुपया हमें मिले, अन्यथा आपको वापस लौटा दिया जाये। इससे अधिक हम और क्या विश्वास दिला सकते हैं।

(९) फीसमें किसी प्रकारकी न्यूनता करने वा बादमें देनेके लिए व्यर्थ पत्र लिखकर समय नष्ट न करें। उत्तरके लिए जवाबी पत्र अथवा टिकट भेजें।

(१०) दैवीचांस किसी दूसरे व्यक्तिको नहीं बताना चाहिए, अन्यथा लाभ न उठा सकेंगे।

पता—ज्योतिर्विद् वैद्य पंचानन शर्मा मौद्गल्य, दैवीचांस कार्यालय, श्रीधन्वन्तरि फार्मेसी

मु० पो० लहरागागा मण्डी, जि० संगरूर (पेप्सू)।

तीसरी बार

छप गया

महामहिम आचार्य
श्रीमदमृतवाग्भवप्रणीत

श्रीराष्ट्रालोक

राष्ट्रभाषानुवादसहित

राष्ट्रवादी ही आर्य हैं। आर्य ही शान्तिकी स्थापना कर सकते हैं।

भारत भारतीयोंका है

स्वातन्त्र्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। राष्ट्र हमारा पिता है, माता है और आचार्य है। हम सदा उसके सेवक हैं। हमारा राष्ट्र हमें भोग और मोक्ष दोनों देता है।

हम सच्चे राष्ट्रिय हैं

अभारतीय भारतके अतिथि हो सकते हैं, राष्ट्रिय नहीं।

हम संक्रान्तिका सदा आदर करते हैं। हमें ऐसी शान्ति नहीं चाहिए जो राष्ट्रको परतन्त्र बनाए।

राष्ट्रिय राष्ट्रके पुत्र हैं, पति नहीं।

भारतीय अपने आपको हिन्दू माननेमें गौरवका अनुभव करते हैं। भारतीय आदर्शके विपरीत क्रान्ति क्रिकान्ति है, संक्रान्ति नहीं। यदि आप इन भावोंसे स्नेह करते हैं तो 'श्रीराष्ट्रालोक' अवश्य पढ़िये।

श्रीराष्ट्रालोक परम पवित्र भारतीय आदर्शका एक जीवन शास्त्र है।

राष्ट्र प्रेमी इसका आदर कर रहे हैं। जनता हाथों-हाथ अपना रही है। आप भी आज ही मँगाइये। मूल्य ॥) मार्ग व्यय-) 'श्रीस्वाध्याय' और 'श्रीविश्वविजय-पञ्चाङ्ग'के स्थायी ग्राहकों तथा विद्यार्थियोंको मार्ग व्यय सहित ।≈) में

[प्रथम आवरण पृष्ठ २ का शेष]

प्रकाशक वा विक्रेता नहीं जहाँ संस्कृतकी सामान्य पुस्तकें भी मिल सकें। श्री पं० दीनानाथजी शास्त्री सारस्वत और श्री पं० छज्जूरामजी शास्त्री जैसे प्रकाण्ड पण्डित यहाँ पर एक साधारण सी पाठशालामें पढ़े छात्रोंको विद्यादान भले ही देते रहें, पर वास्तवमें यहाँ एक भी सर्वसुविधा-सम्पन्न संस्कृतका महाविद्यालय नहीं। अतः साहित्य-सम्मेलन यदि राजधानीमें संस्कृत विश्वविद्यालय वा व्यवस्थित महाविद्यालय ही स्थापित करनेका प्रयत्न करता है तो यह प्रयत्न वास्तवमें स्तुत्य है।

इस अवसर पर विद्या-वयोवृद्ध श्रद्धेय महामहोपाध्याय श्री पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदीजीकी हीरक जयन्ती भी मनाई जा रही है। श्री चतुर्वेदीजी वास्तवमें संस्कृत जगत्के महान् आदरणीय ज्योतिस्तम्भ हैं। आपकी हीरक जयन्तीके अवसर पर श्रीस्वाध्याय-परिवारकी ओरसे हम आपका अभिनन्दन करते हुए प्रभुसे आपके आरोग्य एवं दीर्घायुष्यकी कामना करते हैं।

श्रीराष्ट्रसञ्जीवन

'श्रीराष्ट्रालोक' का भाष्य

यह ग्रन्थ विश्व-साहित्यमें एक अद्भुत है। अठारह वर्ष पहले इसका निर्माण हुआ था, यह संस्कृतमें है। इस अद्वितीय ग्रन्थको राष्ट्रभाषानुवादके साथ प्रकाशित करनेका आयोजन हो रहा है। इस सम्पूर्ण विशालग्रन्थ के प्रकाशनमें लगभग १२०००) बारह सहस्र रुपये व्यय होंगे। यह सम्पूर्ण व्यय एक ही महानुभावका होगा, वे महानुभाव ब्राह्मण अथवा क्षत्रिय-वर्णके हों, साथ ही सच्चरित्र एवं आर्य-प्रकृतिके होना आवश्यक है। उनका सचित्र परिचय भी इस ग्रन्थके प्रारम्भमें रहेगा। ग्रन्थकार के साथ ही इस ग्रन्थके प्रकाशकका नाम भी विश्वमें अमर रहेगा। उक्त नियमानुसार जो सज्जन इस ग्रन्थ प्रकाशन द्वारा राष्ट्र एवं साहित्य सेवाके साथ अपना जीवन सार्थक बनाना चाहते हों वे निम्न पते पर पत्रव्यवहार करें।

व्यवस्थापक—श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)

भारतीय संस्कृतिके अग्रदूत राष्ट्रधर्मके प्रमुख प्रचारक—
'श्रीस्वाध्याय' के लिए—

राष्ट्रके उद्गार

श्रीयुत बा० पुरुषोत्तमदासजी टण्डन—'श्रीस्वाध्याय' को देख मुझे बहुत सुख मिला। ......इस पत्र और इसके सञ्चालकमण्डलसे राष्ट्रीय कार्यमें पूर्ण सहायता मिलेगी ....।

त्यागमूर्त्ति श्री १०८ गो० गणेशदत्तजी महाराज—'श्रीस्वाध्याय' अपने विषयका अनुपम पत्र है।...... यह प्रत्येक सार्वजनिक संस्थाओं, पुस्तकालयों और वाचनालयोंमें स्थान पाने योग्य है ......।

श्रीयुत कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी, राज्यपाल उत्तरप्रदेश—'श्रीस्वाध्याय' बहुत अच्छा निकल रहा है। लेख विचार प्रवर्तक हैं। ......मैं इसकी पूर्ण सफलता चाहता हूँ ......।

पंजाबविश्वविद्यालयके उपकुलपति दीवान श्री आनन्दकुमारजी—'श्रीस्वाध्याय' साहित्यिक अभिरुचिका पत्र है और अपने पाण्डित्यपूर्ण स्तरको अक्षुण्ण व स्थिर रक्खे हुए है।......... पत्र द्वारा हमारी प्राचीन संस्कृतिके उद्धार व संवर्द्धनका प्रशंसनीय प्रयत्न किया जा रहा है।.........''

श्रीयुत बा० सम्पूर्णानन्दजी मुख्य-मन्त्री उत्तरप्रदेश—'श्रीस्वाध्याय' बहुत सुन्दर निकल रहा है। भारतीय प्राचीन विद्याओं पर प्रकाश डालने वाले ऐसे प्रगतिशील सांस्कृतिक पत्र-पत्रिकाओंकी इस समय आवश्यकता है।

कविसम्राट् स्व० श्री पं० अयोध्यासिंहजी उपाध्याय 'हरिऔध'—'श्रीस्वाध्याय' बड़ा सुन्दर निकल रहा है। इसे जिस दृष्टिसे देखें वह मुग्धकर है। आकार, प्रकार, लेख किंवा कविता आदि सभी प्रशंसनीय हैं।

श्रीयुत बा० मैथिलीशरण गुप्त—"......'श्रीस्वाध्याय' बहुत सुन्दर निकल रहा है। मैं आपके परिश्रमकी प्रशंसा और पत्रकी उन्नतिकी कामना करता हूँ।......"

श्रीयुत प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति—'श्रीस्वाध्याय' अपने ढङ्गका अनूठा पत्र है। ......यह एक उच्चकोटिका सांस्कृतिक पत्र है। मैं इसकी पूर्ण सफलता चाहता हूँ।

श्रीयुत बाबूराव विष्णु पराड़करजी—"...... वस्तुतः यह त्रैमासिक अपने ढङ्गका निराला है। आर्य संस्कृतिके प्रायः प्रत्येक अङ्ग पर इसमें प्रकाश डाला जाता है। ......"

श्री डा० रामकुमारजी वर्मा—"...... 'श्रीस्वाध्याय' हमारे साहित्यका ऐसा पत्र है जिस पर हमें अभिमान है। इसमें जो सांस्कृतिक दृष्टिकोण रहता है वह हमें अन्य भारतीय पत्रोंमें नहीं मिलता। 'श्रीस्वाध्याय' के प्रत्येक पृष्ठमें मुझे अध्ययन और अनुशीलनसे परिपूर्ण साहित्यिक सामग्री मिली।......"

श्रीयुत पं० रूपनारायणजी पाण्डेय (सम्पादक 'माधुरी')—".. 'श्रीस्वाध्याय' की सभी सामग्री ज्ञानवर्धक और उपादेय है।...... प्रत्येक देशभक्त, राष्ट्रभाषा प्रेमी, जिज्ञासु, धर्मप्रेमीको अवश्य इसे अपनाना चाहिए। हर एक पुस्तकालयमें यह पत्र स्थान पाने योग्य है।......"

श्रीयुत पं० देवीदत्तजी शुक्ल (भू० पू० सम्पादक 'सरस्वती')—'श्रीस्वाध्याय' बहुत ही सुन्दर निकल रहा है।......आपने 'स्वाध्याय' निकाल कर हिन्दीके एक विशेष अभावकी पूर्ति की है, इसमें सन्देह नहीं। इस महत्त्वपूर्ण कार्यके लिए हिन्दी वाले आपके अवश्य कृतज्ञ होंगे।

श्रीयुत पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकरजी—"...... 'श्रीस्वाध्याय' के विषयमें विशेष क्या कहा जाय, यह एक अत्युत्तम पत्र है। मैं हृदयसे इसकी सफलता चाहता हूँ। इसकी अन्यान्य महत्ताओं पर 'वैदिकधर्म' में प्रकाश डालूंगा।

इनके अतिरिक्त भारतके अनेकों महामान्य विद्वानों और प्रमुख पत्र-पत्रिकाओंने 'श्रीस्वाध्याय' की मुक्त-कण्ठसे प्रशंसा की है। स्थानाभावके कारण वे सब यहां उद्धृत नहीं हो सकीं।

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा अर्जुन प्रेस दिल्लीमें छपकर 'श्रीस्वाध्यायसदन' सोलन (शिमला) से प्रकाशित।